सत्र–03 05 अगस्त, 2025

खण्ड– 08 .... मंगलवार, ...

अंक– 14 14 श्रावण,1947(शक)

दिल्ली विधान सभा
की
कार्यवाही

आठवीं विधान सभा

तीसरा सत्र

अधिकृत विवरण

(खण्ड–08 सत्र–03 में अंक 13 से 17 तक सम्मिलित हैं।)

दिल्ली विभान सभा सचिवालय

पुराना सचिवालय, दिल्ली–54

सम्पादक वर्ग

EDITORIAL BOARD

रंजीत सिंह

सचिव

RANJEET SINGH

Secretary

महेन्द्र गुप्ता

उप सचिव (सम्पादन)

MAHENDRA GUPTA

Deputy Secretary (Editing)

विषय सूची

सत्र–3 मंगलवार, 05 अगस्त, 2025 / 14 श्रावण,1947(शक)अंक–14

दिल्ली विधान सभा

क.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1	सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची	4
2	फांसी घर पर चर्चा	6–28
3	विशेष उल्लेख (नियम–280)	29–54
4	ध्यानाकर्षण नियम 54	55–59
5	समिति के प्रतिवेदन से सहमति	60
6	सदन में अव्यवस्था	61
7	दिल्ली विद्यालय शिक्षा विधेयक,2025 पर चर्चा	62–91

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र–3 मंगलवार, 05 अगस्त, 2025 / 14 श्रावण,1947(शक)अंक–14

निम्नलिखित सदस्य सदन में उपस्थित हुए।

क्र.सं.	सदस्य का नाम	क्र.सं.	सदस्य का नाम
1.	श्री अहिर दीपक चौधरी	36.	श्री प्रद्यूम्न सिंह राजपूत
2.	श्री आले मोहम्मद इकबाल	37.	श्री पवन शर्मा
3.	श्री अभय कुमार वर्मा	38.	श्रीमती पूनम शर्मा
4.	डॉ. अजय दत्त	39.	श्री प्रवेश रत्न
5.	श्री अजय कुमार महावर	40.	श्री प्रेम चौहान
6.	श्री अमानतुल्लाह खान	41.	श्री पुनरदीप सिंह साहनी
7.	श्री अनिल झा	42.	श्री राज करन खत्री
8.	श्री अनिल कुमार शर्मा	43.	श्री राज कुमार भाटिया
9.	श्री अरविन्दर सिंह लवली	44.	श्री राज कुमार चौहान
10.	श्री आशीष सूद	45.	श्री राम सिंह नेताजी
11.	श्री अशोक गोयल	46.	श्री रवि कान्त
12.	सुश्री आतिशी	47.	श्री रविन्द्र इन्द्राज सिंह
13.	श्री चन्दन कुमार चौधरी	48.	श्री रविन्दर सिंह नेगी
14.	चौधरी जुबैर अहमद	49.	श्रीमती रेखा गुप्ता
15.	डॉ. अनिल गोयल	50.	श्री सही राम
16.	श्री गजेन्द्र दराल	51.	श्री संदीप सहरावत
17.	श्री गजेन्द्र सिंह यादव	52.	श्री संजय गोयल
18.	श्री हरीश खुराना	53.	श्री संजीव झा
19.	श्री इमरान हुसैन	54.	श्री सतीश उपाध्याय
20.	श्री जरनैल सिंह	55.	श्रीमती शिखा रॉय
21.	श्री जितेन्द्र महाजन	56.	श्री श्याम शर्मा
22.	श्री कैलाश गहलोत	57.	श्री सोम दत्त
23.	श्री कैलाश गंगवाल	58.	श्री सुरेन्द्र कुमार
24.	श्री कपिल मिश्रा	59.	श्री सूर्य प्रकाश खत्री
25.	श्री करनैल सिंह	60	श्री तरविन्दर सिंह मारवाह
26.	श्री करतार सिंह तंवर	61	श्री तिलक राम गुप्ता
27.	श्री कुलदीप कुमार	62	श्री उमंग बजाज
28.	श्री कुलदीप सोलंकी	63	श्री वीर सिंह धिंगान
29.	श्री कुलवन्त राणा	64	श्री विजेन्द्र गुप्ता
30.	श्री मनोज कुमार शौकीन	65	श्री वीरेन्द्र सिंह कादियान
31.	श्री मोहन सिंह बिष्ट		
32.	श्री मुकेश कुमार अहलावत		
33.	श्रीमती नीलम पहलवान		
34.	श्री नीरज बैसोया		
35.	श्री पंकज कुमार सिंह		

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र–03 मंगलवार, 05 अगस्त, 2025 / 14श्रावण, 1947(शक्)

सदन अपराह्न 2 बज कर 10 मिनट पर समवेत् हुआ ।

माननीय अध्यक्ष (श्री विजेन्द्र गुप्ता) पीठासीन हुए।

माननीय अध्यक्षः सभी को प्रणाम! माननीय सदस्य गण, आज माननीय सदस्य श्री वीर सिंह धिंगान जी का जन्मदिन है। मैं इस अवसर पर उनको अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से हार्दिक बधाई देता हूं तथा कामना करता हूं कि वह अपने व्यक्तिगत तथा राजनीतिक जीवन में नई ऊंचाइयां प्राप्त करें। ईश्वर आपको दीर्घायु करें, स्वस्थ रखें, ऐसी सदन की ईश्वर से कामना है। साथियों, अभी अभय वर्मा जी ने मुझसे कुछ इस परिसर के बारे में बात की है और यह एक महत्वपूर्ण विषय है जो मैं सदन के समक्ष लाना चाहता हूं। चूंकि इस परिसर में देश और विदेश से डेलीगेट्स आते हैं और जब हम उनको विजिट कराते हैं तो वो एक फांसी घर का दर्शन होता है और वो पूछते हैं ये फांसी घर कब से है। आज भी हमारे बीच में ब्रिटिश पार्लियामेंट से डेलीगेशन आया हुआ है और उनकी डिप्टी स्पीकर एक्सीलेंसी मैडम मिस नुसरत, वो लीड कर रही हैं और वह हमारी इस कार्रवाइ को देखने के लिए ब्रिटिश पार्लियामेंट मेंबर्स का डेलिगेशन यहां उपस्थित है। हम सब उनका स्वागत करते हैं और मैं चाहता हूं एक बार क्लैपिंग करके उनका स्वागत किया जाए। तो फांसी घर की बात की जाती है। मेरे पास बताने को कुछ नहीं होता, अगस्त का महीना है, 9 अगस्त को 2022 को इस फांसी घर का उद्घाटन किया गया था तो हमने नेशनल आर्काईव से संपर्क किया, वहां से नक्शा निकलवाया इस बिल्डिंग का, 1912 का और उसमें पाया कि यह फांसी घर नाम की कोई चीज यहां नहीं है, ना थी, ना है, ना कोई इतिहास है। और ऐसे ही दो स्ट्रक्चर हैं, एक स्ट्रक्चर मेरे लेफ्ट पे है और एक स्ट्रक्चर मेरे राईट पे है बिल्कुल इक्वल डिस्टेंस

पे जिसको फांसी का फंदा बताया जा रहा है, वह बेसिकली लिफ्ट है जो नक्शे में दिखाई गई है, वहां से नक्शा जो हमने निकाला है और जो कमरा है वह है टिफिन रूम। तो इस पर मैं चाहूंगा इस पर अभय जी कुछ कहना चाह रहे हैं।

श्री अभय वर्मा (मुख्य सचेतक): आदरणीय अध्यक्ष जी, जब 2020–25 का विधानसभा का पीरियड चल रहा था तो पूर्व अध्यक्ष ने हम सब को बताया कि हमने एक फांसी घर खोजा है और मुझे याद है कि हम सब को लेकर गए और उन्होंने दिखाया कि यहां पे फांसी दिया जाता था और वह जो बंदा जिसको फांसी पर लटकाया जाता था, वह नीचे जाता था और एक इस विधानसभा से सुरंग है जो सीधे लाल किला पर जाता था। बहुत उत्सुक्ता थी उस समय के तत्कालीन मुख्यमंत्री जी ने उसका उद्घाटन भी किया, शिलापट्ट भी लगाया गया।.... हां उद्घाटन हुआ,.... नहीं नहीं अभी आगे आगे सुनिये। अब उसके बाद क्या हुआ कि जब भी कोई आये तो मैं यही सबको कहता था कि इस विधान सभा में एक फांसी घर भी है और मैं ले जाकर दिखाता भी था। लेकिन जब आपके माध्यम से वो नक्शा प्राप्त हुआ, 1911 में इस प्रिमेसिज को बनाया गया और वो बनाते वक्त उस जगह को टिफिन रूम के रूप में दिखाया गया और वो एक लिफ्ट था जो रस्सी से जो मेंबर्स यहां आते थे वहां खाने के लिये वो टिफिन के लिये जाते थे और उनका खाना दो लकड़ी के चौपाये पे रखकर उसको रस्सी के सहारे खींचा जाता था और वो टिफिन फिर सबको सप्लाई होता था। नक्शा में आईडेंटिफाई है जो एजेंसी, जिस सरकारी एजेंसी ने बनाया है और वैसा ही सेम जगह एक तो इस हाउस के दाहिने तरफ है और एक इस हाउस के बायें तरफ भी है सेम, वैसे ही वो जिसको तथाकथित फांसीघर कहा गया, वो वैसे ही लिफ्ट है, वैसे ही टिफिन रूम है। आपको मैं उस नक्शा के आधार पर बताउं कि जो आज अध्यक्ष जी का कमरा है वह लाइब्रेरी होता था,

माननीय अध्यक्षः मेंबर्स लायब्रेरी।

श्री अभय वर्माः मेंबर्स लायब्रेरी और पिछली सरकार का ये सबसे अच्छा उदाहरण है कि भैंस को बकरी कैसे बता दें। **बी–6.45–13.30–05/08/25–केबी** और पूरा वो प्रूव कर देते हैं, मुख्यमंत्री जी आकर उद्घाटन भी कर देते हैं और सारे लोग, हां जी यहीं फांसीघर है, फांसीघर है। पूरे इतिहास के पन्ने, एक–एक पन्ना पलटकर देख लिया....

.....व्यवधान.....

श्री अभय वर्माः बिल्कुल था, मैं था, आज भी पत्थर लगा हुआ है सर, आप चलो, दिखाते हैं अभी भी पत्थर लगा हुआ है, माननीय मुख्यमंत्री जी का नाम लिखा हुआ है।

.....व्यवधान......

श्री अभय वर्माः अगर इतिहास के एक पन्ने ....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः आपने एक नहीं, एक मिनट, मैं सबको मौका दूंगा इस पर बोलने का। सबको मौका मिलेगा।

....व्यवधान......

श्री अभय वर्माः और प्रत्यक्ष को प्रमाण नहीं चाहिए, 1911 का नक्शा उपलब्ध है आप देखो।

.....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः आपको बोलना, एक मिनट बैठ जाइये। आपको मौका मिलेगा। एक–एक करके बोलिये। एक–एक करके बोलिये। एक–एक करके बोलिये आप।

....व्यवधान......

श्री अभय वर्माः और पिछली सरकार का ये सबसे अच्छा उदाहरण है कि.....

.....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः बैठिये आप। बैठिये आप। ये गंभीर विषय है। ये साधारण विषय नहीं है, गंभीर विषय है ये।

....व्यवधान......

श्री अभय वर्माः झूठ बोलकर लोगों को गुमराह करते रहें, लोगों को मिसगाइड करते रहें।

.....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः आप इतिहास को किस तरह से तोड़–मरोड़ रहे हैं, झूठा इतिहास खड़ा कर रहे हैं ये, अभी आपको मौका मिलेगा। आपकी बात पूरी हो गई, मैं इनको मौका दूंगा, मैडम को, नेता–विपक्ष को मौका दूंगा।

....व्यवधान......

श्री अभय वर्माः अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से चाहता हूं कि अविलंब वो शिलापट्ट हटाया जाए और ये तथाकथित फांसीघर का जो एक आडंबर खड़ा किया गया है वो तुरंत हटाया जाए क्योंकि इस हाउस का जो इतिहास है वो इतिहास सत्य दिखना चाहिए, झूठे ड्रामा में इस बिल्डिंग को बदनाम नहीं करना चाहिए।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः इसमें देखिए, एक मिनट, अभय जी,

.....व्यवधान......

श्री अभय वर्माः आपका झूठ पकड़ा गया इसलिए आपको दिक्कत हो रही है। आप बैठिये, आपको प्रमाण दिखाते हैं, नक्शा दिखाते हैं और पूरे इतिहास के पन्नों में कहीं भी इस प्रेमिसेस के बारे में कहीं भी जिक्र है फांसीघर का तो आप बताएं। केवल झूठा एक

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः मैं नेता–विपक्ष से ये अनुरोध करूंगा कि अपने सदस्यों को वो इस बात के लिए तैयार करें कि इस पर हम चाहेंगे क्योंकि, एक मिनट आप बैठिये मैडम, ये एक गंभीर विषय है माननीय सदस्यगण। इतिहास को तोड़ना–मरोड़ना, गुमराह करना या फिर झूठ को परोसना, लेकिन मैं इस निर्णय पर अभी पहुंचने से पहले मैं विपक्ष को मौका दूंगा क्योंकि नेता–विपक्ष पूर्व मुख्यमंत्री भी हैं और ये बहुत ही दुख की बात है कि इतिहास के पन्नों में दर्ज इस हैरिटेज बिल्डिंग का जो इतिहास है उसमें जो टिफिन रूम है, जो लकड़ी की सीढ़ियां हैं और एक नहीं है, वो दोनों आमने–सामने 90 के एंगल पर दो रूम हैं, एक राइट पर है, इस हाउस के राइट पर है मेरी सीटिंग के अकॉर्डिंग और एक लेफ्ट पर है। यहां पर शीशा लगा दिया गया उसके जीने में लकड़ी की सीढ़ियों में, इधर दरवाजा लगा हुआ है लेकिन लकड़ी की सीढ़िया वैसे ही हैं, यहां भी पहले दरवाजा लगा हुआ था, दरवाजा हटाकर शीशा लगाया गया और उसको फांसीघर बताया गया। लोग आते हैं, sensation करते हैं कि जहां डेलिबरेशंस होता है, पार्लियामेंट है, जहां असेम्बली है उसी प्रेमिसेस में फांसीघर कैसे हो सकता है।

दूसरा कहा गया इसमें से सुरंग जाती है, यहां कोई सुरंग नहीं है। हमने इसके लिए इतिहासकारों को बुलाया तो उन्होंने कहा ये ducting होती है, ये पुराने स्ट्रक्चर्स में हर जगह क्योंकि जो वेंटीलेशन है और उस समय जिस तरह के सीमित साधन थे तो इसलिए जमीन के नीचे जब भी इस प्रकार के भवन बनते थे तो ducting के लिए स्पेस छोड़ा जाता था और ये यहीं नहीं है भारत की संसद में भी ऐसे ही स्पेस छोड़ा गया है ducting के लिए, लेकिन उसको सुरंग बताया गया।

ये पूरा एक महत्व का विषय है। इस पर हम विपक्ष के साथियों को मौका देंगे, वो आज नहीं कल, इस संबंध में जो भी आपके पास तथ्य हैं जिसके आधार पर आप कहते हैं ये फांसीघर है क्योंकि आपने उसका बकायदा इनॉगरेशन किया, वहां पर एक शिला पट्ट लगी, जिस पर लिखा गया, 9 अगस्त का दिन चुना गया जो भारत के इतिहास में 'भारत छोड़ो आंदोलन' का एक ऐतिहासिक दिन है, आंदोलन हुआ था 9 अगस्त, 1942 को और उस दिन इसका उद्घाटन किया गया कि ये एक दर्शनीय स्थान है यहां पर एक फांसीघर है जबकि फांसीघर नाम की कोई चीज यहां नहीं थी, न है। वो टिफिन रूम है, वो जो टिफिन रूम है उसकी लिफ्ट है, लकड़ी के बाक्स की एक लिफ्ट है, वो यहां भी है और यहां भी है। नक्शे में जो डिप्टी स्पीकर साहब का कमरा है, मोहन सिंह बिष्ट जी का वो वायसराय रूम है, वो भी नक्शे में दिखाया गया है। उसके आगे एक Smoking Room है, उस समय smoking के लिए रूम बनता था तो वो Smoking Room है। इसी तरह से मेम्बर्स के रूम हैं, वो लिखा हुआ है उस पर। सरकार में उस समय मिनिस्टर्स नहीं होते थे, मेम्बर फाइनेंस, मेम्बर एजुकेशन, इस तरह होते थे, उनके कमरे हैं। और इस तरह से नक्शे पर ही हर कमरे का, उसका क्या इस्तेमाल होगा ये उसके ऊपर लिखा हुआ है। जिसको फांसी का फंदा और ट्रे बताई गई वो लिफ्ट है। दोनों जगह लिफ्ट है, यहां भी लिफ्ट लिखा हुआ है, यहां भी लिफ्ट लिखा हुआ है, टिफिन रूम लिखा हुआ है। तो मैं चाहता हूं इसको अब अन्यथा न लिया जाए क्योंकि ये इस प्रेमिसेस से जुड़ा हुआ मामला है और जिसको आपने फांसीघर कहा, ये कोई साधारण विषय नहीं है और उसको authentic तौर पे उसका एक शिलापट्ट लगाकर उद्घाटन भी किया गया। तो इसके लिए जरूर मैं चाहूंगा कि विपक्ष इस पर

अपनी स्थिति स्पष्ट करे और सत्तारूढ दल से भी सदस्य अगर, अजय महावर जी कुछ कहना चाहते हैं मैं उनको भी मौका दूंगा, जरनैल सिंह जी को भी मौका दूंगा, अब पहले नेता विपक्ष इसपर कुछ कहें ।

सुश्री आतिशी (माननीया नेता प्रतिपक्ष): दिल्ली में इतनी समस्याएं हैं..

माननीय अध्यक्षः अच्छा, अब आप बैठ जाइये, आप बैठिए। ये देखिए ये जब इनका झूठ पकड़ा जाता है या जब ये लोगों को गुमराह करते हुए पकड़े जाते हैं तो इसी तरह की बात करते हैं। यहां सारी चर्चा होगी, यहां हर चर्चा होगी, यहां कोई ऐसा विषय नहीं है जिसपर चर्चा नहीं होगी।

...व्यवधान..

माननीय अध्यक्षः आपको मौका मिलेगा। अजय महावर जी बोलेंगे। अजय महावर जी, फिर तरविंदर सिंह जी, जनरैल सिंह जी को।

...व्यवधान..

माननीय अध्यक्षः ये विकास कार्य है आपका?

श्री अभय वर्मा: टिफिन रूम को फांसीघर बना दो ये विकास कार्य था? केजरीवाल जी को माफी मांगना चाहिए। जो दिल्ली के लोगों को भ्रमित किया। टिफिन रूम को फांसीघर दिखा के क्यों भ्रमित किया, इसका जवाब देना चाहिए।

...व्यवधान..

माननीय अध्यक्षः अजय महावर जी।

...व्यवधान....

श्री अभय वर्मा: आपने टिफिन रूम को फांसीघर क्यों बनाया, उद्घाटन क्यों किया, लाखों रुपया खर्च क्यों किया इसका जवाब देना पड़ेगा, माफी मांगना चाहिए आपको, अनकंडिशनल माफी मांगना।

श्री अजय महावरः धन्यवाद अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः आप बोलिये, बोलिये।

श्री अजय महावरः जब लूट।

माननीय अध्यक्षः आप बोलिये, बोलिए। आप अपनी बात कहिए।

...व्यवधान..

श्री अजय महावरः जब लूट और झूठ की सरकार के पूंछ पर पैर रखी जाएगी तो ये लोग और तेज बिलबिलाएंगे । ऐसे ही बिलबिलाएंगे। हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने, अध्यक्ष जी ये एक बहुत संवेदनशील मुद्दा है और हमारे प्रधानमंत्री जी ने कहा है कि विकास भी, विरासत भी। आप विरासत के साथ छेड़छाड़ कर रहे हो। आप विरासत के लिए झूठ बोल रहे हो। आप दिल्ली का मजाक बनाना चाहते हो। एक हैरीटेज बिल्डिंग का अपना एक इतिहास होता है, कल को आप अपने बाप–दादा का नाम बदल दोगे क्या, कल आप तो अपने बाप का नाम बदल दोगे क्या? ये एक हैरिटेज बिल्डिंग है, इस पक्ष को स्वीकार करो, झूठ परोसना बंद करो, ये लूट और झूठ की सरकार....

.......व्यवधान.......

माननीय अध्यक्षः मैं आपको। हां बोलिये।

श्री अजय महावरः और सुनिये ये यहीं पर जो माननीय स्पीकर साहब ने कहा है, इसी सदन के अंदर वो डब्बा खुला हुआ है जिसको कि बताया गया जो अभय वर्मा जी बता रहे थे, लाल किले तक जाता है। डक्टिंग को आप लाल किला बता रहे हो। पूरे विरासत को आपने ऐसी तैसी कर दी, पूरे इतिहास को तोड़ना–मरोड़ना था, तो आप क्यों आए? मैं आपसे मांग करता हूं अध्यक्ष जी अविलंब, जो अभय वर्मा जी ने कहा है उस नाम पटि्टका को हटाया जाए और इनके लिए निंदा प्रस्ताव पारित हो। इसके लिए पिछली सरकार का इस सदन में निंदा प्रस्ताव पारित होना चाहिए। इस कृत्य के खिलाफ मैं आग्रह करता हूं अध्यक्ष जी, इस सदन में निंदा प्रस्ताव पारित होना चाहिए क्योंकि ये एक गम्भीर विषय है और ये, आप विरासत को तोड़ मरोड़ देंगे, विरासत को आप किसी भी प्रकार से दिखा देंगें।

.....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः ये अभी मैं आपको जो 1912 का नक्शा है वो मैं अभी डिस्पले भी करता हूं जिसमें टिफिन रूम लिखा हुआ है,

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः एक मिनट। अभी इस पर किसी को कुछ कहना है।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः हां जी जनरैल सिंह जी, इसी विषय पर बोलेंगे ना आप। इसी विषय पर, हां बोलिए।

...व्यवधान..

माननीय अध्यक्षः अभी सारा डिस्कसन होगा, बताइये। माननीय सदस्य जनरैल सिंह।

श्री जनरैल सिंहः थैंक्यू स्पीकर साहब। स्पीकर साहब मुझे लगता है कि ब्रिटिश डेलीगेशन के सामने ब्रिटिश शासन के जो काले जो शोषण, जो देशवासियों पर अत्याचार हुआ उसको मिटाने की आज फिर से एक कोशिश की जा रही है। मैंने चैट जीपीटी पर सर, मैंने चैट जीपीटी पर सिंपल डाला है कि क्या दिल्ली विधान सभा के अंदर कभी फांसीघर था, जो इमीजेटली जानकारी आई है

...व्यवधान..

माननीय अध्यक्षः ये आपका ही झूठ फैलाया हुआ है, बैठ जाइये आप।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः हां पढ़िए आप, पढ़िए, पढ़िए।

श्री जनरैल सिंहः इसमें साफ–साफ लिखा है यहां पर एक कमरा फांसी घर के रूप में उपयोग होता था। यस आज भी दिल्ली विधान सभा के एक परिसर में ऐतिहासिक स्थल के रूप में मौजूद है। यह जगह को संरक्षित स्मारक के रूप में माना जाता है और ये विशेष अवसरों पर दिखाया जाता है। ये चैट जीपीटी बता रहा है सर मैं नहीं बोल रहा।

माननीय अध्यक्षः ठीक है।

श्री जरनैल सिंहः पर आपका फैसला। आप इतिहास को...आप इनकी चम्चागिरी कर रहे हो, आप ब्रिटिश डेलीगेसन के आगे, ब्रिटिश काल के काले कारनामों को छिपाने की कोशिश कर रहे हो, अरे शर्म आनी चाहिए, चम्चागिरी मत करो।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः चलिये बैठिये। तरविंदर सिंह जी।

...व्यवधान..

माननीय अध्यक्षः शुरू करिये। शुरू करिये।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः अध्यक्ष जी बहुत अच्छी बात आज आप लेकर आए हो।

...व्यवधान..

माननीय अध्यक्षः आप बैठिए, बैठिए, बैठिए। आप बैठिए। आप बैठिए। बैठिए, आप बैठिए, मुझे कार्रवाई करनी पड़ेगी। बहुत सीरियस डिस्कसन चल रहा है यहां। बैठिए आप, हाँ बताइये। बताइये आप, बताइये आप।

.....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः आप झूठ फैलाकर हिन्दुस्तान की जनता को गुमराह करना चाहते हैं। ये आपके ही झूठ फैलाये हुए हैं। ये आपके ही झूठ फैलाये हुए हैं। ये चैट जीपीटी में भी आपके ही फैलाये हुए झूठ आ रहे हैं।

....व्यवधान......

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः अध्यक्ष जी इस सदन में सबसे बड़ी बात ये हो रही है कोई अच्छी बात लेकर आते हो आप, उसको भी कंडेंम करने की कोशिश की जाती है। ये बड़ा मतलब परम्परा नहीं है ये। आपने एक चीज बताई, हमारे चीफ व्हिप ने एक चीज....

....व्यवधान......

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः अध्यक्ष जी सबसे बड़ी बात ये है कि आपने हमारे जो चीफ व्हिप ने खोज निकाल के लाये हैं उसका हमको सबको धन्यवाद करना चाहिए और आपने जो उसपे फूल चढ़ाये हैं कि जो चीज है वो सच होनी चाहिए। जब था तो आपने हमने बता दिया। तो उसमें क्या बात है। यहां था वहां था, वहां का है तो दिल्ली विधान सभा के अंदर ही था ना। तो उसमें क्या है आपने समय भी दिया कि हर चीज का इसपे होना चाहिए, विचार होना चाहिए। कहां था अभी जनरैल सिंह जी ने बड़ी बात एक मिनट में ऐप में निकाल के बता दी। वो लोगों को दिखाया भी जाता है। अभी तक तो हमने ही नहीं देखा। आज ही पता लगा है कि यहां पर फांसी का फंदा होता था। हमें भी नहीं पता। अध्यक्ष जी मुझे भी नहीं पता। तो ये बात आपने....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः अब आप अपनी बात पूरी करिये।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः अध्यक्ष जी आप इसके ऊपर आज सब सदस्यों की राय लें उसके लिए करना क्या चाहिए। ठीक है ना। चाहे उसपे कितना भी खर्चा हो वो पत्थर हटना चाहिए और कितना भी खर्चा हो उसपे हम सब....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः एक मिनट इसपे।

....व्यवधान......

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः तो उसमें क्या है वो हटना चाहिए। हर हालत में हटना चाहिए। पत्थर भी हटना चाहिए। उसमें क्या है। जब फांसी वाली जगह थोडे ह़ी बैठेंगे।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः अभी आप करनैल सिंह जी।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः अध्यक्ष जी, धन्यवाद आपका।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः देखिए एक मिनट। इस पर मैं चाहूंगा सभी सदस्य थोड़ा ध्यान से सुने। हाँ जी बताइये।

....व्यवधान......

श्री करनैल सिंहः माननीय अध्यक्ष जी, आपका धन्यवाद करता हूं।

....व्यवधान......

श्री करनैल सिंहः माननीय अध्यक्ष जी मुझे बोलने का मौका दिया। अभी जनरैल सिंह जी ने एआई खोलके देख लिया। इन लोगों को ये नहीं पता एआई को इम्प्लीमेंट करने वाले जो चम्मचे होते थे अंग्रेजों के उन्होंने ही इम्प्लीमेंट किया है।

.....व्यवधान...............

माननीय अध्यक्षः एक मिनट बैठिए, एक मिनट करनैल सिंह जी आप भी बैठिए। प्रवेश जी एक मिनट। एक मिनट प्रवेश जी अपना बयान देना चाहते हैं फिर उसके बाद इसको आगे। जी।

....व्यवधान.......

माननीय अध्यक्षः आप एक मिनट मैं आप पे कार्रवाइकरूंगा अगर आप सीरियस डिस्कसन में इस तरह डिस्टर्ब करेंगे। आपको मौका दिया है ना फिर मिलेगा मौका। सबको मिलेगा। आप बैठिए, अब बैठिए आप।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः मैं अब मैं, अब जो सदस्य बिना इजाजत के खड़ा होगा उस पर कार्रवाई होगी। आप मजाक, आप एक तो झूठ परोस रहे हैं। इतिहास को तोड़–मरोड़ रहे हैं। यहां पर विधान सभा के परिसर में एक विरासत पर इस तरह की बात लिखकर करके आप गुमराह कर रहे हैं देश को और उस पर बात कर रहे हैं तो बात नहीं करने देना चाहते। ऐसा नहीं चलेगा। हाँ जी।

....व्यवधान......

माननीय लोक निर्माण मंत्री (श्री प्रवेश साहिब सिंह): अध्यक्ष जी एक झूठ को छिपाने के लिए हजारों झूठ बोलने पड़ते हैं। अभी जनरैल सिंह जी ने कहा उन्होंने चैट जीपीटी में खोल लिया। तो मैंने भी इसमें डाला कि who claims that there is hanging house in Delhi Assembly इसमें लिखा आता है it was Ram Niwas Goel, it was Ram Niwas Goel, the Speaker of the Delhi Legislative Assembly, AAP leader who claimed that, who claimed to have discovered what he described as the hanging house तो ये राम निवास गोयल जी ने डिस्कवर किया कि यहां पे हैंगिंग हाउस है। मगर हमारे पास जो रिकॉर्ड मिले हैं, जो नक्शे मिले हैं, जो पूरा मैप मिला है उसको ये लोग मानने को तैयार नहीं हैं और एक झूठ को छुपाने के लिए हजारों झूठ बोल रहे हैं। अब वो मैडम चली गईं। उनको मालूम है उनके सारे। आप इस हाउस की गरिमा को समझिये और ऐसी छिछौरी हरकतें मत किया कीजिए।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः करनैल सिंह जी आपनी बात को कन्टीन्यू करेंगे।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः मैं कार्रवाई करूंगा, मैं आपको चेतावनी दे रहा हूं।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः आपको चेतावनी दे रहा हूं मैं आखिरी बार, जरनैल सिंह जी आपको बाहर जाना पड़ेगा आप बैठ जाईये बैठ जाईये आप, मैम मैंने आपको मौका दिया है ना बैठिये आप।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः बताईये जी।

श्री करनैल सिंहः माननीय अध्यक्ष जी जिस जिन्दगी की ये बात करते हैं।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः जी, एक मिनट एक मिनट जरनैल जी आप उनको बोलने दीजिये।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः उनको उनको बोलने दीजिये पहले।

....व्यवधान......

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः स्पीकर साहब एक बार जब आपने कह दिया इस पर चर्चा होनी है तो फिर किन्तु–परन्तु क्या हो रही है। चर्चा होनी चाहिये, आपका ये सब पालन करेंगे।

माननीय अध्यक्षः वही मेरा कहना है आपको मौका मिल रहा है आप बताईये जी, संक्षिप्त में कहिये बात।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः बताइये।

श्री करनैल सिंहः इन लोगों के पास अपनी झूठ को बचाने के लिये हल्ला मचाने के सिवा कुछ नहीं है तथ्यों,.... अरे चैट जीपीटी में जो डालोगे वही आयेगा ना। तुम जैसे

लोगों ने चैट जीपीटी में ही डाला है और अभी मंत्री जी ने जो बात रखी वही मैंने खोला और वही दिखा रहे हैं। आप भी खोलकर देख लीजिये।

....व्यवधान......

श्री करनैल सिंहः देख लीजिये ना आप खुद ही खोलकर देख लीजिये।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः अभय जी नाम ले दीजिये जिनको बोलना है।

श्री करनैल सिंहः ऐसे सदन को भ्रमित ना करें। माननीय अध्यक्ष जी ने कहा है कि चर्चा होगी तो चर्चा का हिस्सा बनिये, आप सदन को गुमराह ना करिये, चर्चा का हिस्सा बनिये।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः आप अपनी बात कॉन्टिन्यू करिये।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः कॉन्टिन्यू करिये।

श्री करनैल सिंहः माननीय अध्यक्ष जी, मुझे लगता है कि जो आपने आदेश दिया है इस पर पूर्ण रूप से चर्चा होनी चाहिये और मंत्री जी ने जो कहा है मैं उनकी बात से सहमत हूं और मेरे पास भी प्रुफ है जो उन्होंने ये कहा था और जब मुझे दोबारा मौका मिलेगा मैं प्रुफ के साथ सदन को दिखाऊँगा, अभी धन्यवाद।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः देखिये, ये मैं एक बात आप सबको सम्मानीय सदस्यों को स्पष्ट कर दूं इस संदर्भ में historians की एक मीटिंग कॉल की गई थी जिसमें Delhi University, ICHR, JNU और IGNCA और इसके साथ–साथ National Archive सभी पक्षों को यहां पर बुलाया गया था और उनको इसके संदर्भ में बात की थी तो सबने एक सुर में कहा कि सब एक मतलब fictitious है इसमें कोई दम नहीं है और उन्होंने वो लकड़ी का खांचा देखकर जो जिसमें सामान रखते हैं बॉक्स है एक उसको देखते ही कहा ये लिफ्ट है। तो उसके बाद National Archives में मैं स्वंय गया और फिर National Archive ने इसके संबंध में हमको दस्तावेज़ दिये इस बिल्डिंग के और उसमें बताया गया कि ये Tiffin Room है और ये लिफ्ट है और इसका रास्ता उसके लिये सीढ़ियां बनाई गई हैं, यहां पर अलग से लाखों रूपया खर्च करके और उसको एक sensation create की गई

कि ये एक फांसी घर है। अभी माननीय मंत्री जी ने जो बात कही वो इस पूरी बात का तथ्य और एक gist है कि ये झूठ को किस तरह से परोसा गया है कि वो सोशल मीडिया में भी दिखने लगा। अब इस चर्चा में मैं चाहता हूं कि जो सीरियसली बात करना चाहते हैं सदस्य, इसमें मैं अब माननीय मनोज शौकीन जी से बता कहूंगा कि वो अपनी बात रखें।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः बैठिये।

श्री मनोज कुमार शौकीनः धन्यवाद अध्यक्ष जी।

....व्यवधान......

श्री मनोज कुमार शौकीनः आपने एक महत्वपूर्ण विषय पर....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः अरे आप नाम दो ना मैं आपको बुलवाऊँगा, सीरियसली बात करेंगे।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः बस ठीक हैं मैं बोल रहा हूं बुलवाता हूं आपको, बुलवाता हूं। अब आप चुप रहिये। बोलिये जी।

श्री मनोज कुमार शौकीनः अध्यक्ष जी, ये परम्परा....

....व्यवधान......

श्री मनोज कुमार शौकीनः अध्यक्ष जी ये परम्परा कोई नई नहीं है। जब–जब इतिहास के अंदर।

....व्यवधान......

श्री मनोज कुमार शौकीनः जब–जब इतिहास के अंदर अपने राष्ट्र का...

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः मार्शल्स।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः मैं आपको चेतावनी दे रहा हूं आप अपने आप चले जाईये, अजय जी आप अपने आप बाहर चले जाईये।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः मैं आपसे ये अपेक्षा करूंगा आप अपने आप बाहर चले जायें।

....व्यवधान......

श्री मनोज कुमार शौकीनः अध्यक्ष जी सच्चाई जो है।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः नहीं वार्निंग की तो जब आप बात ही नहीं होने दे रहे। आप एक झूठ को शोर मचाकर दबाना चाहते हैं।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः तो मैं कह रहा हूं बोलने का मौका दूंगा आपको लेकिन आप चुप रहिये सब, आप अपनी बारी में बोलिये ।

श्री मनोज कुमार शौकीनः अध्यक्ष जी हमारा जो देश है उसका इतिहास इतना पुराना है सोने की चिड़िया कहलाने वाला ये देश, हर समस्या का समाधान करने वाला ये देश विश्व के अंदर और इसके इतिहास को पढ़कर के जब संस्कृत से हम चले थे और उसके बाद में जिस प्रकार का हमारा इतिहास है जितना खंगालोगे उतना समझ में आयेगा लेकिन आज़ादी के बाद जिस तरह के लोग आज बदलाव कर रहे हैं जो पिछले विधानसभा अध्यक्ष ने जिस प्रकार की तस्वीर दिखाई इससे पहले भी देश के अंदर चाहे दूसरी कोई भी सरकारें रही हों भारतीय जनता पार्टी को छोड़कर के, मैं गर्व के साथ कहना चाहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में चाहे कोई मुख्यमंत्री बना हो, चाहे प्रधानमंत्री बना हो, चाहे राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जैसे व्यक्ति बने हों जब–जब राष्ट्र हित की बात आई है उसको आगे बढ़ाया है और उसको जनता के सामने देश के लोगों के सामने रखने का काम किया है। आज वही काम जब आपने किया तो ये सारा का सारा पीछे का इतिहास आप देख लो, जिन लोगों ने देश के ऊपर आक्रमण किया उनको महान बना दिया गया, उनको किताबों में लिखकर के महान बताया गया और उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा की गई।

माननीय अध्यक्षः टीपू सुल्तान की भी वो लगा दी।

श्री मनोज कुमार शौकीनः जिन्होंने देश के लिये बलिदान किया उनको पीछे धकेल दिया गया और इसके पीछे एक ही कारण रहा स्वार्थ, सिर्फ वो स्वार्थ रहा है कि मैं किस तरह से काबिज हो जाऊँ सत्ता में लोगों को गुमराह करके। देश के अंदर शिक्षा की कमी आई और आज शिक्षा के ऊपर चर्चा होनी है। जो बिल के अंदर जो हम संशोधन लेकर आएंगे, जो भी आज टेबल किया है उस पर चर्चा होगी। अगर यह शिक्षा बहुत पहले अच्छे से रही होती तो मैं समझता हूं देश का नागरिक जितना

जागरूक होता यह गुमराह कोई भी उनको कर नहीं पाते थे। अध्यक्ष जी, अधिक कुछ नहीं कहना चाहूंगा आप वो जो मैप है एक–एक के आप उसको डिस्प्ले भी करें और अपनी बात जो ये कहना चाहते हैं दूध का दूध पानी होना चाहिए। जो हमारे माननीय मंत्री जी ने आज जरनैल सिंह जी को बताया, पूरा सत्य देखो और आप तो बैठे थे जरनैल सिंह जी जब उस हाउस में। हम तो नहीं थे, जिसमें यह कुकृत्य किया गया, जिसमें यह गलत काम किया गया, रोकने की बजाय आप उसकी प्रशंसा कर रहे हो, हमें बड़ा खेद है। अध्यक्ष जी आपका बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः जो नेम प्लेट वहां लगी है 9 अगस्त, 2022 की उसको माननीय तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी ने उसका फीता काटा है वो उसमें मुख्य वो है। तो यह एक गंभीर मामला कि एक बड़े नेता ने यहां पर एक प्लेट लगाकर यह कहा ये फांसी का फंदा है, फांसी घर है जबकि वो वास्तविकता नहीं है। वह सिर्फ और सिर्फ और सिर्फ और सिर्फ झूठ है। यह बड़ी गंभीर बात है, देश के सामने मैं रख रहा हूं। अभी इस पर, मैं सोच रहा हूं कि अभी इसको चर्चा को, चलिए आप, आप बोलिए।

श्रीमती शिखा रॉयः अध्यक्ष जी, जैसा आपने कहा और यहां फैक्ट बताया ये तो टोटल डिस्ट्रेक्शन है हिस्ट्री की और इस प्लेस की गरिमा को भी इतनी बड़ी ठेस पहुंचाई गई है अपने एक झूठ और जाने किस इंट्रस्ट में और क्या इवेंट बनाने के चक्कर में इस तरह का जो काम किया गया है मुझे लगता है ये तो बहुत सीरियस है and that to from the highest seat जो उसकी तरफ से किया गया हो। मुझे तो लगता है इसमें criminal liability भी जो बनती है इनके अगेंस्ट वो भी होनी चाहिए। एफआईआर लॉज होनी चाहिए कि इस तरह आप हिस्ट्री को distort करके दिल्ली की जनता को गुमराह कर रहे हैं और इस विधानसभा की जो ऐतिहासिक विधानसभा है इसकी गरिमा को ठेस पहुंचाया गया है।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री संजय गोयल जी।

श्री संजय गोयलः माननीय अध्यक्ष जी, जो विषय आज आपने लिया और जो इतिहास के विषय में आपने यहां पूरी विधानसभा में हमारे माननीय सदस्यों को बताया। इतिहास को तोड़ना बिल्कुल बहन शिखा रॉय जी ने सही कहा है ये criminal offence बनता है क्योंकि ये फ्यूचर यहीं से डिसाइड होता है, सारे नियम यहीं से बनते हैं। मैं पूछना चाहता हूं इससे पूर्व में भी 15 साल कांग्रेस की सरकार रही, उससे पहले भी यहां विधानसभा कार्यरत रही। यदि ऐसा फांसी घर होता तो वहां के आपके पास में ऐसी कोई चर्चा कहीं डिक्सनरी में जो आपने इतिहासकारों को बुलाकर सारी बातें बताई हैं सदन में यह 100 परसेंट उस नेम प्लेट को हटाना चाहिए और जो उस समय के मुख्यमंत्री हैं उनको भी नोटिस करना चाहिए कि आपके पास यह कहां से

आया और कहां से आपने इसको... हमारे साथी विधायक ने कहा कि चैट जीपीटी जो है उसमें वही मिलता है जो कहीं पर भी हम गूगल पर पेस्ट करते हैं और पेस्ट करके गूगल से वो सर्च करके उस डाटा को निकालता है। बिना उसके कहीं से कहीं तक भी कोई भी इतिहास, कोई भी.. यदि अब मैं इनसे कहना चाहता हूं साथी विधायक महोदय से जो विधानसभा में कार्रवाई हुई चैट जीपीटी से निकाल कर दिखा दीजिए फिर हम मानेंगे चैट जीपीटी ठीक है। यह जो विषय हैं गूगल में वही विषय आते हैं जो हम डालते हैं चाहे उसमें कोई भी विषय हम डालें आपको तुरंत मिल जाएगा। इसीलिए मेरा निवेदन है माननीय अध्यक्ष जी इस पर कार्रवाई कार्रवाई होनी चाहिए और जो चैट जीपीटी की बात की है उससे संबंधित कभी विधानसभाएं नहीं चलती हैं और ना कभी विधानसभाओं में इस तरह की बातें होनी चाहिए। ऐसा लगता है शायद आपने चैट जीपीटी के माध्यम से ही पिछले 10 साल सरकार चलाई है दिल्ली के अंदर और जनता को गुमराह किया है, इसलिए इस पर कार्रवाई 100 परसेंट होनी चाहिए।

माननीय अध्यक्षः इसमें माननीय सदस्य, संजय गोयल जी की बात से आप सबको समझ लेना चाहिए कि चैट जीपीटी पर अंधा विश्वास मत करना क्योंकि चैट जीपीटी वही बताता है जो गूगल में डाला जा रहा है और अगर इन्होंने झूठ परोस दिया उसमें और साथ में जो माननीय मंत्री जी ने बताया कि उन्होंने सोर्स भी बता दिया ये झूठ किसने परोसा, कौन परोस रहा है, कौन इसको जोड़ रहा है। तो इसलिए यह जो तथ्य सामने आया है यह आंख खोलने वाला तथ्य है कि किस तरह से एक झूठ को इतिहास के पन्नों में सच कह के दर्ज कर दो और फिर दस, बीस, पचास, सौ साल बाद, दो सौ साल बाद वो कोई अंश ही बचे ना और वही बात रह जाए। कितना बड़ा गंभीर यह कृत हैं जो किया गया हैं। अभी मैं एक एक करके, अभी यहां पर आदरणीय सदस्य मोहन सिंह बिष्ट जी कुछ कहना चाहते हैं, मैं उनको इजाज़त देता हूं।

....व्यवधान......

श्री मोहन सिंह बिष्ट (माननीय उपाध्यक्ष): आदरणीय अध्यक्ष जी, वास्तव में जहां हम सब लोग और हमारे से पूर्व विधायक इस ऐतिहासिक भवन के अंदर जहां देश की पार्लियामेंट चली हो और जहां आज तक हम सब लोग विधानसभा सदस्य के रूप में यहां उपस्थित हुए हों और दिल्ली की उस जनता के लिए जो वास्तव में हम सब लोगों को जनप्रतिनिधि के रूप में यहां चुनकर भेजती हो तो यदि उस भवन को गलत शब्दों का प्रयोग करके झूठ को परोसकर के उसको फांसीघर कहकर के लोगों के दिमाग के अंदर एक भ्रम की स्थिति डाली जा रही हो, तो निश्चित रूप से मैं मानता हूं, जिस प्रकार के इस झूठ का पर्दाफाश करने के लिए आपने एक एक चीज़ को पूरी तरह से देखा है और देखा ही नहीं है। अभी थोड़ी देर के बाद इस विधानसभा

का वो नक्शा जब डिस्पले हो जाएगा। तो हम सब लोगों की आंखें खुल जाएंगी। अध्यक्ष महोदय, वास्तव में यह हमारी धरोहर है। ये हमारी राष्ट्र की एक अमूल्य धरोहर के साथ जहां संविधान को लेकर के, हम संविधान के पालन करके देश के अंदर एक ऐसी स्थिति ऐसा बना करके हम काम कर रहे हैं, वह अपने आप में अद्वितिय है। इसको झूठ में परोस करके पिछली सरकारों ने, जो इस प्रकार का कार्य किया सस्ती लोकप्रियता हासिल करते हुए, इस विधानसभा के परिसर में, शीलापट्ट लगा करके जो फांसी घर के नाम से जो संबोधित किया है, उनके खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई के साथ उनका निंदा प्रस्ताव यहां से पास होना चाहिए, ये मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं। मैं पुनः आपका आभार प्रकट करना चाहता हूं। जो भ्रम की स्थिति लोगों के मनों में थी, आपने उसको स्पष्ट रूप से यहां लोगों को दिखाकर के जो यह काम किया, आपने बहुत से ऐसे अभिनन्दनीय कार्य किए हैं और उन्हीं अभिनन्दनीय कार्यों में आज जिस प्रकार का यह पर्दाफाश किया है, उसके लिए मैं आपका आभार प्रकट करते हुए पुनः आपका धन्यवाद करना चाहता हूं।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य डॉक्टर अनिल गोयल जी।

डॉक्टर अनिल गोयल : बहुत बहुत धन्यवाद। अभी जो झूठ बोलते हैं, मैंने भी चैटजीपीटी में डाला, क्या दिल्ली विधानसभा में कोई फांसी घर था तो इसमें आया कि दिल्ली विधानसभा परिसर में कभी कोई फांसी घर नहीं था और जो फांसी घर थे कश्मीरी गेट के पास था और तिहाड़ जेल में था। दिल्ली विधानसभा जो पहले Metcalf House थी बाद में केन्द्रिय सचिवालय का हिस्सा था उसका उपयोग प्रशासनिक और विधायी कार्यो के लिए ही हुआ। ये उसी तरह है जैसे कि इतिहास में मुगलों को महिमा मंडित कर दिया गया और शिवाजी...

माननीय अध्यक्षः जैसे टीपू सुल्तान की यहां पर वो लगवा दी तस्वीर और उनको बताया गया देशभक्त और वगैरह–वगैरह। वो भी इतिहास को तोड़ना मरोड़ना।

डॉ अनिल गोयल : मैं आपको बधाई देना चाहता हूं और इसको तुरंत वो शिलापट्ट हटाया जाए और जिन लोगों ने बगैर इतिहास को investigate किए, जांच किए, वो लगाया गया है, उन पर आपराधिक कार्रवाई भी शुरुआत किया जाए। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री वीरेंद्र कादियान जी।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः अध्यक्ष महोदय, ये एक गंभीर विषय है। जो दिल्ली विधानसभा है यह बहुत ही ऐतिहासिक और इसका बहुत पुराना इतिहास है जैसे आपने बताया की 1912 का नक्शा आपने मंगवाया। तो मेरा मानना यह है कि हम यहां पर जितने भी माननीय सदस्य

बैठे हैं, मंत्रीगण बैठे हैं, हम सारे के सारे इतिहासकार और Archaeological Survey of India में काम नहीं कर रहें। आपने जो कहा पक्ष वाले लोग आपकी भाषा में बात कर रहे हैं, विपक्ष वाले पहले वाले की भाषा....

माननीय अध्यक्षः मेरी भाषा में, एक मिनट अपनी भाषा को ठीक करिए। ये विषय चर्चा के लिए आपके बीच में है। ये किसी पार्टी पॉलिटिक्स का हिस्सा नहीं है।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः मैं, मैं वही कहना चाह रहा हूं।

माननीय अध्यक्षः इसमें आप...

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान : अध्यक्ष महोदय मैं वो ही कहना चाह रहा हूं। आप पूरा सुनिए पहले।

माननीय अध्यक्षः बस।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान : तो मैं यह कहना चाह रहा हूं माननीय अध्यक्ष जी, 10 साल तक जो माननीय अध्यक्ष इस चेयर पर विराजमान रहें जिन्होंने यह सदन चलाया, उन्होंने भी जब यह निर्धारित किया होगा या पाया होगा ज़रूर कोई ना कोई तथ्य उसके साथ रहा होगा साक्ष्य रहा होगा, उसी के आधार पर इसको फांसीघर और अन्य घर जो भी है वो कहा होगा। आप मानिए ऐसा नहीं है कोई भी कह दे कि ये फांसीघर था ये फलानां घर था ये ढिकड़ा घर था। उन्होंने भी हिस्ट्री पढ़ी होगी हिस्ट्री देखी होगी Archaeology Survey से research कराई होगी। उसी के माध्यम से हुआ होगा। आज वो नहीं है और आज आप भी इस कुर्सी पर बैठे हैं कल कोई और होगा फिर उसके बाद कोई और होगा वो इसी चेयर को इस चेयर का बहुत महत्व है बहुत ही महत्वपूर्ण ये पद है जो किसी पार्टी का नहीं है, हम सबकी ज़िम्मेदारी आपकी है। आपके संरक्षण में हम कम कर रहे हैं। तो मेरा कहना ये है कि इतिहासकारों से Archaeology Survey से research associates से इन सबसे एक आप मिटिंग कराके इनसे आप लिखित में कि भई ये कहां कहां क्या क्या चीज़ें थी, उसको यहां पर प्रस्तुत किया जाए और पहले किस आधार पे ये निर्धारित किया कि ये फांसी घर था या टिफिन रूम था, उसके आधार पे किया जाए। ये कोई छोटी बात नहीं है। एक स्पीकर दूसरे स्पीकर का निर्णय विधानसभा में बात करके क्योंकि आज सरकार दूसरी आ गई हम चर्चा कर रहे हैं किसी को भी इतिहास का पता हो, पूरा रिसर्च

का पता हो, यहां कोई नहीं है। अब सिर्फ जो आज हमारे समक्ष माननीय अभय वर्मा जी ने जो रखा उस पर चर्चा कर रहे हैं और बिना रिसर्च किए, बिना समय के एकदम से हमने स्टार्ट कर दिया। क्योंकि हम वहां पर हम अपने.....

....व्यवधान......

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान : नहीं आपने किया है मैंने नहीं करा, आपने किया, हम सब ने तो नहीं किया, ना किसी ने। आपने किया आपकी बात में बात सारे मिला रहे हैं और इधर हम पहले जो है उसकी बाद में बात कर रहे हैं।

माननीय अध्यक्षः चलिए हो गई है बात आपकी। धन्यवाद।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः लेकिन मेरा मानना ये है कि....

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद कादियान जी, बात आपकी समझ में आ गई।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियान : एक मिनट, मेरा, कि सभी से लिखित में और पूरी रिसर्च करने के पश्चात इस सदन में रखा जाए और तब कोई निर्णय लिया जाए और अगर कोई गलती हुई है तो उसको सुधारा जा सकता है। ये नहीं है कि उसके खिलाफ criminal offence होना चाहिए, ये होना चाहिए। आज हम बैठे हैं अगर हमसे कोई गलती हो गई है इतिहास के विषय में या किसी विषय में भी तो उसको सुधारा जा सकता है, ...

माननीय अध्यक्षः ठीक है, धन्यवाद धन्यवाद।

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः सुधारने का वो है ना कि दुश्मनी निकालने का वो है।

माननीय अध्यक्षः अगला वक्ता हैं.....

....व्यवधान......

श्री विरेन्द्र सिंह कादियानः ये ऐसा समय नहीं है और ये बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा है। एक स्पीकर के द्वारा किया गया कार्य दूसरे स्पीकर जो है इसको करें।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद। एक बात मैं आपको स्पष्ट कर दूं। आदरणीय रामनिवास जी का पूरा सम्मान है। उनका हृदय की गहराइयों से सम्मान है क्योंकि वो इस चेयर पर 10 वर्ष विराजमान रहें। ये फ़ैसला सरकार का था। इसलिए सरकार के मुखिया ने उसका उद्घाटन किया और यहां पर पूरी सरकार आई उस अवसर पर। तो विषय सरकार से जुड़ा हुआ है, स्पीकर से नहीं जुड़ा हुआ। इसलिए मैं आपको स्पष्ट कर

दूं, इसलिए इस मुद्दे को यहां पर रखना पड़ा, क्योंकि किस आधार पर इसको फांसी घर कहा गया और क्यों कहा गया और वो भी 09 अगस्त, 2022 को, यानी कि भारत छोड़ो आंदोलन की जो वर्षगांठ पर ये इसको फांसी घर बताया गया, शहीदों से जोड़ा गया और शहीदों की फोटो वहां लगाई गई। अब इसमें माननीय सदस्य श्री अशोक गोयल जी।

श्री अशोक गोयल : माननीय अध्यक्ष जी ये बड़े महत्वपूर्ण विषय आपने सदन के ध्यान में लाया और मुझे बोलने का जो अवसर दिया इसके लिए मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं। दिल्ली विधानसभा एक ऐतिहासिक भवन है और इस भवन के तथ्यों के साथ, इतिहास के साथ छेड़छाड़ करना बहुत ही गलत है। पहले इस देश का जो इतिहास है, बड़ा स्वर्णिम इतिहास रहा है। जब से इस देश में कांग्रेस की सरकार आई पहले, तो उन्होंने हमारे इतिहास के साथ छेड़छाड़ की और हमारी चाहे वह शिक्षा व्यवस्था हो या कोई भी व्यवस्था हो उसको उन्होंने एक गलत तरीके से तोड़ मरोड़ कर पेश किया जिससे कि हम भारतीयों को ऐसा लगे कि हम हमेशा ही गुलाम थे और आज जिसके अंदर के इतने ऐतिहासिक भवन में जहां पर पहली संसद यहां पर चली और उस संसद के अंदर एक फांसी घर दिखाना बगैर किसी रिसर्च के, बगैर किसी शोध के, निश्चित रूप से यह गलत है माननीय अध्यक्ष जी इसके ऊपर संज्ञान लेना चाहिए और जो इस हिस्ट्री से रिलेटेड जो संस्थाएं आपने बताई, उनको रेफर कर कर और इस पर उचित निर्णय लेकर एक उचित कार्रवाई करनी चाहिए।

माननीय अध्यक्ष : आखिरी वक्ता के रूप में कुलवंत राणा जी।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः अभी, अभी बहुत मौका मिलेगा आपको इस पर बोलने का। अभी मैं बहुत मौका दूंगा।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः बैठिए।

श्री कुलवंत राणा : अध्यक्ष जी, आप ये बड़ा अहम विषय बहुत सारे अध्यक्ष इस परिसर से बाहर नहीं जाते थे आप पूरे परिसर में घूम रहे हो पूरे परिसर में परिवर्तन कर रहे हो, और ये जो विषय निकाल के लाये हो, सच में जो गहन चिंतन किया है आपने और इसको भूतघर बना दिया इन लोगों ने भूतघर और जब फांसी होती थी तो भूत भी होंगे यहां, तो वो भूत इनको तंग कर रहे थे। तो अध्यक्ष जी आपको बधाई देता हूं, अध्यक्ष जी आपको बधाई देता हूं, बहुत अच्छा विषय लेकर आये हो, और यह बिल्डिंग यह भवन इसकी एक गरिमा रही है और सच में 1912 में जब ये भवन बना उससे पहले पार्लियामेंट बनने से इस भवन में पार्लियामेंट भी चली है और जिस प्रकार का वो पट्टिका यहां लगाई गई, वो पट्टिका बिलकुल इनकी मनगढ़ंत है अपनी स्वयं की योजना से, जब फांसी घर था ही नहीं कोई स्ट्रक्चर है नींचे, इस बिल्डिंग का बेस है वो, और फांसी होती तो भूत भी होंगे, और किसी को फांसी हुई हो, कोई एक उल्लेख है जिसको फांसी हुई यहां पर, ˙ इसका उल्लेख करें, उस फांसी घर में किसको फांसी हुई, उस फांसी घर में किस–किस को फांसी हुई।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्ष : ठीक है, धन्यवाद।

....व्यवधान......

श्री कुलवंत राणा : मैं एक और बात कहूंगा आप उस शिलापट्ट को हटवाओ और इस प्रकार का जो भ्रम दिल्ली में फैलाया गया, ये फांसी घर था, इससे इस भवन की गरिमा खत्म होती है।

माननीय अध्यक्ष : इसमें....

....व्यवधान......

श्री कुलवंत राणा : ये भूतघर बन जाएगा, ये विधानसभा है और विधानसभा रहेगी, भूतघर नहीं था।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्ष : ठीक है।

श्री कुलवंत राणा : और इनकी जो योजना थी, वह गलत थी, और वो पट्टिका हटाई जाए और आप जो विषय लेकर आए हैं, उसके लिए आपको बधाई।

माननीय अध्यक्ष : अच्छा, अब माननीय सदस्यगण,

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्यगण ये विषय, ये विषय कल भी चर्चा में आएगा अभी इसको चर्चा को यहीं रोकते हैं। अभी जो वीरेंद्र कादियान जी का जो सुझाव आया है, आप बैठिए, कल, कल बोलिएगा अभी कल भी बोलना है कल भी बोलना है इसपे आपको।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्ष : बैठिए, आप बैठिए बैठिए,

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्ष : आप बैठिए आपका नाम जो है ना जो मैडम ने आए हैं जो नाम दिए हैं आप बैठिए।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्ष : अभी, अभी एक बार बैठिए, एक बार बैठिए, एक बार बैठिए, कुलवंत जी आप भी बैठिए। माननीय सदस्यगण आज इस विषय पर चर्चा को यहीं रोकते हैं और यह विषय कल फिर टेकअप होगा। अभी यहां पर जो वीरेंद्र कादियान जी का सुझाव आया है, उसके आधार पर हम इस चर्चा को कल के लिए पोस्टपोन करते हैं और कल नेता, विपक्ष इस संबंध में संबंधित लोगों से बात करके कि यह फांसी घर क्यों बनाया था उसके संबंध में आपके पास क्या तथ्य हैं और उसका आधार क्या है, कुछ उसके डॉक्यूमेंट लेकर के ये आऐंगे

और जो ये डॉक्यूमेंट लेकर के कल आऐंगे उसको समझकर जो है फिर सदन फ़ैसला,

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्ष : आप लाएंगे क्या?

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्ष : नहीं लाएंगे, आप कोई डॉक्यूमेंट नहीं लाना चाहते?

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्ष :चलिए, आप तरीका बता दीजिए। आपने ही सलाह दी है ना, कादियान जी, आपने सलाह दी है ना? आपने ही ये कहा, अब आप, अब आप बैठ जाइए। जी।

....व्यवधान......

श्री कुलवंत राणा : अध्यक्ष जी, अभी यहां फांसी तो कोई हुई नहीं थी, अब कोई फांसी खाने को तैयार हो तो फांसीघर बन सकता है। इनमें से कोई फांसी खाने को तैयार है क्या?

.....व्यवधान......

माननीय अध्यक्ष : प्लीज बैठिए, बैठिए, बैठिए। देखिए कल इस पर फिर चर्चा होगी और विपक्ष जो पहले सत्ता रूढ़ दल था, जिन्होंने यहां पर ये एक शिलापट्ट लगाया, उस संबंध में डॉक्यूमेंट सदन के समक्ष पेश करेंगे जिस आधार पर इसको फांसीघर कहा गया है और इस पर एक ऑफिशियल डॉक्यूमेंट सदन के समक्ष रखेंगे और ये विपक्ष के सदस्य का जो सुझाव है उसको मान लिया गया है और उसके आधार पर कल इस चर्चा को फिर आगे बढ़ाएंगे और वह डॉक्यूमेंट ये यहां पर प्रस्तुत करेंगे जिस आधार पर इसको फांसीघर कहा है। आज इस चर्चा को यहीं रोकते हैं। और विशेष उल्लेख। मैं इसमें, अब आप कल बात करियेगा। अब मैं श्री अनिल झा अपना विषय रखेंगे 280 में।

श्री अनिल झाः अध्यक्ष जी, आपसे इजाजत मांग रहा हूं।

माननीय अध्यक्षः नहीं नहीं 280 में बात करेंगे तो वो 280 में करिये।

श्री अनिल झाः 280 पर ही कर रहा हूं।

माननीय अध्यक्षः नहीं इस पर कल बात करेंगे हम। जब आप कल तथ्य लेकर आ जायेंगे।

श्री अनिल झाः नहीं इस पर विषय नहीं रख रहा बस मैं 280 पर। 280 पर बस मैं कह रहा हूं सर मैं जब हम कोई विषय रखते हैं तो सरकार में दो तीन मंत्री ऐसे है वो उठकर तू तड़ाक करते हैं। कल भी कपिल मिश्रा ने यहां तू तड़ाक करके हमें बोला। ये सम्मान नहीं करते और...

माननीय सभापतिः कोई नहीं मैं वो देख लूंगा। आप अपना विषय रखिए।

श्री अनिल झाः वो बदतमीज़ी करते हैं। अध्यक्ष जी आपके संज्ञान में आना चाहिए। ऐसे एक बार सिरसा जी ने बोला था। हम तो जी करके बोलते हैं, वो बोलते हैं ओ तू चुप हो जा। ओ तू ये कर ले। जब हम तू तड़ाक करेंगे, फिर यह कहीं के रहेंगे नहीं।

माननीय अध्यक्षः अब वो आपके पुराने मित्र हैं। वो क्या करेंगे?

श्री अनिल झा : नहीं बदतमीजी कर रहा है जी।

माननीय अध्यक्षः चलो वह ठीक कर लेंगे, ठीक है।

श्री अनिल झाः अच्छा ।

माननीय अध्यक्षः आगे से सब लोग यहां पर कोई भी सदस्य किसी को तू कहकर नहीं बोलेगा। ये नहीं नहीं, आपका नहीं कह रहे हैं हम। नहीं नहीं एक मिनट। दोनों तरफ से ।

श्री अनिल झाः बोल ही रहे हैं जी हम तो।

माननीय अध्यक्षः दोनों तरफ से ये है।

श्री अनिल झाः हम तो 'आप' करेंगे, जी करके बोलेंगे ये तू तड़ाक करके बोलेंगे।

माननीय अध्यक्षः चलिए चलिए चलिए कोई नहीं, सब 'आप' करके ही बोलेंगे। शुरू करिए।

विशेष उल्लेख(नियम–280)

श्री अनिल झाः अध्यक्ष जी 280 में, मैं किराड़ी विधानसभा की विकट समस्या की ओर आपका ध्यान इंगित करना चाहता हूं कि किराड़ी विधानसभा एक dense populated एक क्षेत्र है। साढ़े आठ लाख की आबादी है, लगभग पौने चार लाख वोट है, किराड़ी

विधानसभा में। 106 अनाधिकृत कालोनियां है। हमने देखा कि अनाधिकृत कालोनियां इतनी ज़्यादा होने के बाद और एक भी लीगलाइज्ड मकान नहीं है। एक भी डीडीए का मकान नहीं है, एक भी वैलिड घर नहीं है। वहां पर या तो स्लम बस्तियां हैं या अनाधिकृत कालोनियां, झुग्गिया हैं और इस पर हमारे को जो सबसे बड़ी जलभराव की समस्या है। वो जलभराव की समस्या का निपटान जो है हम पिछले 12—15 वर्षों से लगातार कर रहे हैं। उसके लिए लगातार एस्टीमेट बनाए जा रहे हैं। लगातार एस्टीमेटों पर विचार होता है वो implement नहीं होता है। उसके बाद यहां पर एक बड़ा drainage system हम ऐसा बनाना चाहते हैं जिससे कि जलभराव की समस्या का समाधान हो जिससे कि चार पांच विधानसभाओं को उस पर राहत मिलेगी। लेकिन वह अभी तक implement नहीं हो पाया है। जलभराव के कारण से पिछले दस सालों में सात लोगों की करंट से मृत्यु हुई है। यह सदन के संज्ञान में मैं लाना चाहता हूं और यह एक दर्दनाक और एक त्रासदीपूर्ण है। जलभराव के जो प्रमुख कारण है वो है drainage system अधूरी, बंद है, नालों की नियमित सफाई नहीं होती। अवैध निर्माण और सड़क पर जो अतिक्रमण है, वो इसका सबसे बड़ा कारण है और जो खुले ट्रांसफार्मर जो जहां मर्जी सरकारी ज़मीन पर लगा दिए गए हैं। ट्रांसफार्मर मेन मुख्य सरकारी जमीनों पर लगाए गए जिसके कारण से जितनी बड़ी बिजली की कंपनियां है एनडीपीएल है, बीएसईएस है, इसने हज़ारों करोड़ की ज़मीन पर अवैध कब्जे कर लिए। इसके ऊपर इनका कोई पूछताछ करने वाला व्यक्ति नहीं है। यह बहुत तकनीकी विफलता, प्रशासनिक लापरवाही, योजनाओं के अभाव के कारण से हमारे यहां बाढ़ की स्थिति बनी हुई है और सबसे बड़ी दिक्कत यह हो रही है जितने लोगों की मृत्यु हुई है करंट से हमारे यहां पर उनको आज तक मुआवज़ा अभी पूर्ण रूप से नहीं दिया गया है। जिनको सरकार की तरफ से दिया जाना चाहिए था। ऑटोमेटिक जो पंपिंग सिस्टम मैं लगाने की लगातार बात करता रहा हूं उस पर भी कोई ज़िम्मेदारी पिछले चार पांच महीने से तो नहीं हो पा रही है। ज़िम्मेदार अधिकारी जो है उसके ऊपर कार्रवाई की जाए। इसको लेकर के मैं सदन के मध्य में यह आग्रह करना चाहता हूं जितनी सिविक एजेंसीज हैं, उनके समन्वय की सुनिश्चित बैठकें तय की जाए। आखिर साढे आठ लाख की आबादी बाढ़ के करण

से वहां पर भय में जीती है और जो बरसात आती है वहां पर और ज़्यादा स्थिति विकट हो जाती है। इसके संबंधित दो तीन बड़ी परियोजनाएं हैं जिसमें बड़े ड्रेनेज सिस्टम बनने हैं। अब उसमें स्थिति ये हो रही है। मैं अध्यक्ष जी आपसे ये कहना चाहता हूं आप अभिभावक के रूप में है सदन के अध्यक्ष के रूप में है। आपकी दृष्टि में सभी विधानसभाऐं बराबर हैं। कृपया मैं सदन का ध्यान आपके माध्यम से सरकार की तरफ से ये बताना चाहता हूं। हम इस विधानसभा के चुनकर के आए हुए लोग हैं। हमारे यहां जो विकट समस्याएं हैं गरीब गुरबा लोग रहते हैं। दलित लोग रहते हैं, वंचित लोग रहते हैं, पूर्वांचल के लोग रहते हैं, आखिर उनको भी Right to Equality Act के तहत जीने का अधिकार है। आपसे आग्रह है सरकार के नुमाईंदें कारिंदे अगर उस पर ध्यान देंगे तो इनका इकबाल कायम रहेगा। अगर ध्यान नहीं देंगे तो हम लोग त्रासदीपूर्ण जीवन वहां जी रहे हैं और सरकार इस पर ध्यान दे ऐसा ही मेरा आपसे आग्रह है।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद। माननीय सदस्य श्री मोहन सिंह बिष्ट जी।

श्री मोहन सिंह बिष्टः आदरणीय अध्यक्ष जी मैं अपनी विधानसभा मुस्तफाबाद की एक बहुत ही गंभीर समस्या की ओर सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं। अध्यक्ष महोदय मुस्तफाबाद के अंतर्गत बारह बर्ष पहले जो सीवर की लाईन डाली गई थी, उनमें बहुत सी अनियमितताएं बरती गई और अन्य अनियमितताएं ही नहीं सर सीवर लाईन के जो main hole थे, main hole बनाकर के उन hole में ना तो सीमेंट का प्रयोग किया गया, जो उसके अनुसार कार्य होना था, वह कार्य नहीं किया गया। peripheral connection भी उस क्षेत्र के अंतर्गत नहीं किए गए। अध्यक्ष जी जिससे कि सीवर लाईन का फ़ायदा किसी को नहीं होगा और घटिया श्रेणी की सामग्री का उपयोग किया गया। उपरोक्त सीवर की लाइन की सफाई के लिए दिल्ली जल बोर्ड की ओर से किसी भी प्रकार से कार्य नहीं किया गया। अध्यक्ष महोदय मेरे द्वारा 30 अप्रैल, 2025 को एक पत्र दिल्ली जल बोर्ड को लिखा गया था और जब उस पत्र का जवाब आया तो सीवर लाइन maintenance का ज़िम्मा वहां के जल बोर्ड को दिया गया। मुझे अत्यंत दुख के साथ कहना पड़ रहा है, सर सीवर लाइन की सफाई की कोई व्यवस्था अभी तक नहीं की गई। अध्यक्ष महोदय मेरा आपसे

विनम्रता से एक निवेदन है यदि कहीं सीवर लाइन डाली जाती है, डालने के बाद वह जल बोर्ड को, फिर उन लाइनों को hand over और take over करने के लिए स्थानीय जल बोर्ड के उस कार्यालय को पत्र देता है और पत्र देने के बाद उसकी एनओसी प्राप्त करनी होती है। दुर्भाग्य यह है इन बारह सालों के अन्तराल में उनकी एनओसी तो ले ली, उनमें घटिया सामग्री का प्रयोग तो किया गया लेकिन वो सीवर लाइन आज दिन तक चालू नहीं है जिसकी वजह से स्थानीय लोगों को बहुत बड़ी परेशानी हो रही हैं। अध्यक्ष महोदय मेरा आपके माध्यम से माननीय जल मंत्री से निवेदन है कि विगत वर्षों के अंदर आवंटित बजट का जो दुरुपयोग किया गया था उसके लिए उच्च स्तरीय कार्रवाई की अनुशंसा की जाए। दोबारा से नई सीवर लाइन बिछाई जाए, अबिलंब यहां बजट का प्रावधान करके मुस्तफाबाद की जनता को, इससे राहत दिलाने का काम किया जाए, आपने मुझे बोलने का समय दिया, आपका बहुत बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य श्री करनैल सिंह जी।

श्री करनैल सिंह : धन्यवाद माननीय अध्यक्ष जी, मुझे आपने 280 पर बोलने का मौका दिया। मैं आपका ध्यान और हमारे यहाँ बैठे हुए स्वास्थ्य मंत्री का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। मेरी विधानसभा, महावीर हॉस्पिटल एक है जो सिर्फ मेरी विधानसभा नहीं, वहां पर 10 से 20 लाख लोगों के एरिये को कवर करता है और वही एक मुख्य हॉस्पिटल है वहां पर, मैंने आज सुबह ही माननीय मंत्री जी को वहां स्टाफ की जो कमी है उसकी लिस्ट मैंने दे दी है अगर आप चाहे तो वह मैं सदन को भी दे सकता हूं, लेकिन यही कारण नहीं है वह हॉस्पिटल अभी दो तीन साल पहले ही बना है और वह इतना पैसा उस पर खर्च हुआ मैंने उसमें तीन चार बार स्वयं गया हूं, बिल्डिंग बनी है, लेकिन उस बिल्डिंग के अंदर जिस तरह से भ्रष्टाचार हुआ है मैं माननीय मंत्री जी से भी अनुरोध करूंगा, कि एक बार उसको विजिट करें और उसके अंदर क्योंकि वह बिल्डिंग ठीक से बनी नहीं और सिर्फ 25 प्रतिशत से 50 प्रतिशत ही वहां पर उसका सदुपयोग हो रहा है, क्योंकि उस बिल्डिंग की क्वालिटी के अंदर जितना भ्रष्टाचार हुआ, मैं मंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि उसको जाकर के

संज्ञान ले, और इसकी उच्च स्तरीय जांच होनी चाहिए क्योंकि उसमें जनता की गहरी कमाई 5–10 करोड़ रूपये नहीं लगी है उसके अंदर कम से कम 500 करोड़ का खर्च हुआ है और जिस तरह से वहां पर मशीनरी के नाम पर पिछली सरकार के अंदर भ्रष्टाचार करके वहां पर दूसरे लोगों को एक्स रे करने होते थे या ब्लड एक रिपोर्ट करनी होती थी तो दूसरी सरकार द्वारा अपने निजी अस्पतालों के अंदर लोगों को रेफर किया जाता था, जिससे जो लोग जो है वो त्राहि त्राहि वहां पर हैं। वहां पर स्टाफ की जो कमी है पिछले 1 साल से तो मैं उसको देख रहा हूं, क्योंकि विधायक बने से पहले भी मैं स्वयं एक समाजसेवी होने के नाते वहां जाता रहा लेकिन जिस तरह से वहां ठगी होती रही, यहां तक की वहां पर जो सिक्योरिटी गार्ड जो रखें हुए हैं, जिसको अभी पीछे मैंने हटाया और आपसे स्वास्थ्य मंत्री जी से भी अनुरोध करूंगा कि वहां पर लोग पिछली सरकार के जो चमचे जो रहते थे, सिक्योरिटी गार्ड का जो काम करते थे उनके ठेकेदार उनसे 10–10, 20–20, 50–50 हज़ार की रिश्वत लेते थे। मैं मंत्री जी से और सदन के माध्यम से अनुरोध करूंगा कि उस बिल्डिंग की, उच्च स्तरीय जांच होनी चाहिए, ऐसे भ्रष्टाचार की जांच होनी चाहिए। आपने मुझे बोलने का मौका दिया। आपका बहुत बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य श्री कैलाश गंगवाल जी।

श्री कैलाश गंगवाल : अध्यक्ष जी, मैं आपका ध्यान अपनी मादीपुर विधानसभा की तरफ दिलाना चाहूंगा, जहां पर भटकने वाले पशु जैसे गाय है, आवारा कुत्ते हैं, उनका पूरा आतंक है । जिन लोगों ने उनको पाल रखा है और जिन्होंने संरक्षण दे रखा है, आप देखेंगे कि वो उनको खुला छोड़ देते हैं और गाय हमारी माताएं जो खुले में कूड़ा खा रही हैं और जब दूध का टाईम होता है वह उनको ले जाते हैं और इन्जेक्शन लगाते हैं और वह दूध हम ही लोगों को पीने को मिलता है और दूध की क्वालिटी किस तरह होती होगी और किस तरह लोग बीमार होते हुए आप देखते होंगे और वही गाय जब गोबर करती हैं सड़कों में, गलियों में, बारिशों का मौसम है और किस तरह से हमारी

सड़कें, पार्क, किस तरह से गंदे और जब स्कूटर या मोटरसाइकल जा रही होती हैं उन्ही पर, वह फिसल कर गिर जाते हैं और एक्सीडेंट होते हैं। इनके ऊपर कोई कार्रवाई नहीं होती। अभी हमारे मुख्यमंत्री जी ने आते ही मटियाला विधान सभा में गौशाला के लिए बोला है, लेकिन गंदगी बहुत हो रही है, इस समय जो इस विभाग को देखते हैं एमसीडी के डॉक्टर, वेटेनरी डॉक्टर बिल्कुल लापरवाही करते हैं। एक एक पद पर कई–कई सालों से बैठे हुए हैं और कई बारी हम क्षेत्र के अंदर रहते हैं, जो गाय पालने वाले लोग होते हैं, उनसे हम बात करते हैं तो वो हटने के लिए तैयार है। लेकिन वह अधिकारी उनसे मिलकर क्या बात करते हैं, हमें नहीं पता, लेकिन वह वहां से हटने को तैयार हो तो दुबारा उनको लालच होता है दूध बेचने का। इसी तरह से आपने देखा होगा हमारे यहां पर आवारा कुत्ते भी दिल्ली के अंदर बहुत हैं। सरकार का ध्यान उन लोगों की ओर दिलाना चाहूंगा जो घरों में पालतू कुत्ते पालते हैं या गलियों में आवारा कुत्तों को संरक्षण प्रदान करते हैं। सरकार ने कुछ समय पहले विदेशी कुत्तों की नस्लों के पालने पर प्रतिबंध लगाया था, फिर भी बड़ी संख्या में ये लोग उन्हीं नस्लों को पाले हुए हैं। वहीं काफी सारे लोग धर्म के नाम पर कुत्तों को दूध पिलाते हैं। ये ही कुत्ते इकट्ठे होकर किसी भी छोटे बड़े बच्चों पर हमला कर देते हैं। यही आवारा कुत्ते आते जाते दुपहिया वाहन के पीछे भी भागते हैं। इसी वजह से कुत्तों के काटने से बच्चों व बड़ों की काफी संख्या में मृत्यु हो चुकी है। मेरी मादीपुर विधानसभा में भटकने वाली गायों और आवारा कुत्तों की बड़ी समस्या बनी हुई हैं। लोगों ने काफी संख्या में गाय पाल रखी हैं। हर एसोसिशन के लोग हमारे पास में बैठते हैं लोगों को सुनने के लिए सबसे पहली समस्या उनकी यही होती है कि गायों का बहुत आतंक है। इस पर जल्द से जल्द कार्रवाइकी जाए जिससे दिल्ली की जनता को स्वस्थ और साफ सुथरा माहौल मिले और जो हमारे गाय माताएं घूम रही है और जो गंद खा रही हैं उससे उनको छुटकारा मिले। धन्यवाद अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री प्रद्युम्न सिंह राजपूत।

श्री प्रद्युम्न सिंह राजपूतः अध्यक्ष महोदय, मैं आपका ध्यान एक समस्या की तरफ आकर्षित करना चाहता हूं यह माननीय परिवहन मंत्री जी के ध्यान में डीटीसी पेंशनधारकों की गंभीर समस्या को लेकर विषय है। वैसे तो आपदा सरकार के समय से जो इतनी सारी समस्याएं आ रही हैं यह भी समस्या उन्हीं की पैदा की हुई है। अध्यक्ष जी दिल्ली परिवहन निगम दिल्ली की लाईफलाइन रही है, किंतु पिछले आपदा और अन्य सरकारों की लटकाने भटकाने की नीति के कारण दिल्ली में ना तो डीटीसी कर्मियों को सुविधा और ना ही परिवहन व्यवस्था के सुधार के लिए कुछ ठोस किया है। इसी कड़ी में मैं माननीय परिवहन मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि डीटीसी के कुल 20 हजार से अधिक पेंशनधारी हैं और महिलाएं जो विधवाएं हैं उनकी भी संख्या काफी है। इन्होंने तीन दशक तक परिवहन निगम की सेवा की है। अपने वेतन में से लगभग बीस लाख तक का अंश भाग भविष्य निधि के रूप में डीटीसी पेंशन ट्रस्ट में जमा किया है। वर्ष 2015 के बाद से इनकी पेंशन सरकार के बजट अनुमोदन पर निर्भर कर दी गई, इसके बाद से ही इनको पेंशन नियमित रूप से नहीं मिल पाती। अध्यक्ष जी, यही नहीं सीसीएस पेंशन नियम लागू होने के बावजूद डीटीसी पेंशनधारियों को चिकित्सा हेतु कैशलेस सुविधा भी प्राप्त नहीं है, जबकि केंद्र एवं राज्य सरकार के अन्य विभागों के पेंशनधारी कर्मचारी को यह सुविधा उपलब्ध है। कैट ने 28 फरवरी 2024 को आदेश संख्या ओए 341/2024 में पेंशन भुगतान प्रत्येक माह की पहली तारीख को करने के लिये कहा है। साथ ही माननीय सर्वोच्च न्यायालय की पीठ ने पेंशन को प्रत्येक सेवानिवृत्त कर्मचारी का अधिकार कहा है और उस पेंशन को उसका जीविका भत्ता बताया है। किंतु पिछली आपदा सरकार के निकम्मेपन के करण यह पेंशनधारी अपने हक के लिए दर दर भटक रहे हैं। अतः अध्यक्ष जी, माननीय मंत्री जी से अनुरोध है कि डीटीसी के सभी पेंशन धारी कर्मचारी को प्रत्येक माह पेंशन अनिवार्य रूप से दें, इनको कैशलेस चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के संबंध में भी आवश्यक आदेश जारी करें। अध्यक्ष जी, आपने बोलने का समय दिया, बहुत बहुत आभार, बहुत बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री हरीश खुराना जी।

श्री मोहन सिंह बिष्टः ये जो डीटीसी की पेंशन है...

माननीय अध्यक्षः नहीं, वह अभी मैं अभी अभी 280.

श्री मोहन सिंह बिष्टः ...इसी में दे देता इन्हीं के साथ।

माननीय अध्यक्षः कोई नहीं हम आपको अलग से मौका दूंगा।

श्री मोहन सिंह बिष्टः कोई नहीं सर थैंक यू।

श्री हरीश खुरानाः आदरणीय अध्यक्ष जी आज मैं आपका ध्यान और इस सदन का ध्यान माननीय मंत्री जी का ध्यान मेरे विधानसभा के अंदर एक सरकारी अस्पताल जिसका नाम आचार्य भिक्षु है, उसकी जमीनी स्थिति की ओर आकर्षित करना चाहता हूं. अध्यक्ष जी, डेढ़ सौ बैड का यह हॉस्पिटल हमारे यहां पर एक लाईफलाइन की तरह है. लेकिन अफसोस जो लोग लाईफ देते हैं, जो हॉस्पिटल लाईफ देता है आज खुद वह आईसीयू के अंदर है अध्यक्ष जी। ज़मीनी हकीकत यह है कि वहां पर डॉक्टरों की भारी कमी है, पैरामेडिकल स्टाफ की कमी है और यहां तक कि जो उपकरण है उसकी भी भारी मात्रा में कमी है। अल्ट्रासाउंड की मशीन तो है, लेकिन पिछले कई सालों से वह बंद पड़ी है अध्यक्ष जी, उसके लिए उन बेचारे गरीब लोगों को अपने सारे टैस्ट बाहर करवाने पड़ते हैं , यह एक गंभीर विषय है अध्यक्ष जी। इसके अलावा 2024, 20 सितंबर को जो आडिट हुआ था उस अस्पताल का, उसमें जो पाया गया उसमें ज़रूरी दवाएं जो हैं, उसकी भी भारी किल्लत पाई गई, वह आज तक चली आ रही है अध्यक्ष जी, इसकी ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। अध्यक्ष जी, पीएम केयर के अंदर, आपको याद होगा पीएम केयर के अंदर बहुत सारे आक्सीजन कंसेंट्रेटर्स और वेंटिलेटर खरीदे गए। ऐसे ही आचार्य भिक्षु के अंदर भी खरीदे गए, लेकिन वह आज तक कहां गए, यह नहीं पता है। हालत यह है कि वह सौ बैड का हॉस्पिटल एक बिल्डिंग और तैयार हो रही है अध्यक्ष जी। हैरानी होगी सौ बैड वो और डेढ़ सौ बैड यह., ढाई सौ बैड का हॉस्पिटल अध्यक्ष जी, लेकिन पार्किंग तक नहीं बनाई गयी उसके अंदर, एक बहुत बड़ा गंभीर विषय है वहां पर और जो बिल्डिंग मैटीरियल वहां पर लगाया गया, वह मानक के हिसाब से नहीं है तो इसलिए मैं जांच की मांग करता हूं, एक आपके माध्यम से, मंत्री जी से कहता हूं कि इसकी जांच होनी चाहिए अस्पतालों के अंदर और जो डाक्टर और जो पैरामेडिकल स्टाफ है, उसकी तुरंत नियुक्ति होनी चाहिए और जो खराब पड़े उपकरण है, उनको तुरंत ठीक कराया जाए और दवा आपूर्ति की जो वहां घोर कमी है, स्पेशियली रेबिज और वहां जो तमाम तरह के जो दवाइयां वहां मिलती हैं, वह नहीं मिल रही उसके लिए भी होना चाहिए। इसके लिए मैं मांग करता हूं कि उच्चस्तरीय जांच भी हो, उस बिल्डिंग मैटीरियल की जो मैटीरियल वहां लगाया गया है, बहुत बहुत धन्यवाद.

माननीय अध्यक्षः माननीय नेता, विपक्ष सुश्री आतिशी जी.

सुश्री आतिशी (माननीय नेता, प्रतिपक्ष): धन्यवाद अध्यक्ष महोदय, मैं आपका ध्यान कालका जी विधानसभा और दिल्ली के कई इलाकों में एक गंभीर मुद्दा जो पिछले छह महीने से उठ रहा है उस पर दिलाना चाहती हूं। दिल्ली के अलग अलग इलाकों में गरीबों की झुग्गियों को तोड़ा जा रहा है, उन पर बुलडोजर चलाया जा रहा है। जंगपुरा विधानसभा में मद्रासी कैंप पे बुलडोजर चलाया गया, वजीरपुर विधानसभा में जेलर वाला बाग में बुलडोजर चलाया गया, रेलवे लाइन इंडस्ट्रियल एरिया के पास बुलडोजर चलाया गया।

माननीय अध्यक्षः मैडम आप ज़िम्मेदार ज़िम्मेदार नेता हैं, नेता विपक्ष, लेकिन यहां अफवाह अगर आपने।

माननीय नेता प्रतिपक्षः कालका विधान सभा में, सुन लीजिये अभी।

माननीय अध्यक्षः नहीं नहीं आप आप तथ्यों का तोड़ मरोड़कर सदन में पेश करेंगी. तो यह तो अच्छी बात नहीं है. यह तो अच्छी बात नहीं है।

माननीय नेता प्रतिपक्षः नहीं मैं कहां, बिल्कुल बुलडोजर चलाया गया है।

माननीय अध्यक्षः आपको मालूम है आपको मालूम है सारी बात का, उसके बावजूद आप इस तरह से वक्तव्य मैंने आपको इजाज़त दी है.

माननीय नेता प्रतिपक्षः बिल्कुल बुलडोजर चलाया गया है, अध्यक्ष महोदय, ये तथ्य है।

माननीय अध्यक्षः आप पूरी बात बताइए उनका रिलोकेशन हुआ है, उनको मकान दिए गए हैं. पूरी बात बताइए. हाँ पूरी बात बताइए।

माननीय नेता प्रतिपक्षः मैं आपको आंकड़ों के साथ बताती हूं।

माननीय अध्यक्षः हां पूरी बात बताईये।

माननीय नेता प्रतिपक्षः भूमिहीन कैंप जो कालकाजी विधानसभा में है, उसमें तीन हज़ार मकान थे, तीन हज़ार फलैट बनाए गए उनको रिलोकेट करने के लिये लेकिन मात्र 1800 लोगों को घर दिये गये, 1200 लोगों को बेवजह रिजेक्ट किया गया। वो लोग कोर्ट गए कोर्ट में डीडीए।

माननीय अध्यक्षः पालिसी तो आपकी बनाई हुई है। आपने ही जो पालिसी बनाई..

माननीय नेता, प्रतिपक्षः आप बात तो रखने दीजिए, डीडीए की पालिसी थी। उनको रिजेक्ट किया गया।

माननीय अध्यक्षः अब डीडीए की पॉलिसी हो गई। पॉलिसी इनकी है।

सुश्री आतिशी(माननीय नेता, प्रतिपक्ष): जब ये लोग कोर्ट गए, ग्यारह बजे कोर्ट का हियरिंग थी, लेकिन छह बजे बुलडोजर चला दिया गया। अध्यक्ष महोदय,

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः ये मैं, आप, इनकी बात पूरी हो जाए फिर।

माननीय नेता, प्रतिपक्षः यह वही सरकार है जिसने चुनाव से पहले वादा किया जहां झुग्गी है वही मकान देंगे। यह वही पार्टी है जिसकी सरकार है....

माननीय अध्यक्षः जो, आपने जो लिखा है वही आप पढ़े तो अच्छा है, जो लिखा है आपने वही, आपने जो लिखा है वो पढ़िए आप, वो पढ़ दीजिए आप।

माननीय नेता, प्रतिपक्षः जहां पर आदरणीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा कि एक भी झुग्गी को तोड़ा नहीं जाएगा। मद्रासी कैम्प को जब तोड़ा गया, मैं खुद वहां पर गई, उन्होंने कार्ड दिखाएं उसमें मोदी जी की फोटो बनी हुई थी, मारवाह जी की फोटो बनी हुई थी, उस पर जहां झुग्गी वहां मकान लिखा हुआ था और वहां पर रहने वालों ने बोला कि हमने हमेशा केजरीवाल को वोट दिया था, इस बार गलती कर दी भारतीय जनता पार्टी के बहकावे में आ गये...

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद। आपने जो लिखा वो नहीं आप पढ़ रहे।

माननीय नेता, प्रतिपक्षः हम फोन करते रह गए अपने विधायक को लेकिन फोन नहीं उठाया। अध्यक्ष महोदय,

....व्यवधान.......

माननीय अध्यक्षः चलिए, धन्यवाद, धन्यवाद। आप मुद्दे पर तो, आप मुद्दे पर बात ही नहीं कर रहे। जो आपने लिखा है मैं पढ़ दूं।

.....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः मैं, एक मिनट,

....व्यवधान......

माननीय नेता, प्रतिपक्षः अब ये है कि 280 में टोकाटाकी रही है।

.....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः आपने, देखिए, मैं आपको फिर मौका दे रहा हूं।

माननीय नेता, प्रतिपक्षः आप अपनी सरकार को बचाना चाहते है।

माननीय अध्यक्षः सुनिए, एक मिनट।

माननीय नेता, प्रतिपक्षः गरीबो को...

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः आप ऐसे, आप ऐसे नहीं बोल सकते आप। नहीं नहीं, आप ऐसे नहीं बोल सकते।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः नहीं, तो फिर आप रहने दीजिए आप। आप रहने दीजिए। आपने जो लिखकर दिया है, आप वो पढ़ दीजिए ना, वो पढ़ दीजिए आप। मैं आपको फिर, फिर मैं, आप हां, आतिशी जी फिर से शुरू करेंगी। आप जो लिखा है वो पढ़ दीजिए।

माननीय नेता, प्रतिपक्षः मैं वो ही पढ़ रही....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः 280 में तो देखिए,

....व्यवधान......

माननीय नेता, प्रतिपक्षः बीच में टोकाटाकी....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः हां, वो पढ़िए आप, आप पढ़िए, 280 पढ़ दीजिए आप।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः आपने जो लिखा है वो पढ़ दीजिए।

....व्यवधान......

माननीय नेता, प्रतिपक्षः अध्यक्ष जी, जो सरकार आज दिल्ली में है उसने वादा किया कि जहां झुग्गी है वहीं मकान देंगे लेकिन उस वादे के विपरीत जाकर, उस वादे के विपरीत जाकर गरीबों के घरों को तोड़ा जा रहा है। अध्यक्ष जी, आपकी विधान सभा में भी रेलवे में झुग्गियां तोड़ने का नोटिस...

.....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः अच्छा, अब आपकी बात पूरी हो गई। धन्यवाद, धन्यवाद। मैं सदन को स्थिति स्पष्ट कर देना चाहता हूं,

.....व्यवधान.......

माननीय अध्यक्षः एक मिनट। आप बैठ जाइए, बैठ जाइए, बैठ जाइए आप। इसका राजनीतिक विषय बनाने की कोशिश ना करें। लोगों को गुमराह करने की कोशिश ना करें। तथ्यों के आधार पर बात करें। जो पॉलिसी आपने बनाई थी उस पॉलिसी के अंतर्गत अलॉटमेंट हुई है जो उस पॉलिसी के अंतर्गत आप....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः ठीक है बैठ, बैठ जाइए आप। DUSIB ने ही बनाई थी। DUSIB ....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः एक ही, एक ही पॉलिसी है, दिल्ली की दो पॉलिसी नहीं है। दो पॉलिसी नहीं है। मैं.....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः 280 है, 280 में जवाब नहीं होते, 280 में जवाब नहीं होते। बैठिए आप, बैठिए, आप बैठिए। मैं उनको स्थिति स्पष्ट कर रहा हूं।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य मनोज कुमार शौकीन।

....व्यवधान......

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः अध्यक्ष जी,....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः नहीं नहीं, 280 पर रिप्लाई नहीं होता। एक मिनट बैठिए ना आप, एक मिनट बैठिए, एक मिनट बैठिए। मैं आपको मौका दूंगा।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः मैं टाइम बचेगा, मैं आपको मौका दूंगा। मैं सभी माननीय सदस्यों को यह स्पष्ट कर दूं कि जो स्लम रिहैबिलिटेशन पॉलिसी है वो डूसिब बनाता है। दिल्ली में एक ही स्लम रिहैबिलिटेशन पॉलिसी है उसको डीडीए भी फॉलो करता है, उसको डूसिब भी फॉलो करेगा, उसको जो भी एजेंसी उसके अकॉर्डिंग रिहैबिलिटेशन प्रोग्राम में भाग लेगी वो उसी को फॉलो करेगी, एक बात। दो पॉलिसी नहीं है। इस पॉलिसी में जो कट–ऑफ डेट है वो 1 जनवरी, 2015 है, 2015 तक जो लोग वहां पर रह रहे हैं उन सबको घर दिया जा रहा है। ये इनकी स्वयं की बनाई हुई पालिसी है,

....व्यवधान.......

माननीय अध्यक्षः एक मिनट, लेकिन यहां पर गुमराह करने के लिए सदन को कोई भी वक्तव्य दिया जाना सही नहीं है। अब मैं, अभी इसपे चर्चा कराएंगे हम। हम देंगे, हम जवाब दिलवाएंगे सरकार से। अभी आज नहीं इसका, इसका समय तय करेंगे हम।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः मनोज कुमार शौकीन जी।

....व्यवधान......

श्री मनोज कुमार शौकीनः आदरणीय अध्यक्ष जी,....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः बैठिए। झूठ, झूठ नहीं फैलाने दूंगा मैं सदन में। कोई गुमराह करेगा सदन को, झूठ बोलेगा, अफवाह फैलाएगा, ये यहां नहीं होने दूंगा मैं। चलिए।

.....व्यवधान......

श्री मनोज कुमार शौकीनः आदरणीय अध्यक्ष जी, हम सब के लिए सौभाग्य की बात है कि जो, जो सदन जिसके अंदर आज हम चर्चा कर रहे हैं कि 1912 में....

....व्यवधान......

मानीनय मंत्री (श्री आशीष सूद): अध्यक्ष जी, माननीय सदस्य को बड़ी चिंता है परिवहन मंत्री की फोटो नहीं है मगर ये भूल गए कि इन्होंने, इनके नेता जो फोटो लगाए रखते थे और क्रांति की बातें करते थे, रवि नेगी यहां मौजूद है, इसलिए फोटो के चक्कर में ज्यादा ना पड़े।

....व्यवधान......

मानीनय अध्यक्षः मनोज शौकीन जी।

....व्यवधान.......

मानीनय अध्यक्षः मनोज शौकीन जी, आप बात जारी रखिए।

....व्यवधान......

श्री मनोज कुमार शौकीनः आदरणीय अध्यक्ष जी,....

....व्यवधान......

मानीनय अध्यक्षः मनोज शौकीन जी।

....व्यवधान......

मानीनय अध्यक्षः बैठिए। अनिल जी बैठिए। हां जी, शुरू करिए।

....व्यवधान......

श्री मनोज कुमार शौकीनः आदरणीय अध्यक्ष जी, ...

....व्यवधान......

मानीनय अध्यक्षः मनोज शौकीन जी। मनोज जी शुरू करें।

....व्यवधान.......

श्री मनोज कुमार शौकीनः आदरणीय अध्यक्ष जी,...

....व्यवधान......

मानीनय अध्यक्षः मैं माननीय विपक्ष के सदस्यों से अनुरोध करूंगा सदन का समय खराब ना करें, 280 में सभी सदस्यों को अपनी बात कहने का हक है, उनको बोलने दिया, मनोज जी।

.....व्यवधान......

श्री मनोज कुमार शौकीनः आदरणीय अध्यक्ष जी,...

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः हां, मेरे माध्यम से बात करिए। चलिए। जो भी सदस्य बात करेगा वो चेयर से संबोधित करके बात करेगा। अगर सीधी बात करेगा तो अनुशासनहीनता मानी जाएगी। शांति रखिए। चलिए बताइए, बोलिए जी।चलिए, शुरू करिए।

श्री मनोज शौकीनः ये बड़े दुख की बात है कि ऐसे लोग।

माननीय अध्यक्षः चलिए।

श्री मनोज शौकीनः बेशर्म हैं, जो बदतमीज हैं। अरे भईया आप तो चुप हो जाओ।

...व्यवधान.....

श्री मनोज शौकीनः अध्यक्ष जी। माननीय अध्यक्ष जी या तो इनको बाहर निकालो, मैं ऐसे नहीं बोल सकता।

माननीय अध्यक्षः मैं अनिल जी आपको आज चेतावनी दे रहा हूं आप चर्चा को आगे बढ़ने दीजिए। देखिए सदन में बातचीत होती है तो अच्छा लगता है, शोरगुल में ना आपको फ़ायदा है ना सत्तारूढ दल को फ़ायदा है। चलिए शुरू करिये।

श्री मनोज शौकीनः आदरणीय अध्यक्ष जी, आज का यह दिन मैं समझता हूं एक ऐतिहासिक दिन है। हम लोग जब चुनकर के आए तो बड़े मुद्दे थे। एक भ्रष्टाचार का था, तो दूसरी तरफ लोगों को राशन नहीं मिल रहा था और राशन की दुकानें नईं भी नहीं खुली थी और पुराने को भी नहीं मिल रहा था और नया राशनकार्ड भी कोई नहीं बना था और भ्रष्टाचार के मुद्दे पर जिस तरह से कैग की रिपोर्ट आई और खुलासे होंगे। लेकिन आज इस सदन के बाद जब मैं बाहर गया वो एरिया देख के आया जिसको फांसी घर बताया गया, बनाया गया। जैसा आपने जैसे यहां पर बताया ठीक वही पोजिशन है वहां पे सर।

...व्यवधान.....

माननीय अध्यक्षः कोई नहीं आप, अभी कल बात करेंगे। अभी। एक मिनट आप मनोज जी। मेरा आपसे अनुरोध है अपने विषय पर बोलिए और मैं सदन के सभी सदस्यों को आमंत्रित करता हूं, ये दोनों स्थिति स्वयं देखकर सदन में 4 बजे के बाद जब ब्रेक होगा जरूर देखें और फिर बात करेंगे बाद में।

श्री मनोज शौकीनः अध्यक्ष जी दिल्ली की जनता का पैसा है और ऐसे लुटाया।

माननीय अध्यक्षः नहीं आप विषय पर बात करिये ना। 280 में आपका विषय है, राशन की दुकानें। राशन की दुकानों पर बोलिए।

...व्यवधान.....

श्री मनोज शौकीनः अध्यक्ष जी मैं आ रहा हूं वहां पे, अध्यक्ष जी आज ऐसे नहीं बैठूंगा मैं ये सब बदतमीजी करते हैं मैं किसी के बीच में नहीं बोलता, किसी के बीच में बोलता हूं बता दो।

माननीय अध्यक्षः एक मिनट। उनको फांसीघर से थोड़ी दिक्कत हो गई है क्योंकि उसमें उनके पास डिफेंस में कुछ कहने को नहीं है, इसलिए वो मैं देख लूंगा। वो मैं देख लूंगा आप विषय पर आइये।

...व्यवधान.....

माननीय अध्यक्षः हां बिल्कुल। फांसीघर की बात नहीं होगी ना आज ठीक है। कल आप बताएंगी उसके बारे में चर्चा, पूरी डिटेल लेकर आएंगी आप। चलिए आप शुरू करिये। कल सारी डिटेल लेकर आइएगा। चलिए।

श्री मनोज शौकीनः माननीय अध्यक्ष जी। एक मंत्री को मैं भी घर बैठा के आया हूं.। अध्यक्ष जी, खाद्य के विषय पर मैंने 280 लगाया है और दिल्ली के अंदर जो मेरा मूल प्रश्न है। राशनकार्ड बने नहीं पिछले दस बारह साल से और मैंने जानकारी चाहिए है कि वर्ष 2015 से 2025 तक के बीच में कितनी राशन की दुकानों के लाइसेंस रद्द किए गए, निलंबित या समाप्त की गई। इसका पूरा जिले अनुसार मैंने विवरण मांगा है, पूरी दिल्ली का ताकि हमें पता लग सके की दुकान कितनी होने चाहिए थी राशन कार्डधारक कितने हैं, कितने बनाने की आवश्यकता है आगे हमने उसके ऊपर कदम भी लेने चाहिएं। माननीय अध्यक्ष जी उपरोक्त अवधि में समाप्त की गई दुकानों के स्थान पर क्या नई राशन की दुकानें लाइसेंस देकर के खोली गई? इसका भी जिला अनुसार विवरण चाहिए।

माननीय अध्यक्षः ये माननीय सदस्य मैं सभी को कहूं, 280 में प्रश्नकाल नहीं है ये हम अपना वक्तव्य रखेंगे पद्य के रूप में सीधा–सीधा अपनी बात कहेंगे बस।

श्री मनोज शौकीनः चलो ठीक है अध्यक्ष जी। अध्यक्ष जी ये भी रख देता हूं। ये जो मैंने उसी का हिस्सा है ये मैं पार्ट में बता रहा हूं आप बेसक पढ़ते जाओ मेरे साथ साथ।

माननीय अध्यक्षः नहीं कोई नहीं आप बोलिए अपनी बात कहिए।

श्री मनोज शौकीनः तो अध्यक्ष जी मैं चाहता हूं क्या हमारी कोई नई पोलिसी इस प्रकार की बनी है और बनी है तो अच्छी बात है नहीं तो इसके ऊपर काम करने की आवश्यकता है ताकि पिछले 10 साल से लगातार इस विषय को हम जनता के बीच में उठाते रहे हैं कि नए राशनकार्ड बनेंगे, बनाएंगे। ना नई कोई नई दुकान खुली जो पुरानी चीज़ बंद हो गई है और उसका उचित जो उनको अच्छा भोजन दिया जा सके राशन दिया जा सके क्या इसके ऊपर हम कोई अच्छा कोई आगे काम कर रहे हैं नहीं करें तो करने की आवश्यकता है इस पर ध्यान दिया जाए धन्यवाद अध्यक्ष जी। बाकी फांसीघर वाला सब देखकर आएंगे एक बार।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्यगण आज हमारे दर्शक दीर्घा में पूर्व विधायक श्री नितिन त्यागी जी यहां उपस्थित हैं, कार्यवाही देखने के लिए आए हैं, हम उनका स्वागत करते हैं। माननीय सदस्य श्री वीर सिंह धिंगान जी। आज वीर सिंह जी का जन्मदिन भी है, वह तो हमने बधाई दे ही दी थी।

श्री वीर सिंह धिंगानः इसलिए ये महीना जो है क्रांति का है, मैं क्रांतिकारी के बारे में कहने जा रहा हूं। आदरणीय अध्यक्ष जी मैं आपके मध्यम से सदन का ध्यान देश की महान स्वतंत्रता सेनानी वीरांगना झलकारी बाई कोली की ओर दिलाना चाहता हूं। अध्यक्ष जी वीरांगना झलकारी बाई ने झांसी की रानी की विशेष सहयोगी बनकर देश के लिए आज़ादी की लड़ाई लड़ी और अंग्रेजों से लोहा लिया। अध्यक्ष जी झलकारी बाई का नाम हमारे सर ये दिक्कत है इसमें। हालांकि देश के कई प्रांतों में जैसे उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, हरियाणा, राजस्थान सहित कई स्थानों पर वीरांगना झलकारी बाई का जन्म दिवस 22 नवम्बर को मनाया जाता है तथा अध्यक्ष जी इन राज्यों में वीरांगना झलकारी बाई की प्रतिमा भी कई स्थानों पर लगाई गई है। किंतु खेद है राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में वीरांगना बाई झलकारी बाई कोली की कोई प्रतिमा नहीं है। हालांकि केंद्र सरकार ने वीरांगना झलकारी बाई कोली के नाम पर 4 रुपए का टिकट भी एक जारी किया 2001 में और वीरांगना झलकारी बाई कोली के नाम पर झांसी में एक संग्रहालय भी बनाया गया तथा हाल ही में उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री जी ने जून 25 में वीरांगना झलकारीबाई कोहली के नाम पर पीएसी बटालियन का गठन भी किया है, किंतु वीरांगना झलकारी बाई कोली का नाम अति

विशिष्ट व्यक्तियों की सूची में नहीं है। अध्यक्ष जी दलित समाज की बेटी जिसने झांसी की रानी का भेष बदलकर अंग्रेज़ों को कई बार धोखा दिया और इस देश के लिए अपने प्राण न्योछावर किए इस समाज की बेटी का नाम, अति विशिष्ट व्यक्तियों की सूची में शामिल किया जाए। मेरा यह भी आपसे अनुरोध है कि जिस तरह से अति विशिष्ट व्यक्तियों के यहां पर प्रतिमा लगाई है दिल्ली विधानसभा के प्रांगण में दलित की बेटी जिसने देश के लिए लड़ाई लड़ी स्वतंत्रता सेनानी वीरांगना झलकारीबाई की प्रतिमा भी दिल्ली विधानसभा में लगाई जाए। अध्यक्ष जी बहुत बड़ा इतिहास है वीरांगना झलकारीबाई का लेकिन मैं आपके कानून को मान के चलता हूं कि आपने कहा जो लिखा है वही आपको पढ़ने की अनुमति है। मैं दस्तावेज़ भी आपके यहां सदन के पटल पर रखना चाहता था लेकिन पेपर लैस विधानसभा है इसलिए कोई पेपर लेके नहीं आया। मैं कल आपके नाम से एक पत्र लिख करके और मैं ज़रूर आपसे ये अनुरोध करूंगा, कि क्योंकि सदन और ये प्रांगण आपके अधीनस्थ चलता है इसलिए मेरी आपसे करबद्ध प्रार्थना रहेगी कि जिस तरह से आपने और महानुभावों की यहां प्रतिमा लगायी हैं उस तरह से हमारी समाज की दलित की बेटी झलकारीबाई जी ने देश के लिए अपने प्राण न्योछावर किये, देश के लिए लड़ाई लड़ी और यहां तक कि झांसी की रानी का भेष बदलकर जब अंग्रेजो के कैम्प पे गई तो वहां उससे पूछा उन्होंने समझा कि झलकारी बाई की जगह झांसी की रानी यहां पर आई है और पूछा कि आप क्या चाहती हो, उसे झलकारी बाई ने कहा था कि मुझे फांसी दो। तो इस तरह की जो हिम्मत रखने वाली हमारी बहन बेटी थी उसकी प्रतिमा भी उनका जो संघर्ष था उसने जो संघर्ष किया देश के लिए उसको भी ध्यान में रखा जाए और उनकी प्रतिमा लगाने की मैं सिफारिश करता हूं। और इतना ही नहीं दिल्ली के दो सांसदों ने अध्यक्ष जी दो सांसदों ने और यहां पक्ष विपक्ष के 22 सदस्यों ने इसका अनुमोदन भी किया है समर्थन दिया अपना। इसलिए मैं समझता हूं कि ये मुद्दा एक ऐसा ज़रूरी है जिस पर सदन को इस पर ध्यान करना चाहिए और मुझे आप पर पूरा विश्वास है कि आप महान स्वतंत्रता सेनानी झलकारी बाई कोहली की प्रतिमा यहां लगवाएंगे और उन्हें अति विशिष्ट व्यक्तियों की सूची में शामिल करवाने के लिए

करवाई करेंगे आपने बोलने का अवसर दिया इसके लिए आपका बहुत बहुत धन्यवाद जय हिंद।

......व्यवधान.......

माननीय अध्यक्ष : हां, मैं एक बार यह पूरा हो जाए ऐसा है, मैं आपको बुलवाउंगा माननीय सदस्य कुलदीप सोलंकी जी। ये एक वो आयेंगे ना। ऐसा है कि एक तो जो डॉक्यूमेंट की बात कह रहे हैं आप इसमें डॉक्यूमेंट डाल सकते हैं सभी सदस्यों को वह दिखेंगे। अगर आपको इसमें कोई सहयोग चाहिए तो हमारा नेवा का जो सहायता केंद्र है वह आपकी पूरी पूरी मदद करेगा और ट्रेनिंग भी देगा तो आपको कोई भी डॉक्यूमेंट अगर रखना है सदन में तो वह हम यहां पर अपने इस सिस्टम से ला सकते हैं। माननीय सदस्य श्री कुलदीप सोलंकी जी।

श्री कुलदीप सोलंकी : माननीय अध्यक्ष जी मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान, मंत्री श्री कपिल मिश्रा जी को एक बार धन्यवाद भी करता हूं कि पालम गांव में एक पशुपालन विभाग का एक हॉस्पिटल बहुत लंबे समय से था और पिछली सरकारों ने उसकी ऐसी हालात कर रखी थी कि उनकी छतों पर भी पेड़ जमे हुए थे तो उसके लिए उन्होंने एक बजट दिया अच्छा अमांउट दिया उसको रिपेयरिंग का कम शुरू हो गया है। आपके माध्यम से मैं उनका धन्यवाद भी करता हूं। इसमें अध्यक्ष जी पिछले वर्षो में करीबन पिछले वर्ष 27,000 से ऊपर छोटे बड़े पशुओं का इलाज हुआ है। जिसमें पच्चीस हज़ार छोटे जैसे कुत्ता, बिल्ली, पक्षी और पंद्रह सौ से दो हज़ार लार्जेस्ट एनिमल जैसे गाय, भैंस उनका इलाज हुआ है, लेकिन उस हॉस्पिटल में दवाओं की बहुत कमी रहती है। जिसकी वजह से वहां कैमिस्ट की जो दुकानें हैं वहां एक भ्रष्टाचार का एक प्लैटफोर्म सा बन गया है। तो मैं डिपार्टमेंट से चाहूंगा आपके माध्यम से कि वहां पर प्रोपर दवाइयां हों, जो पक्षियों का, जानवरों का प्रोपर ट्रीटमेंट इलाज हो सके। इसके लिए विभाग करें कि भई बाहर से दवाइयां ना खरीदनी पड़ें। इतना निवेदन है आपसे, कि भई इसके ऊपर विशेष ध्यान दिया जाए, धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्य श्री रविकांत जी। यह दस पूरे हो चुके हैं मैं जो पांच और आए हुए हैं समय है हमारे पास थोड़ा इसलिए हम उसको ले रहे हैं।

श्री रवि कान्त : आदरणीय अध्यक्ष जी आपने मुझे 280 के तहत बोलने का अवसर दिया उसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद। मैं आपके माध्यम से हमारे माननीय मंत्री जी प्रवेश वर्मा जी का ध्यान अपने विधानसभा त्रिलोकपुरी की और आकर्षित करना चाहता हूं। पापियों के जो पाप थे जो लंबे समय से दिल्ली के अंदर हमें देखने को मिल रहे थे। हमारे यहां एक बड़ा सीवर लाइन की समस्या पिछले दो महीने में बढ़ती जा रही है। वो पहले एक चांद सिनेमा के सामने एक गड्ढा हुआ, उसके बाद अभी बिल्कुल चांद सिनेमा चंदा कैसेट के बाहर शनिवार देर रात को लगभग ग्यारह बजे के आसपास वो गड्ढे ने एक बड़ा रूप ले लिया। उसके कारण जो हमारी एनपीसी की लाइन है सीवर की 1800 एमएम की लाइन, वो मेन लाइन है जो 40 वर्षों से यह बदली नहीं गई है 12 साल आपदा सरकार वहां पर रही, उससे पहले कांग्रेस की भी सरकार रही, लेकिन सरकारों ने उसे तरफ ध्यान नहीं दिया। जो पहले से सिस्टम चला आ रहा है वो लाइन चलती रही। मेरा यह निवेदन है कि इसे तुरंत रिहैबिलिटेशन के माध्यम से इसे मेन ट्रंक लाइन को बदला जाए, जिसमें जो हमारी ट्रंचलैस एक स्कीम है ट्रंचलैस के माध्यम से इसको अगर हम रिहैबिलिटेशन करते हैं तो लगभग 15 से 20 साल में वह सीवरेज सिस्टम ऐसा बन जाएगा जिससे की हमारी पूरी त्रिलोकपुरी विधानसभा ही नहीं पूरे दिल्ली भर में जो ये हाल है उससे हम लोगों को निजात भी मिलेगी। उससे गड्ढा तो भरेगा ही भरेगा जो समस्या हैं वो तो खत्म होगीं ही होंगी, लेकिन समय की भी बचत होगी, खर्चे से भी बचत होगी और जो ट्रैफिक है क्योंकि जब गड्ढा हो जाता है तो लगभग महीना डेढ़ महीना दो महीना उस काम को करने में लगता है तो ट्रैफिक से भी जो लोगों को परेशानी होती है उससे भी निजात मिलेगी। साथ–साथ जो मैंने सीईओ जल बोर्ड को भी ये आग्रह किया था की जो पहले समय से जो बड़ी–बड़ी मशीनें जो दी गई थी डिग्गी की मशीनें और और सारी मशीनें उनकी हालात इतनी खराब है की वहां पर लोग जब जाते हैं तो उनसे अनाप–शनाप तरीके की बातें और पैसे मांगे जाते हैं ये पहले से सिस्टम इनका बना हुआ है तो उसे पर भी ध्यान दें की लोगों से पैसों की डिमांड ना की जाए और पुरानी गाड़ियां आए दिन आए दिन ब्रेक डाउन होती रहती हैं तो मेरा निवेदन है इस और भी ध्यान दिया जाए जिससे की सीवरेज सिस्टम दिल्ली का बहुत अच्छा सुरक्षित और स्वस्थ दिल्ली दिखे उस पर हमें ध्यान देना चाहिए और बड़ी लाइन जो हमारी

पानी की है पानी के लीकेज आज पूरी दिल्ली में जगह–जगह दिखते जा रहे हैं क्योंकि लोड की कैपेसिटी बढ़ती जा रही है तो मेरा निवेदन माननीय मंत्री जी से है की आपने बजट हम सबको आवंटित तो किया ही है लेकिन साथ–साथ रिहेब्लिटेशन दिल्ली के अंदर किया जाए जिससे कि दिल्ली की सिवरेज सिस्टम और पानी की समस्या से हम सबको निजात मिल सके आपने मुझे अवसर दिया बोलने के लिए उसके लिए बहुत बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री संजय गोयल जी।

श्री संजय गोयलः माननीय अध्यक्ष जी आपका बहुत बहुत धन्यवाद। आज मुझे 280 के तहत बोलने का अवसर प्रदान करने के लिए मैं आपका ध्यान एक अत्यंत गंभीर और मानवीय विषय की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। दिल्ली आरोग्य कोष के तहत आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग ईडब्ल्यूएस और डार्क के इलाज करने की श्रेणी के मरीज़ों की सहायता देने का प्रावधान है। परंतु इस योजना की प्रक्रिया अत्यंत जटिल समयलेवा और व्यवहार में कठिन है, विशेषकर उन मामलों में जहां आपातकालीन चिकित्सा की आवश्यकता होती है। जब तक डार्क की प्रक्रिया पूरी होती है और फाइलें पास होती है तब तक मरीज़ का इलाज शुरू नहीं हो पाता। कई बार फाइल पास होने में महीनों का समय लग जाता है। हार्ट अटैक।

....व्यवधान......

श्री संजय गोयलः नहीं–नहीं अभी बता रहे, मैम अभी बता रहे, अभी बता रहे, आप चिंता मत करिए, अभी बता रहे, अभी बता रहे, पास हुए हैं, लेकिन समय लग रहा है, मैम अभी बता रहे हैं, अभी बता रहे हैं अभी।

....व्यवधान......

श्री संजय गोयलः अभी सुनिए ना, अभी सुनिए, मैम अभी तो अभी, अभी तो स्टार्ट किया है अभी। heart attack क्योंकि अक्सर क्योंकि मेरी विधानसभा के कई मरीज़ों को इसका बेनिफिट मिला, मेरे विधानसभा में विधायक बनने के बाद में, लेकिन वो प्रक्रिया इतनी जटिल है कि महीनों का समय लग जाता है, अभी ये व्यवस्था बंद नहीं हुई

है लेकिन मेरा एक सुझाव है कि जैसे ही पेशेंट है, मान लीजिए ब्रेनस्ट्रोक है या आपके हार्ट अटैक है या कोई गंभीर समस्या है, उसके डार्क की फाइल वहां से क्लीयर होने के इंतज़ार में पेशेंट का इलाज नहीं हो पाता, उसका उसी समय एम. एस. को अधिकार होना चाहिए कि वह उसका इलाज करें और बाद में उसकी फाइल को आगे भेजा जाए और साथ में ईडब्ल्यूएस कोटे के अंतर्गत जो प्राइवेट हॉस्पिटल हैं जहां 10 परसेंट पेशेंट को इन्डोर एडमीशन लिया जाता है उनको लेने की हमेशा उनके बैड्स हमेशा भरे रहते हैं। जब भी उन्हें पता किया जाए तो वहां यह स्थिति होती है कि बैड खाली नहीं है। तो मेरा आपके माध्यम से स्वास्थ्य मंत्री जी से निवेदन है इस प्रक्रिया में विशेष ध्यान देते हुए जो ईडब्ल्यूएस कैटेगरी के हमारे मरीज़ हैं और या आपके डार्क के अंतर्गत इलाज में जो प्राप्त सुविधायें सरकार की तरफ से दी जा रही है उनका समयबद्ध तरीके से इसका पालन किया जाए धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्रीमती शिखा राय जी(अनुपस्थित), माननीय सदस्य श्री कुलवन्त राणा जी।

श्री कुलवन्त राणाः अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद। अध्यक्ष महोदय हमारा एक हॉस्पिटल है बाबा अम्बेडकर साहब हॉस्पिटल, उसमें जो उसकी स्थिति के बारे में मैं विशेष उल्लेख के तहत आप सबको अवगत कराऊंगा की वहां पर जो हॉस्पिटल है उसके अंदर जो सिविल रखरखाव के लिए पीडब्ल्यूडी को काम दिया जाता है उसके लिए आठ से नौ करोड़ का प्रावधान है प्रति वर्ष सुरक्षा के ऊपर भी इसी प्रकार से प्राइवेट सैक्टर को सुरक्षा का जिमा दिया जाता है उसके ऊपर भी आठ नौ करोड़ रूपये खर्च होता है प्रति वर्ष। इसी प्रकार से हॉर्टिकल्चर का अलग मद है और जो सिविल वाले हैं सड़कें टूटी हुई पड़ी हैं नौ करोड़ रूपये पूरी वर्ष में कहां खर्च होता है अंदर टाइलें टूटी पड़ी हैं, शौचालय खराब स्थिति में हैं और हार्टिकल्चर की दृष्टि से तो कभी शायद पिछले पांच साल दस साल जो काम ही नहीं हुआ। जगह–जगह मेनहोल के ढक्कन पड़े हैं कहीं स्लैब पड़ा है। विजिट किया वहां पर कोई एक्सईन मौजूद है उसके बड़े में आदेश भी हुआ की इसको ट्रांसफर किया जाये वो काम करके खुश नहीं है तो अस्पताल की स्थिति अच्छी नहीं है इस प्रकार से डॉक्टरों की भी कमी है और जो अर्दली है वो भी इसी प्रकार से लिए जाते नर्सिंग अर्दली वो भी कॉन्ट्रैक्ट

बेस पर लिये जाते हैं कम्पनी देती है वो अर्दली जो बच्चा–बच्चा केंद्र में किसी का बच्चा पैदा तो 1100, 11000 ऐसे वसूल करते हैं सिक्योरिटी वाले क्या करते हैं जो ओपीडी में पेशेंट आता है तो पेशेंट जब भीड़ ज़्यादा होती है तो उनसे भी पैसे वसूल करके मैं तुझे प्राथमिकता के आधार पर डॉक्टर से परामर्श कर देता हूं, कुल मिलकर के भ्रष्टाचार का अड्डा बना हुआ है वो पूरा अस्पताल और दैनिक जीवन में जो दवाइयां भी चाहिए थी वो दवाइयां भी नहीं मिलती। तो स्थिति अच्छी नहीं है लेकिन ये मैं नहीं कहूंगा कि ये सरकार ज़िम्मेदार है, पूर्ववर्ती सरकार इन कारणों की जिम्मेदार है, ये कारण उनके पैदा किए हुए हैं, जवाबदेह नहीं है वो सिस्टम। इतना पैसा खर्च करने के बाद भी समस्या क्यों और वो डॉक्टर्स को सुरक्षा देने के लिए है, पेशेंट की सहुलियत के लिए है और वह क्या करते हैं अध्यक्ष जी, कम्पनियां जो एपोइन्मेंट्स हैं जिसका सुरक्षाकर्मी का या नर्सिंग अर्दली का वो कम्पनियां अर्दली और सुरक्षाकर्मी लगाने के लिए पैसे वसूल करती हैं 25,000 हज़ार 30,000 जैसे पूर्व सदस्य ने भी एक बार प्रकाश में बात डाली थी और वो लोगों के ऐसे एपोइन्मेंट्स होते हैं तो यहां लगाएंगे तो इतने पैसे कमा लेगा, यहां लगाएंगे तुझे इतने पैसे कमा लेगा। तो hospital उपचार के लिए कम और भ्रष्टाचार के लिए ज़्यादा काम कर रहे हैं, ऐसी व्यवस्था को कैसे हम कंट्रोल करेंगे इस पर एक योजना बननी चाहिए ताकि एक गरीब आदमी को अच्छे से उपचार मिले और सारी व्यवस्थाएं जिन–जिन विभागों की ज़िम्मेदारी है, ठीक ढंग से इसका निर्वाह करते हुए hospital सुचारू से चले ये बात मैं आपके समक्ष रखी है इसमें आगे मंत्री जी से मैं चाहूंगा अगर इस पर संज्ञान लें और क्या अगर योजना बना रहे हैं और hospital बेहतर करने के लिए क्या कदम उठा रहे हैं अगर ऐसा वक्तव्य मंत्री जी दे दें तो अच्छा रहेगा धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री अभय कुमार वर्मा जी।

श्री अभय वर्मा(चीफ व्हिप): धन्यवाद अध्यक्ष जी कि मैं अपने लक्ष्मी नगर विधानसभा क्षेत्र के मंडावली में एक डिस्पेंसरी हुआ करता था उसके बारे में स्वास्थ्य मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। कोविड के दौरान जब लोग बहुत परेशान थे उसी बीच में पिछली सरकार ने यह निर्णय लिया कि इस डिस्पेंसरी को तोड़ के पॉली क्लिनिक

बनाएंगे। अध्यक्ष जी, मुझे नहीं पता था कि मेरे साथ यह सौतेला व्यवहार दिखाते हुए डिस्पेंसरी को तोड़ा गया, उस डिस्पेंसरी को तीन जगहों पर मेरी विधानसभा क्षेत्र से दो–दो, तीन–तीन किलोमीटर शिफ्‌ट किया गया और मंडावली मेरा एक बहुत ही डेंस पापुलेटेड एरिया है और वहां निम्न वर्ग के लोग रहते हैं। वह काफी परेशान होते रहे। पूरे तीन साल मैंने कई बार इस हाउस में इस विषय को उठाया, लेकिन पिछली सरकार ने मेरे पर कोई भी ध्यान नहीं दिया और यह डिस्पेंसरी वैसे ही जर्जर बंद पड़ी हुई है। अब मैंने मंत्री जी के माध्यम से प्रयास किया है, तो पता चला कि यह फाइलें विभागों में इधर से उधर भटकाया जा रहा था और इस फाइल को रोका गया। खैर, अब तो सरकार हमारी है, तो मैं मंत्री जी से आग्रह करता हूं, मैं आग्रह करता हूं कि जल्द से जल्द इसका निर्माण शुरू कराया जाए क्योंकि टाइम तो लगता ही है। जिस प्रकार से पिछली सरकार ने फाइलों को उलझाया था, उसको ठीक करने में समय लगता है इसलिए कुलदीप जी परेशान मत होइए। मैं तो बस माननीय मंत्री जी को आग्रह कर रहा हूं कि यह जल्दी से हो जाए। बिल्कुल, बात भी हो रही है लेकिन कई बार हाउस के माध्यम से कहने से जनता भी सुनती है और जनता को भी पता चले इसलिए जल्द से जल्द इस पॉलिक्लिनिक के निर्माण का कार्य शुरू कराया जाए और साथ में जन आरोग्य मंदिर, जो माननीय मुख्यमंत्री जी के माध्यम से लगातार शुरू हो रहे हैं, उस पॉलिक्लिनिक में जन आरोग्य मंदिर का भी प्रावधान रखा जाए।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्रीमती शिखा रॉय जी, उनके बाद आपको दूंगा मौका बस, पर आपको एक मिनट में ही अपनी बात कहनी होगी।

श्रीमती शिखा रॉयः धन्यवाद अध्यक्ष जी, अध्यक्ष जी मेरे यहां पर चिराग दिल्ली जो वार्ड मेरे क्षेत्र में आता है उसकी वॉटर सप्लाई प्राइवेटाइज है मालवीय नगर वॉटर सप्लाई सिस्टम उसको बोलते हैं जी जो 3–4 और विधानसभाओं में 5–6 में और जाता है पर मेरे यहां पर एक वार्ड में उसकी सप्लाई रहती है। उसमें सीधा जलबोर्ड का हस्तक्षेप नहीं रहता है लेकिन फिर भी जल बोर्ड का एक प्रोजेक्ट डिपार्टमेंट है जो इस प्राइवेटाइज्ड वॉटर सप्लाई को देखता है। नहीं वो, जो भी मालवीय नगर वॉटर सप्लाई सिस्टम को दे रखा है। ये शीला दीक्षित जी के समय से ये शुरु हुआ था

2012–13 में। अध्यक्ष जी, मुझे थोड़ा सा ये बताते हुए ये हो रहा है कि उस सप्लाई को करते समय कुछ ना कुछ ऐसी अभी कोताहियां की गई हैं कि धीरे–धीरे पानी की सप्लाई उस क्षेत्र में कम होती जा रही है। जब पानी की सप्लाई पीछे से पता चलता है तो वो उतनी एमजीडी आती है जितना के पहले भी उस क्षेत्र में आ रही थी। कभी कभी बहुत गहन गर्मियों में सप्लाई थोड़ी कम रहती है लेकिन आजकल के मौसम में 45 आनी थी तो कभी 44.6 तक भी आती है या 44 आती है। लेकिन मुझे मालूम नहीं है कि किन कारणों से उस एरिया में धीरे–धीरे सप्लाई जो है वो टेलएंड पर आते हुए घरों पर क्यों कम होती जा रही है? शायद उसका कारण एक यह हो सकता है कि शुरू के घरों में बहुत ज़्यादा जो है कनेक्शंस दिए जा रहे हैं जो कि मुझे बताया गया है कि कभी–कभी एक घर में 40 कनेक्शन भी हैं। अब ये पिछली सरकार के समय में किस तरह से ऐसा कनेक्शंस का वितरण हुआ कि इस गर्मी में यानी पिछले साल की गर्मियों में भी पता चला कि एक–एक घर में 40–40 कनेक्शन दिए गए, एक बिल्डिंग में मतलब। जिसके कारण से आते हुए पीछे से पर्याप्त पानी की सप्लाई जो है वो ठीक से आखिर तक के घर में नहीं हो पा रही। मेरा अध्यक्ष जी आपके माध्यम से निवेदन है मंत्री जी से कि इस सप्लाई की जो दुर्दशा हो रही है उसके ऊपर ध्यान करके जो हमारे प्रोजेक्ट के अधिकारी इसके ऊपर लगाए गए हैं, वो इसकी चिंता करें और मेरे यहां पर चिराग दिल्ली, खिड़की एक्सटेंशन, पंचशील विहार जैसे क्षेत्रों में जो पानी होते हुए भी पानी की सप्लाई नहीं हो पा रही है उस पर ध्यान दिया जाए। धन्यवाद अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री तरविंदर सिंह मारवाह जी, संक्षिप्त में अपनी बात कहेंगे।

श्री तरविंदर सिंह मारवाः अध्यक्ष जी, अभी मेरा नाम लिया गया बारापुला की झुग्गियों के लिए। मैं बताना चाहता हूं विपक्ष की लीडर को कि वह झुग्गियां हमने नहीं तुड़वाई। इनके जो वहां पर कैंडिडेट थे, मैं नाम नहीं लेता, उन गरीब आदमियों को पांच सौ वोटों के लिए उनको कोर्ट में ले गए डबल बैंच में। डबल बैंच ने फैसला दिया कि ये झुग्गियां हटनी चाहिए। मैं रेखा गुप्ता जी, मुख्यमंत्री का धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने 190 मकान डूसिब ने उनको अलॉटमेंट की है। दूसरी बात, मैं कहना चाहता हूं अध्यक्ष जी दूसरी बात शायद मेरी विपक्ष।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः आपको मौका मिला था न अब उनको बोलने दो।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः 2015 से पहले के जो वहां थे उनको सबको मिल गया आतिशी जी।

माननीय अध्यक्षः आप तरविंदर जी अपनी बात मुझ से करिए आप।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः और दूसरी बात मैं कहना चाहता हूं अखबार नहीं पढ़ते। मैं मुख्यमंत्री जी का पूरे तहे दिल से स्वागत करता हूं, धन्यवाद करता हूं कि उन गरीब आदमियों के लिए उन्होंने खुलके सबको लैटर भेजा है। रेलवे को लैटर भेजा है, डीडीए को लैटर भेजा है। दिल्ली सरकार के अधीन कितनी झुग्गियां आती थी उनको लैटर भेजे कि आज के बाद कोई झुग्गी नहीं टूटेगी ये हमें रेखा गुप्ता ने कहा है और साथ में यह भी कहा है, उनको जो बात कह रहे हैं न हमारी फोटुएं लगी हुई हैं, पक्का लगी हुई हैं वो रेखा गुप्ता जी हमारी मुख्यमंत्री ने साबित कर दिया है कि उनको पहले पुनर्वास करूंगी फिर हटने दूंगी और चाहे कोर्ट में भी जो केस चल रहे हैं वहां पर भी हमारे वकील खड़े होकर उन गरीब आदमियों की वकालत करेंगे।

माननीय अध्यक्षः चलिए धन्यवाद–धन्यवाद। सदन की कार्यवाही साढ़े चार बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

सदन पुनः अपराह्न 4:29 बजे समवेत हुआ
माननीय अध्यक्ष (श्री विजेन्द्र गुप्ता) पीठासीन हुए।

माननीय अध्यक्षः ध्यान आकर्षण नियम 54 के अंतर्गत श्री मोहन सिंह बिष्ट, माननीय उपाध्यक्ष मुस्तफाबाद विधानसभा क्षेत्र में शिव विहार तिराहे के पास स्थित जर्जर अस्पताल के पुनर्निर्माण की आवश्यकता के संबंध स्वास्थ्य मंत्री जी का ध्यान आकर्षित करेंगे।

ध्यानाकर्षण नियम 54

श्री मोहन सिंह बिष्ट (माननीय उपाध्यक्ष) : आदरणीय अध्यक्ष जी, आपने रूल 54 के तहत मुझे एक ध्यानाकर्षण प्रस्ताव पर बोलने का मौका दिया इसके लिए मैं आपका आभार प्रकट करता हूं, धन्यवाद करता हूं। अध्यक्ष महोदय, मैं जिस विधानसभा से चुन करके आया हूं बहुत लंबे समय तक वहां पर एक ऐसी पार्टी की सरकार थी, जिन्होंने गरीबों के हित में जो गरीबों के लिए जो हॉस्पिटल था सर वहां उस हॉस्पिटल को खंडहर के रूप में तब्दील करवा दिया। सर मुझे अच्छी तरह याद है कि मुस्तफाबाद विधानसभा एसी 69 में शिव विहार के पास अस्पताल की जो दुर्भाग्य से वर्ष 2020 के अंतर्गत दंगों की भेंट वो अस्पताल चढ़ गया था और वह अस्पताल आज दिन तक खंडहर के रूप में है। अध्यक्ष महोदय मैं आपके माध्यम से, आदरणीय स्वास्थ्य मंत्री से मेरा इतना निवेदन है कि पांच छह लाख वाली आबादी और वहां अस्पताल भवन का निर्माण किया जाए और जब मैंने पिछले दिनों के अंतर्गत इस बात को इस सदन के अंदर रखा। अध्यक्ष महोदय समय थोड़ा नहीं होता है, लेकिन समय की अपनी एक सीमा होती है। हम जब पढ़ते थे, तो यह हमने ज़रूर सुना था, ''दिवस न जात ना लागहूं वारा'', समय को जाने के लिए कोई वार या उसकी आवश्यकता नहीं होती है लेकिन अध्यक्ष महोदय यह पांच साल का पीरियड है और पांच साल के अंतराल में अब हमको चुने हुए पांच महीने हो गए। मैं जब इस विधानसभा में एक ऐसी विधानसभा से चुन करके आया हूं, जिसका नाम मुस्तफाबाद तो है, लेकिन शिव के आशीर्वाद से वहां मैं जीत करके उस विधानसभा से आया हूं, ये ही रिकार्ड हमने वहां दर्ज किया है। अध्यक्ष महोदय, मेरी विधानसभा के अंतर्गत स्वास्थ्य की समस्या की ओर मैं अपने माननीय मंत्री जी का ध्यान दिलाना चाहता हूं। मंत्री जी, यह विधानसभा वास्तव में पांच और छह लाख से ऊपर की आबादी है। इतनी आबादी होने के बाद वहां पर हॉस्पिटल नाम की कोई चीज़ नहीं है और हॉस्पिटल नाम की जब कोई चीज़ नहीं है तो वहां के लोगों को बहुत दूर जाना होता है और कई बार तो सर वहां होता क्या है, वहां की रोड़ों की ऐसी स्थिति है, जब ambulance आती है, तो बीच में ही जब ambulance में रहते हैं, उनकी जीवनलीला समाप्त हो जाती है। अध्यक्ष महोदय शिव विहार तिराहे पर जो डिस्पेंसरी हॉस्पिटल की जगह कितना बड़ा दुर्भाग्य उस क्षेत्र का 'आप' पार्टी का वहां से विधायक हो सरकार वहां हॉस्पिटल नहीं बना सकती

हो और सर क्या किया इन्होंने 2008 और 2010 में सर इन्होंने वहां पर हॉस्पिटल की जगह पर डिस्पेंसरी एक मोहल्ला क्लिनिक के नाम से वहां के लोगों के हाथ में झुंझुना पकड़ा दिया.... कांग्रेस की भी सरकार हो या किसी की सरकार हो लेकिन वहां की स्थिति के बारे में और सुन लो भैया तुम्हारा और मेरा साझा है गोकुलपुरी और मुस्तफाबाद, मैं तो करावल नगर से चुनाव जीतता था करावल नगर से जीत के आया हूं लेकिन 2025 के अंतराल में मैंने मुस्तफाबाद से भी चुनाव जीता। अध्यक्ष महोदय 2015 में..

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्षः आप साइलेंट रहिए।

श्री मोहन सिंह बिष्टः सर मेरी आपसे करबद्ध प्रार्थना है, ये न arrogant party से जीत करके यहां आए है। इनका काम सिर्फ रह गया इस विधानसभा को डिस्टर्ब करना। लेकिन मैं आपसे एक निवेदन करना चाहता हूं कि इस हाउस को निश्चित रूप से आप आर्डर में लाएंगे, तो हमें अपनी बात रखने का मौका।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः अनिल जी।

श्री मोहन सिंह बिष्टः अरे मेरी पार्टी मुझे चौकीदार भी बना दे मुझे वो भी स्वीकार है मैं उस पार्टी का सदस्य हूं। मुझे पद की कोई लालसा नहीं है और सुनो मेरी पार्टी का नेता रेखा गुप्ता हैं। हम उनके सम्मान में चाहे हमें कहीं भी जाना पड़े और ये ही नहीं इस विधानसभा के स्पीकर हमारे विजेंद्र गुप्ता हैं, उनके आदेश पर हम चलने वाले हैं, ये हम आपको ......

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्ष : चलिए, धन्यवाद। आप आप शुरू करिए।

श्री मोहन सिंह बिष्ट : सर, मैं आपसे एक निवेदन करना चाहता हूं सर, 2015 में,

....व्यवधान......

श्री मोहन सिंह बिष्ट : अध्यक्ष महोदय, उत्तरांचल का अपमान नहीं सम्मान हुआ। तुम्हारी पार्टी में तो तुम्हें विपक्ष के लीडर के बराबर भी नहीं समझा। मेरी पार्टी ने कम से

कम मुझे डिप्टी लीडर बनाने का तो सौभाग्य प्राप्त हुआ है। ये मेरी पार्टी है। अध्यक्ष महोदय।

.....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः अनिल जी प्लीज। देखिए अभी बहुत सारे विषय हैं।

माननीया मुख्य मंत्री : अध्यक्ष जी ये माननीय सदस्य कुछ ज्यादा ही डिस्टर्ब कर रहे हैं। पूरे हाउस को डिस्टर्ब कर रहे हैं आप। आप पूरे हाउस को लगातार डिस्टर्ब कर रहे हैं। ये विधान सभा है, कोई नौटंकी नहीं है। लगातार ही कर रहे हैं। शर्म आनी चाहिए ऐसे माननीय विधायक को। सब अपना समय निकाल के डिस्कशन के लिए आए हैं। सुबह से डिस्टर्ब कर रहे हैं वो।

श्री मोहन सिंह बिष्ट : अध्यक्ष जी, एक बार इनको ये समझा दूं। सर मैं एक बात बताउ आपको....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः मुझे मालूम नहीं था मुख्यमंत्री जी इतना .....

श्री मोहन सिंह बिष्ट :यदि सत्ता पक्ष के केबिनेट का कोई भी मंत्री प्रस्ताव ले आ जाए, तो आपको सदन से बाहर जाने के लिए मजबूर, तीन चार दिन के लिए भी सस्पेंड कर सकते हैं,

....व्यवधान......

श्री मोहन सिंह बिष्ट : नहीं, तुम करो डिस्टर्ब, अभी प्रस्ताव लाते हैं हम। तुम्हें बताएंगे हम नियम और कानून क्या होता है। ये हम सब। मुझे किधर बात करनी मेरी लिए.... नहीं मैं धमकी नहीं दे रहा हूं, तुम्हें सिखा रहा हूं मैं।

माननीय अध्यक्षः नहीं–नहीं, ये नियम बता रहे हैं।

श्री मोहन सिंह बिष्टः मैं आपको सिखा रहा हूं आतिशी जी।

माननीय अध्यक्षः ये नियम बता रहे हैं। नियम बता रहे हैं।

श्री मोहन सिंह बिष्टः मैं आतिशी जी आपको सिखा रहा हूं। अध्यक्ष महोदय, अध्यक्ष महोदय,

माननीय अध्यक्षः अब आप एक मिनट में अपनी बात पूरी कर लीजिए। एक मिनट में।

श्री मोहन सिंह बिष्टः सर, सर। सर, एक मिनट में कैसे हो जायेगा ये।

माननीय अध्यक्षः आपने तो ध्यान आकर्षित करना है ना।

श्री मोहन सिंह बिष्टः सर, मैं ध्यानाकर्षण पर ही बोल रहा हूं।

माननीय अध्यक्षः तो अब तो रिप्लाई करवायेंगे ना मंत्री जी से आपका।

श्री मोहन सिंह बिष्टः और मैं विषय से हट कर नहीं बोलूंगा।

माननीय अध्यक्ष : नहीं नहीं विषय पर बोलिए।

श्री मोहन सिंह बिष्टः अध्यक्ष महोदय 2015 में, जिस प्रकार आम आदमी की पार्टी आती है, दिल्ली के लोगों को मूर्ख बनाकर के जो हॉस्पिटल बने थे, वहां पर उनको मोहल्ला क्लिनिक में तब्दील करके वहां क्लिनिक बना दिया और क्लिनिक ज़रूर खोला, लेकिन वह आज दिन तक चालू नहीं हुआ। अध्यक्ष महोदय, मेरे विधानसभा क्षेत्र में जिस प्रकार की अस्पतालों की स्थिति है, सर इन्होंने क्या किया जो वहां मोहल्ला क्लिनिक बना रखी थी उसको अपने कार्यकर्ता को लाभ पहुंचाने के लिए मुस्तफाबाद के अंतर्गत, एक मकान पर बना दिया। सरकार के पैसे का आपने दुरुपयोग किया सिर्फ अपने कार्यकर्ताओं को लाभ पहुंचाने के लिए, ये काम किया। सर ये जीता जागता उदाहरण यदि आप देखेंगे तो मुस्तफाबाद के अंदर है सर वहां की इतनी बड़ी आबादी जहां 50—60 कॉलोनियां हों, जहां गरीब तबके के लोग रहते हों, जहां अनऑथराइज बस्तियां हों वहां हॉस्पिटल ना होने की वजह से, इस प्रकार की स्थिति बनी है। अध्यक्ष महोदय मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से एक निवेदन करना चाहता हूं जिस हॉस्पिटल के बारे में आपके माध्यम से उस पर कार्रवाई चल गई उसके लिए तो मैं आपका आभारी हूं। यह बिल्डिंग तुरंत से तुरंत बन जाए और जिससे कि वहां के लोगों को स्वास्थ्य का लाभ मिल सके, यही मैं कहना चाहता हूं। आपने मुझे बोलने का समय और मंत्री जी से निवेदन करता हूं कि इसका जवाब देने की कृपा करें। बहुत बहुत धन्यवाद। नमस्कार।

माननीय अध्यक्ष : माननीय मंत्री डॉक्टर पंकज सिंह जी।

माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री (डॉ. पंकज सिंह) : आदरणीय हमारी पार्टी के और बहुत सीनियर लीडर और डिप्टी स्पीकर साहब ने जो उस क्षेत्र के बारे में वेदना बताई है और वहां के स्वास्थ्य की, हॉस्पिटल की हालत जो बताई है मैं इस सदन को विश्वास दिलाता हूं, मैं क्योंकि अभी इसका पूरा जवाब

नहीं दे पाऊंगा। इस सदन को विश्वास दिलाता हूं कि इसके ऊपर उचित कार्रवाई होगी और इसका कार्रवाई करने से पहले सारा ज्ञान, सारी चीज़ें, सारी जानकारियां हम अपने माननीय विधायक जी को डिप्टी स्पीकर साहब को दे देंगे।

माननीय अध्यक्ष : माननीय मंत्री जी, मेरा यह अनुरोध है कि इस संबंध में एक मीटिंग बुलाकर. ...

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्ष : और हां जी, उसमें आप माननीय उपाध्यक्ष जी को भी बुलाएं और आवश्यकता पड़े तो फिर मौके पर भी एक बार जाना पड़े। तो लेकिन अगर आप प्रयास करेंगे तो वास्तविकता में....

....व्यवधान......

माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री : अध्यक्ष जी, यह काम अगले हफ्ते में ही माननीय विधायक जी के साथ जाके इस काम को पूरा स्टार्ट करवाया जाएगा। अधिकारियों के साथ जो भी उचित काम करना होगा, उसे किया जाएगा।

माननीय अध्यक्ष : अब मान्य सदस्यगण Business Advisory Committee के दूसरे प्रतिवेदन से सदन सहमत है, यह प्रस्ताव जो है माननीय उपाध्यक्ष श्री मोहन सिंह बिष्ट जी के माध्यम से आएगा। कमेटी का प्रतिवेदन, आइटम नंबर 4।

श्री मोहन सिंह बिष्ट (माननीय उपाध्यक्ष) : आदरणीय अध्यक्ष जी, हम प्रस्ताव करेंगे कि इस सदन की चार अगस्त की 2025 के प्रस्तुत कार्यमंत्रणा समिति के दूसरे प्रतिवेदन से हम सब लोग सहमत हैं। ऐसा मैं सदन से अपेक्षा करता हूं कि वह इस प्रस्ताव के समर्थन में निश्चित रूप से सरकार के पक्ष में खड़े हों और धन्यवाद करें। यह प्रस्ताव सदन के सामने है।

माननीय अध्यक्ष : हां, कोई नहीं, आप बोल दो।

...व्यवधान...

माननीय अध्यक्ष : चलिए। यह प्रस्ताव सदन के सामने है,

जो इसके पक्ष में है वो हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें,

(सदस्यों के हाँ कहने पर)

हाँ पक्ष जीता, हाँ पक्ष जीता,

प्रस्ताव पारित हुआ।

अब सदन के समक्ष जो विषय यहां पर कल चर्चा में था एजुकेशन बिल, उस पर हम चर्चा को आगे जारी करेंगे और मैं शुरुआत करना चाहता हूं। माननीय सदस्य,

.....व्यवधान.......

माननीय अध्यक्षः हां हां।

सुश्री आतिशी (माननीय नेता प्रतिपक्ष) : एलओबी भी आता है हमें उससे क्लियर नहीं होता कि क्योंकि अगर आज का आप एलओबी देखिए तो उसमें सीएजी रिपोर्ट्स पर चर्चा पहले दी हुई है।

माननीय अध्यक्ष : हां तो वह अभी....

....व्यवधान......

सुश्री आतिशी : मैं बस यह कह रही हूं....

माननीय अध्यक्ष : मैं आज नहीं कर रहा हूं।

सुश्री आतिशी : क्योंकि रिवाइज्ड एलओबी भी कई बार आता है तो सेशन शुरू होने से पहले एक्चुअली उस दिन किस आर्डर में डिस्कशन होने वाली है....

माननीय अध्यक्ष : नहीं नहीं एक मिनट आर्डर वही है उसको हम पोस्टपोन कर रहे हैं क्योंकि मुझे लगता है बिल पर आज चर्चा करना इसलिए ज़रूरी है कि वह एक

कॉन्टीनुएशन में चल रहा है और अब यह हम कल भी करा सकते हैं तो इसलिए जो आइटम नंबर....

....व्यवधान......

सुश्री आतिशी : मैं आपके निर्णय से सहमत हूं मैं बस यह कह रही हूं यह सूचना अगर हमें हाउस शुरू होने से पहले मिल जाए कि एक्चुअली....

माननीय अध्यक्ष : यह तो चेयर डिसाइड करेगा ना हाउस चलने के बाद, शुरू होने के बाद।

सुश्री आतिशी :मैं चेयर से रिक्वेस्ट कर रही हूं....

माननीय अध्यक्ष : समय की, समय की....

....व्यवधान......

सुश्री आतिशी :कि आप हमें इन्फोर्म कर दिया करिए सेशन शुरू होने से पहले।

माननीय अध्यक्ष : ऐसा है कि जैसा समय के हिसाब से व्यवस्था बनती है, वह हम कर रहे हैं। इसलिए अब जो विषय हम लेना चाह रहे हैं, वो है एजुकेशन बिल और उस पर हम चर्चा शुरू कर रहे हैं और चर्चा को शुरू करेंगे। हमारे जो सतीश उपाध्याय जी हैं, अब इस बिल को मैं एक बार फोर्मल रूप से भी पढ़ देता हूं। अब श्री आशीष सूद, माननीय शिक्षा मंत्री ने जो प्रस्ताव किया था, उस प्रस्ताव पर जो इंट्रोड्यूस यहां पर हुआ था, उस पर चर्चा को आगे बढ़ाएंगे श्री सतीश उपाध्याय।

दिल्ली विद्‌यालय शिक्षा विधेयक,2025 पर चर्चा

श्री सतीश उपाध्याय : धन्यवाद अध्यक्ष जी माननीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में हमारे दिल्ली के शिक्षा मंत्री आशीष सूद जी ने ये जो एक क्रांतिकारी कदम दिल्ली की शिक्षा नीति के लिए उठाया है। मैं उनको ह्रदय की गहराइयों से बधाई देना चाहता हूं। माननीय अध्यक्ष जी यह खाली विधेयक नहीं है, यह दिल्ली की शिक्षा नीति में एक क्रांतिकारी कदम है, जो पहले अंधेरे में थी और यह सुनिश्चित करने का संकल्प भी है कि दिल्ली में शिक्षा व्यापार ना बने, दिल्ली

में शिक्षा यहां के छात्रों का मौलिक अधिकार बने। मैं इस सदन के पवित्र मंच से दिल्ली विद्यालय शिक्षा शुल्क निर्धारण एवं विनिमय पारदर्शिता विधेयक 2025 पर बोलने का अवसर पाकर अपने को सौभाग्यशाली समझता हूं। यह विधेयक दिल्ली के लाखों अभिभावकों की वर्षों पुरानी पीड़ा का उत्तर है। उनके मन में जिस प्रकार की पीड़ांए थी पिछली सरकार ने शिक्षा के संदर्भ में बातें तो बहुत बड़ी बड़ी की, एडवरटाइजमेंट तो बहुत ज़्यादा दिए, लेकिन धरातल पर अध्यक्ष जी कुछ हुआ नहीं और यह निर्णायक कदम हमारे दिल्ली के बच्चों के भविष्य को भी उनके उज्जवल भविष्य को भी तय करेगा। हम सब इस बात से अवगत हैं कि किताबें, स्कूल फंड, बिल्डिंग फंड, स्मार्ट क्लास, ट्रांस्पोर्ट फीस हर मोर्चे पर पिछली सरकार के समय मनमानी वसूली होती रही। अभिभावकों की जेब खाली होती रही, अभिभावक लगातार शिकायत करते रहे, आरटीआई डालते रहे, मगर कोई स्थाई समाधान इस शिक्षा के संदर्भ में पिछली सरकार ने नहीं निकाला। दिल्ली की पुरानी सरकार की व्यवस्था दिल्ली स्कूल एजुकेशन एक्ट 1973 और उसके तहत बनी रूल्स की, रूल्स इतने कमज़ोर थे कि निजी स्कूलों ने उनके संरक्षण में, सरकार के संरक्षण में, ठेंगा दिखाकर के ना कोई पारदर्शिता थी, ना कोई जवाबदेही थी। ऐसे में इस विधेयक को हम कह सकते हैं यह दिल्ली की जन आकांक्षाओं का उत्तर है। शिक्षा में पारदर्शिता, जवाबदेही और न्याय दिलाने का यह विधेयक हमारे सम्मुख है। विधेयक की जो मुख्य जो विशेषताएं हैं, स्कूल स्तर पर निर्धारण समिति का गठन एक पारदर्शी कदम है, हर स्कूल में एक समिति बनेगी जिसमें स्कूल प्रबंधन के साथ साथ अभिभावकों को भी शामिल किया जाएगा। यानी अभिभावक अपनी सरकार बना सकते हैं, अब अभिभावक मूक दर्शक नहीं होंगे, अभिभावकों की भागीदारी होगी और अभिभावक तय करेंगे कि कमरे में बैठकर के अब फीस नहीं बढ़ाई जा सकती, अब लोगों को अभिभावकों को उसका जवाब देना पड़ेगा। इसका अध्यक्ष कोई शिक्षक भी नहीं होगा, इसका अध्यक्ष जो होगा वो जो छात्र के जो परेंट्स हैं उनका प्रतिनिधि इसमें होगा और इसमें समय सीमा भी तय की गई है कि 15 अगस्त तक आपको इस समिति का गठन करना पड़ेगा। जो आर्थिक रूप से एक अराजकता थी, कि हर साल

अभिभावक को लगता था कि अब जुलाई अगस्त आएगा और फीस बढ़ने का क्रम आ जाएगा। अब उनको तीन साल तक इसके लिए किसी प्रकार का इंतज़ार और आर्थिक क्षेत्र में भी स्थायित्व उनकी पॉकेट में जितना पैसा है उसके हिसाब से भी उस बजट को वो बना सकते होंगे और इसके बाद अगर आपको इसमें कोई अगर समिति इसमें कोई फीस बढ़ाती है तो जिला शुल्क अपीलीय समिति डिस्ट्रिक्ट फी अपीलेट कमेटी यदि स्कूल समिति की बात ना माने या विवाद हो तो अभिभावक जिला लेवल कमेटी में शिकायत कर सकते हैं। इस समिति में डायरेक्टर, एजुकेशन के अधिकारी, अकाउंट्स ऑफिसर और पेरेंट्स रिप्रजेंटेटिव भी इस कमेटी में होंगे। और इसके बाद भी अगर आपको सैटिस्फैक्शन नहीं होता है मैं बधाई देना चाहता हूं शिक्षा मंत्री को उन्होंने 3 लेयर कमेटी हर प्रकार की माइक्रो डिटेलिंग इस बिल के अंदर की है। अगर आप एक जगह से सेटिस्फाइड नहीं है तो आप दूसरी जगह जा सकते हैं, अगर दूसरी जगह सेटिस्फाइड नहीं है तो तीसरी जगह जा सकते हैं और मैं कह सकता हूं कि पारदर्शिता की पराकाष्ठा इस बिल में हमारे शिक्षा मंत्री द्वारा की गई है। यदि मामला डिस्ट्रिक्ट स्तर पर भी ना हो तो अंतिम अपील रिवीजन कमेटी में जा सकते हैं। इसमें शिक्षा के क्षेत्र के विशेषज्ञ जो इन चीज़ों को माइक्रो डिटेलिंग कर सकते हैं, शिक्षकों के प्रतिनिधि और अभिभावक शामिल होंगे। इसकी अनुशंसा तीन वर्षों तक जैसा मैंने कहा वह बाध्यकारी होगी, तीन वर्षों तक वह दोबारा से फीस को नहीं बढ़ा सकते हैं। पारदर्शिता और उत्तरदायित्व का कानूनी ढांचा होगा यह। किस प्रकार की पारदर्शिता है हर स्कूल को सालाना ऑडिट फिनांशियल स्टेटमेंट देना पड़ेगा, अभिभावकों के सामने अब जिस प्रकार से साल भर जो खर्चा करते हैं, पहले चोर रास्ते से जाकर के जिस प्रकार से अभिभावकों की जेब काटी जाती थी, अब वह संभव नहीं होगा। बिना मंजूरी के एक भी शुल्क नहीं लिया जाएग, स्कूल को यह स्पष्ट बताना पड़ेगा कि किस मद में और किस किस मद में कितना कितना पैसा आप पेरेंट्स से ले रहे हैं ये उनको बताना पड़ेगा और अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो मैं दोबारा मुख्यमंत्री जी को बधाई देना चाहता हूं कि आपने उसके लिए दंडात्मक प्रावधान भी किया है और अगर ऐसा आप

नहीं करेंगे तो आपको एक लाख से लेकर के पांच लाख तक का जुर्माना स्कूल की कमेटी को, स्कूल के मैनेजमेंट को देना पड़ेगा और इतना ही नहीं, इतना ही नहीं, आप ज़रूर ताली बजाएंगे इस विधेयक के लिए, यह दिल्ली के लिए आशा की किरण है, दिल्ली के छात्रों के लिए भविष्य को रौशनी दिखाने वाला है और अगर इस पर भी नहीं मानेंगे तो बार बार उल्लंघन करने पर स्कूल की मान्यता भी रद्द कर दी जाएगी। ये विधेयक आपको इस प्रकार से आगे लेकर के जाता है। बच्चों के हितों की सुरक्षा होगी, कोई भी स्कूल फीस के अभाव में बच्चों को परीक्षा देने से नहीं रोक सकता। आपको ध्यान होगा कभी कभी बच्चों के साथ ऐसा होता था जब वो फीस नहीं दे पाते थे, उनके आत्मसम्मान को, उनके स्वाभिमान को क्लास में खड़ा होकर के उनको कह दिया जाता था आप क्लास से बाहर चले जाइए, आप परीक्षा नहीं दे सकते, आप स्कूल में आ नहीं सकते, आपको डीबार कर दिया जाएगा, लेकिन मैं बधाई देना चाहता हूं शिक्षा मंत्री को कि आपने इसके लिए भी अगर ऐसा कुछ होगा तो ये क्रिमिनल आफेंस होगा, उस चीज पर आपको दंड दिया जाएगा। अब आप देखिए कि वो सरकार ने आप सरकार ने क्या किया था मैं इस अवसर पर ये कहना चाहता हूं कि यदि ये विधेयक पहले लाया गया होता तो दिल्ली के अभिभावकों की आंखें आँसुओं से ना भारी होती। यह तो अगर 11 साल में हुआ होता तो वे अभिभावक रो नहीं रहे होते। उनकी आंखों में आंसू हैं, माताओं ने अपने ज़ेवर गिरवी रखे हैं, पेरेंट्स ने पार्ट टाईम काम किया है और अंधेरे में सारा पैसा लोगों का लूट लिया गया, यह आपके समय आपके समय में हुआ और आप इसके लिए ज़िम्मेदार हो करोड़ों रुपए आपने एडवरटाईजिंग पर लगाये, कोई फीस की समिति गठित नहीं हुई। कमरों पर भ्रष्टाचार हुआ, मैंने देखा था शिक्षा मंत्री जी एक बार किसी स्विमिंग पूल का निरीक्षण करने के लिए गए थे, टाइलें बज रही थी उसमें, टाइलें बज रही थी उसमें, ये इस तरीके से जैसे लूट की गई हर जगह सब जगह लूटा गया और वो ठेके भी किनको दिए गए, ये भी एक लंबी कहानी है। कैसे कैसे लोगों को ठेके दिए पूल बनाने के लिए। हो सकता है पता चला कि कोई ड्राईवर था, कोई घर का खाना बनाने वाला था, ऐसे तरीके का भ्रष्टाचार इस पिछली

सरकार ने किया है। खैर मैं इसमें जाना नहीं चाहता हूं भ्रष्टाचार से तो पूरी सरकार डूबी हुई थी, ना कोई फीस पर नियंत्रण नीति बनी, ना स्कूल की मान्यता रद्द हुई, केवल प्रेस कांफ्रेंस और विज्ञापन चलाए गए। शिक्षा को एक पालिटिकल मार्किटिंग का टूल बनाया, जैसे मार्किटिंग करते हैं ना उस तरह का टूल इन्होंने शिक्षा को बना दिया, शिक्षा का पूरा व्यवसायीकरण कर दिया, मंच पर तालियाँ बटोरने के अलावा और ज़मीन पर हकीकत केवल बड़ा बड़ा शून्य ही दिखाई दिया और अभिभावकों को निराशा हुई। भाजपा सरकार की ये दूरदर्शी पहल है, भारतीय जनता पार्टी की सरकार केवल बातें नहीं करती वो काम करती है, काम में विश्वास करती है। आदरणीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में शिक्षा नीति जो इन्होंने बनाई है वो राष्ट्र का स्तंभ है और छात्र उसकी नींव हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस बात का प्रमाण है जो पढ़ाई के बोझ से नहीं, उनके विकास से, उनके सर्वांगीण विकास से जोड़ती है। दिल्ली की माननीय मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी के नेतृत्व में ये विधेयक केवल एक कानूनी दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि ये दिल्ली के लिए सामाजिक क्रांति का प्रतीक है, सामाजिक क्रांति का प्रतीक है और आप देखिएगा इससे कितना लाभ होगा। यह विधेयक अगर दूसरे शब्दों में मैं कहूं तो गवर्नेंस की प्रतिबद्धताओं को दर्शाता है, गवर्नेंस की प्रतिबद्धता को दर्शाता है, सशक्त प्रशासन, संवेदनशील निर्णय, सशक्त प्रशासन, संवेदनशील निर्णय और हर छात्र अभिभावक और नागरिक की रक्षा ये इस बात को दिखाता है। मैं इस विधेयक के माध्यम से ये कहना चाहता हूं, ये विधेयक सिर्फ कानून नहीं, ये असंख्य मांओं के आंखों के आंसू हैं जो हर महीने फीस के लिए अपना ज़ेवर गिरवी रखती थी, उसमें उस पिता का संघर्ष है जो ओवरटाइम करके अपने बच्चे को बेहतर स्कूल भेजना चाहता था मगर प्रिंसिपल की एक चिट्ठी से, प्रिंसिपल की एक चिट्ठी से उसका सपना टूट जाता था। अब समय आ गया है कि हम शिक्षा को फिर से सेवा का माध्यम बनाएं, शोषण का माध्यम नहीं, जो पिछली सरकार ने इस शिक्षा के माध्यम से अभिभावकों का शोषण किया था। यह विधेयक दिल्ली के शिक्षा क्षेत्र को बाज़ारवाद से मुक्त कर जनहित आधारित व्यवस्था की ओर ले करके जाएगा, यह विधेयक हमारी सरकार की राजनैतिक,

यह विधेयक हमारी सरकार की राजनैतिक परिवर्तनकारी इच्छाशक्ति का प्रतीक है, यह विधायक हर मां बाप को भरोसा देता है कि उसका बच्चा सिर्फ ग्राहक नहीं केवल एक अच्छा छात्र कहलाएगा। आइए इस विधेयक को पूरे सदन की सहमति से पारित करें और इतिहास में दर्ज करें कि एक दिन आया था जब दिल्ली की विधानसभा ने मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में शिक्षा मंत्री जी के एक क्रांतिकारी कदम से हर बच्चे के भविष्य को सुरक्षित किया है और दिल्ली में एक नई सुनहरी अलख जगाई है। आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं ह्रदय से आपका आभार व्यक्त करता हूं और सबसे कहता हूं कि मेजें थपथपा करके भारी बहुमत से इस बिल को पास कराइएगा।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्यगण कल नेता विपक्ष का फोन भी आया था और उन्होंने संशोधन के लिए विषय रखा था। तो मैं उसको इसमें समावेश करते हुए एक बार मंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि वह विचार के लिए एक सदन में प्रस्ताव पेश करें। पहले विधेयक पर विचार करना उसका।

श्री आशीष सूद (माननीय शिक्षा मंत्री) : अध्यक्ष महोदय मैं प्रस्ताव करता हूं कि दिनांक 4 अगस्त 2025 को सदन में इंट्रोडयूसड दिल्ली विद्यालय शिक्षा शुल्क निर्धारण एवं विनियमन में पारदर्शिता विधेयक 2025 (वर्ष 2025 का विधेयक संख्या 03) पर विचार किया जाए।

माननीय अध्यक्षः यह प्रस्ताव सदन के सामने है

जो इसके पक्ष में है वो हाँ कहें,

जो इसके विरोध में हैं वे न कहें,

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता,

प्रस्ताव पारित हुआ।

अभी ये जो प्रस्ताव है फार कंसिडरेशन है।

माननीय नेता प्रतिपक्षः ये तो हमारा ही प्रस्ताव था...

माननीय अध्यक्षः नहीं नहीं अभी आप अपने वक्तव्य में कहना न मैं आपको बताता हूं एक मिनट आपकी बात का....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः नहीं नहीं, आप एक मिनट तो बैठिए ना एक मिनट तो बैठिए।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः अभी यह तो चर्चा में से निकलेगा ना, चर्चा में से निकलेगा, बिना चर्चा के थोड़ी ना जाता है।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः अभी आपने यह सूची दी है न आप विपक्ष के सदस्यों के बोलने के लिये। तो नहीं बुलवाउं इनको।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः हां तो बात तो करने दीजिये न आप आगे। सदन जो तय करेगा वो हो जायेगा।

माननीय नेता प्रतिपक्षः ये बिल्कुल सलेक्ट कमेटी के पास भेजा जाये।....

माननीय अध्यक्षः यह तो आप अपने वक्तव्य में कहिएगा ना, बैठिए बैठिए बैठिए।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः मैं,देखिए आतिशी जी बहुत....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः चर्चा के दौरान सदस्य अपने संशोधनों के संबंध में बताएंगे, विधेयक पर खंडवार विचार करने के दौरान इन संशोधनों पर विचार किया जाएगा, यह मैं स्पष्ट कर रहा हूं उनको। उनके अमेंडमेंट्स वेलकम है, उन पर विचार किया जाएगा। अभी सभी सदस्य चर्चा में भाग लेंगे जो बिल सदन के समक्ष है। अब मैं बुला रहा हूं....

....व्यवधान......

माननीय नेता प्रतिपक्षः सरकार इससे भाग क्यूं रही है...

माननीय अध्यक्षः चर्चा के बाद ही तो होगा। माननीय सदस्य अजय महावर जी, माननीय सदस्य अजय महावर जी, अजय महावर जी।

...व्यवधान.....

श्री अजय महावरः धन्यवाद अध्यक्ष जी, आपने दिल्ली के लिए.....

....व्यवधान......

श्री अजय महावरः दिल्ली के लिए जो फीस रेगुलेशन के लिए नया बिल माननीय शिक्षा मंत्री आदरणीय आशीष सूद जी ने इंट्रडयूस किया है मैं इसके पक्ष में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं।

...व्यवधान.....

माननीय अध्यक्षः चलिए, बोलिए।

.....व्यवधान.......

श्री अभय वर्मा (माननीय चीफ व्हिप): संजीव भाई इशारे पर काम मत करो। बैठ जाओ।

.....व्यवधान......

श्री अभय वर्माः अरे इशारे पर खड़े हो रहे हो, हाउस तो चलने दो। आप अपना विषय उठाना आपकी बारी आएगी तो।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः मेरा कहना है....

....व्यवधान......

श्री अजय महावरः अरे सुन लीजिए। सुनने का माद्दा नहीं है।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्यगण, स्थिति बड़ी स्पष्ट है कि चर्चा के बाद ही मोशन आएगा सिलेक्ट कमेटी का भी, अगर सदन उसको पारित करेगा तो और नहीं पारित करेगा तो, सदन के ऊपर है। मुझे समझ नहीं आ रहा विपक्ष चर्चा से क्यों डर रहा है? तथ्य सामने, अगर चर्चा में भाग लेने से आपको परहेज है तो बात अलग है। सदन का अर्थ है डिबेट, अगर आपको बिल में कोई कमी लग रही है तो आप अपनी बात कहिए ना पहले, उसी में से तो निष्कर्ष निकलेगा और अभी आप अमेंडमेंट के लिए, आपका अमेंडमेंट आमंत्रित है।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः चर्चा के बाद,

....व्यवधान......

सुश्री आतिशीः रूल....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः आप फिर बुक ले, आप वो खोलिए ना, वो उसमें निकालिए रूल बुक, रूल बुक निकालिए न, नियमावली। ये एक क्लिक पर नियमावली खुलती है। अब बताइये कौन सा रूल बता रहे हैं।

सुश्री आतिशीः 136,

माननीय अध्यक्षः 136, ये इसमें मैंने 136 फीड कर दिया, ये लो, आप भी ऐसे कर दीजिए।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः चलिए।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः अच्छा अब अजय महावर जी शुरू करिए।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः शुरू करिए, आप शुरू करिए।

....व्यवधान......

श्री अजय महावरः आदरणीय अध्यक्ष जी,....

....व्यवधान......

सुश्री आतिशीः क्यूं चर्चा से बच रहे हैं..

....व्यवधान......

श्री अजय महावरः आदरणीय अध्यक्ष जी। चर्चा से तो आप भाग रही हैं, चर्चा से आप भाग रहे हैं।

....व्यवधान......

श्री अजय महावरः सिलेक्ट कमेटी को बाद में दिया जा सकता है चर्चा के बाद। आदरणीय अध्यक्ष महोदय जी, मैं दिल्ली के शिक्षा मंत्री— आदरणीय आशीष सूद जी द्वारा इंट्रोडयूस इस फीस रेगुलेशन बिल जो इस सदन में है इसके समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः शुरू करिए।

....व्यवधान......

श्री अजय महावरः माननीय अध्यक्ष जी। आप क्या चेयर है क्या? आप अध्यक्ष पर, आप अध्यक्ष महोदय की...

....व्यवधान.....

श्री अजय महावरः तो आप अध्यक्ष महोदय की बात पर....

....व्यवधान......

श्री अजय महावरः तो वो देंगे न।

.....व्यवधान......

श्री अजय महावरः आप रूलिंग दोगे क्या? सदन को रूलिंग दोगे क्या आप?

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः पढ़िए।

....व्यवधान......

श्री अजय महावरः सदन को रूलिंग स्पीकर साहब देंगे।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः अभी अमेंडमेंट नहीं है इनके पास देने के लिए इसलिए ये ऐसा बोल रहे हैं।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः तो आप दीजिए न अमेंडमेंट। चलिए। 136 जो है....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः कोई नहीं, करिए डिस्कशन।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः अब बैठिए, बैठिए, बैठिए। आप कंटिन्यू करिए।

....व्यवधान......

सुश्री आतिशीः दूध का दूध, पानी का पानी हो जाएगा, सब दिल्लीवालों को पता चल जाएगा ....

.....व्यवधान......

श्री अजय महावरः माननीय अध्यक्ष महोदय....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः चलिए, शुरू करिए। बैठिए, बैठिए।

....व्यवधान......

श्री अजय महावरः माननीय अध्यक्ष महोदय, लगता है विपक्ष इस बिल से सदमे में है। मुझे लग रहा है विपक्ष इस बिल से सदमें में आ गया है और ये डिस्कसन में भाग लेना नहीं चाहता। आप चर्चा से भाग रहे हैं, आप चर्चा से भाग रहे हैं।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः आप ऐसा करिए ना आप अपना स्थान ले लीजिए। हमको, इसको डिस्कसन होने दीजिए। फिर जो भी आप प्रपोजल लाएंगे उस पर वोटिंग करा देंगे हम। अगर आप सिलेक्ट....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः नहीं—नहीं, आप फोर्स नहीं कर सकते ना, आप सदन को फोर्स नहीं कर सकते।

....व्यवधान......

सुश्री आतिशीः अध्यक्ष महोदय, रूल 136 ये कहता है या तो कंसीडरेशन का मोशन आयेगा या सिलेक्ट कमेटी में जाने का.....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः कंसीडरेशन का आया है ना, तो बस।

....व्यवधान......

सुश्री आतिशीः आप तो, सर आप पहले सिलेक्ट कमेटी के मोशन को होल्ड पर डाल दीजिए. ...

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः नहीं—नहीं,....

....व्यवधान......

सुश्री आतिशीः दिल्लीवालों के सामने.....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः अरे आप बैठिये न। क्यों डाल, जब आयेगा ही कंसीडरेशन का।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः जब मैंने कंसीडरेशन में डाल दिया, यह, मुझे यह नहीं समझ में आ रहा कि....

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः एक मिनट बैठ जाइए, आप भी बैठ जाइए, आप भी बैठ जाइए। कोई सदस्य मुझे ये समझाने की कोशिश करें कि बिना चर्चा के सिलेक्ट कमेटी में, चर्चा में से ही तो निकलेगा क्या करना है। कंसीडरेशन के लिए अलाउ किया है अब आप यहां पर बातचीत करिए, जो राय आप देंगे उसके अनुसार वोटिंग हो जाएगी। तो अब मेरे को ये नहीं समझ में आता की क्या कोई सदन ऐसा होता है जिसमें डिक्टेटरशिप चलती हो। ये डिक्टेटरशिप जो है ये यहां सदन में नहीं चल पाएगी।

सुश्री आतिशीः अध्यक्ष महोदय, ...

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः तो आप बात ही नहीं करने दे रहे, आपको चर्चा से भी एतराज है। बैठ जाइए अब आप। मैं चर्चा करवाऊंगा पहले। मेरा, मेरा मत है,

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः नहीं, मैं, ये चेयर की रूलिंग है हम कंसीडरेशन पर पहले जाएंगे, सिलेक्ट कमेटी में, उसी में से निकलेगी चर्चा में से बात। चलिए।

....व्यवधान......

श्री पंकज कुमार सिंह (माननीय मंत्री): वो चेयर से बात करें आपस में ही बात करने की जगह, एलओपी से भी रिक्वेस्ट है कि चेयर से बात करें तो ज्यादा अच्छा रहेगा।

सुश्री आतिशीः और अध्यक्ष जी मेरी रिक्वेस्ट है कि आपके विधायक तु–तड़ाक की भाषा इस्तेमाल ना करें,

....व्यवधान.......

माननीय अध्यक्षः वो नहीं होने देंगे हम। बैठिए।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः चलिए, शुरू करिए।

....व्यवधान......

माननीय अध्यक्षः अच्छा आपको सदन में बैठना है या नहीं बैठना, मैं आपकी मदद करूं क्या? आपको जाना तो नहीं है क्या सबको, मतलब मदद करूं क्या उसमें कुछ? चलिए शुरू करिए।

....व्यवधान......

श्री अजय महावरः आदरणीय अध्यक्ष जी, ये बात समझ में आ गई कि विपक्ष इस बिल से सकते में है, परेशान है और इसीलिए वो कुछ ना कुछ बहाना ढूंढ रहा है....

....व्यवधान......

श्री अजय महावरः देखिए आप, आप डिस्टर्ब मत करिए, आप एलओपी हैं,

....व्यवधान......

श्री अजय महावरः फिर हम भी करेंगे डिस्टर्ब फिर आपको। हम कह रहे हैं आप सकते में हैं और ये बात अध्यक्ष जी ने आपके प्रति उदारता क्या दिखाई, अध्यक्ष जी ने आपके प्रति उदारता क्या दिखाई, आप उसका फ़ायदा उठाने की चेष्टा कर रहे हैं। माननीय अध्यक्ष जी, आज अभी एक सदस्य कह रहे थे, विपक्ष के विधायक कि, एक विधायक अभी कह रहे थे कि हम तो अब भी रो रहे हैं, ठीक कहा इन्होंने, शराब और शिक्षा मंत्री का जो कॉकटेल था वो ऐसा हारा, ऐसा हारा, ऐसा हारा कि वो अब तक रो रहे हैं और, और आज, आज हम सिर्फ एक बिल पास नहीं कर रहे आज, आज हम उन

लाखों मां बाप के आंसुओं का जवाब दे रहे हैं, ये सिर्फ एक बिल नहीं है, ये लाखों मां बाप के आंखों के आंसू पोछने का काम माननीय रेखा गुप्ता जी की सरकार कर रही है, ये लाखों बच्चों के भविष्य का विषय है, जिनके बच्चे पिछली सरकार में नाकामी और लापरवाही के कारण शिक्षा से वंचित रह गए। पिछले दस वर्षों में क्या नहीं हुआ यह गिनना मुश्किल नहीं क्योंकि कुछ हुआ ही नहीं तो गिनना क्या। सरकारी स्कूल में पढ़ रहे लाखों बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ होता रहा।

मैं नॉर्थ ईस्ट डिस्ट्रिक्ट– दिल्ली से आता हूं। अध्यक्ष जी, नॉर्थ ईस्ट डिस्ट्रिक्ट में एक लाख बत्तीस हज़ार बच्चे हैं जो पढ़ रहे हैं स्कूलों में और अड़तालीस सरकारी स्कूल हैं बस। अब आप हिसाब लगाइए क्या दुर्गति इन लोगों ने करके रखी हुई थी। भेड़ बकरियों की तरह इन्होंने बच्चों को क्लास रूम में ठुस रखा था। मेरे यहां पिछले जब इनकी सरकार थी तब मैंने पांच बार यह विषय सदन में उठाया, भजनपुरा में थाना के सामने स्कूल था, जनकल्याण स्कूल, उस स्कूल में पोर्टा केबिन में पढ़ते रहें और आज तक वाले, डीडी न्यजू वाले गए, तब इन्होंने इसको उठा के एक दूसरे स्कूल में ट्रांसफर कर दिया, फिर तीसरे में ट्रांसफर कर दिया, उन बच्चों को किरायेदार की ज़िंदगी बना दी इन लोगों ने और यह किसी भी सभ्य समाज के लिए एक आपदा से कम नहीं है।

मुस्तफाबाद में एक बार गया मैं, जो अभी वर्तमान हमारे मोहन सिंह बिष्ट जी की विधान सभा है। मैंने दुनिया का एक अजूबा दृश्य देखा। एक क्लास में दो तरफ दो दीवार में अलग अलग बोर्ड लगा हुआ था, आधे बच्चों का मुंह इस तरफ, आधे बच्चों का मुंह उस तरफ, पार्टिशन भी नहीं था और बच्चे दोनों क्लास में पढ़ रहे हैं। क्या दुर्गति आपने करा दी जबकि शिक्षा के नाम पर आप पूरी दुनिया में ढोल पीटते रहे, सिर्फ विज्ञापन में स्कूल बनाते रहे और विज्ञापन में शिक्षा के नाम पर अपनी मार्केटिंग बेचते रहे। बच्चों को दो–दो घंटों के शिफ्ट में ट्रांस्फर कर दिया, अल्टरनेट डेज में ट्रांसफर कर दिया और फिर कहते हैं हम वर्ल्ड क्लास शिक्षा वाले हैं। ऐसी शिक्षा आप लोगों को दिल्लीवालों ने दी कि आपको अगले कई दशकों तक याद आएगी, अगले कई दशकों तक याद आएगी। हकीकत में गरीब और मध्यमवर्गीय परिवार का बच्चा प्राइवेट स्कूलों के गेट पर धक्के खाता था। एडिमिशन के नाम पर

शोषण, खुला शोषण, फीस के नाम पर लूट की छूट, खुली छूट और शिकायत करने पर बच्चों को टारगेट किया जाता था। मैं तो धन्यवाद देता हूँ, मंत्री जी, मैं देख रहा था 16 नम्बर पूवाइंट पर की अब किसी बच्चे को अगर टारगेट किया गया तो स्कूल को पचास हज़ार रूपया जुर्माना देना पड़ेगा per student per case के हिसाब से। माननीय अध्यक्ष महोदय. कोई भी, ये कोई isolated घटना नहीं थी, ये एक संस्थागत अन्याय चल रहा था जहां सरकार आंख बूंदें बैठी थी और प्राइवेट स्कूलों को खुली छूट मिली हुई थी। एक ही साल में तीन–तीन बार फीस बढ़ाई गई। अब तो मैं धन्यवाद दूंगा आदरणीय रेखा गुप्ता जी को और आदरणीय आशीष सूद जी को जिन्होंने इसमें तय कर दिया की फीस सिर्फ तीन साल में एक बार ही बढ़ाई जाएगी। ये दिल्ली के बच्चों के भविष्य के लिए एक अच्छा कदम है और मां बाप की जेब से पैसा निकाला गया किसी की कोई जवाबदेही नहीं। मां–बाप जब स्कूल प्रशासन से सवाल पूछते थे तो जवाब नहीं धमकी मिलती थी और आर्थिक शोषण सिर्फ नहीं था, ये मानसिक उत्पीड़न भी करते थे और सरकार उसमें अपनी सहभागिता कर रही थी। लेकिन आज का दिन ये शिक्षा क्रांति का बदलाव का प्रतीक का दिन है जो ये बिल हम सदन में लेकर के आए हैं। पुराना कानून, कोई कानून नहीं था। ये एक ऐसा कानून है जो न्याय को रेस्टोरेशन का काम करेगा और आप लोगों ने तो इससे भी ज़्यादा हद कर दी। मुझे याद है ये कोविड काल में,

(समय की घंटी)

श्री अजय महावरः क्योंकि शिक्षा मंत्री, अध्यक्ष जी दो तीन मिनट तो इसमें से फ़ालतू आ रहे हैं क्योंकि वह पहले इसमें एड्रेस हो गए इसलिए ज़्यादा आ रहे हैं।

माननीय अध्यक्षः नहीं, उनको मैंने काउंट कर लिया।

श्री अजय महावरः जी।

माननीय अध्यक्षः मतलब उनको डिलीट करके ही घंटी बजाई है।

श्री अजय महावरः शराब और शिक्षा का ऐसा कोकटेल था कि 'जय भीम मुख्यमंत्री प्रतिमा विकास योजना' में एक सौ पैंतालीस करोड़ दलित बच्चों का पैसा खा गए ये, फ़र्जी एडमिशन, फ़र्जी नाम से बिलिंग, दलित, गरीब, पिछड़े, वंचित लोगों की, ये आम आदमी पार्टी की सरकार ने दारु के ठेके घोटालों की तरह, जैसे पहले क्लासरूम

का घोटाला किया शिक्षा में इन्होंने। गरीब बच्चों के पैसे खा गए, पैंतीस पैंतीस लाख में क्लासरूम बन रहे थे इनके। इनको शर्म नहीं आई और अब तो एसीबी जांच कर रही है, अभी, अभी, अभी तो,....

....व्यवधान......

श्री अजय महावरः अरे छोड़िए, अरे छोड़िए, आपके मंत्री जेल गए थे, अभी दुबारा जेल जाने की तैयारी है और वो भी कितने असंवेदनशील थे आप। कोविडकाल में जब दुनिया सांसों से लड़ रही थी, तब आप दारू का भ्रष्टाचार कर रहे थे, दलित बच्चों के पैसों से, आप खिलवाड़ कर रहे थे, एक सौ पैंतालीस करोड़ का, शर्म नहीं आई आपको। इसीलिए दिल्ली की जनता ने आपको बाहर बैठाने का काम किया है। कोविड काल में भ्रष्टाचार करती आपकी सरकार कट्टर, भ्रष्ट और बेईमान सरकार थी और आप तो जिनका घड़ियाली आंसू बहाते हो ना, अम्बेडकर जी के नाम पर, बाबा साहब अम्बेडकर भी रो रहे होंगे कि कैसे ये घड़ियाली आसूं बहाने वाले लोग हमारे गरीब दलित बच्चों का पैसा खाने का काम भी और गुनाह भी कर रहे हैं।

(समय की घंटी)

श्री अजय महावरः अब मैं मंत्री जी को धन्यवाद करता हूं की फीस हर तीन साल में एक बार तय की जा सकेगी, वो भी जांच और अनुमोदन के बाद। अब स्कूल की ऑडिट रिपोर्ट, खर्चे का पूरा विवरण, सार्वजनिक करना अनिवार्य होगा। सबसे क्रांतिकारी बात ये है की डिस्ट्रिक की अपील कमेटी और रिवीजन कमेटी बनाई जा रही है और उन्हें सिविल कोर्ट जैसी शक्तियां दी गई हैं। इन समितियों को यह अधिकार भी होगा, किसी भी गवाह को तलब कर सकेंगे, शपथ पर पूछताछ कर सकेंगे, दस्तावेज़ मांग सकेंगे, हलफनामा स्वीकार कर जांच कर सकेंगे और सीधी भाषा में कहूं तो अब ये समितियां पूरी कानूनी ताकत के साथ काम करेंगी ताकि किसी भी स्कूल की मनमानी पर तुरंत और निर्णायक कार्रवाई हो सके। मैं इस बिल का आदरणीय आशीष सूद जी जो शिक्षा मंत्री है उनका धन्यवाद भी करता हूं। आदरणीय मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी के मार्गदर्शन में जो शिक्षा बिल आया है इसका पूरा समर्थन करता हूं। ये बिल दिल्ली के बच्चों, अभिभावकों और ईमानदार शिक्षकों की जीत है, दिल्ली वालों की जीत है, जयहिंद, बहुत–बहुत धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद। माननीय सदस्य श्री राजकुमार भाटिया जी।

....व्यवधान..

माननीय अध्यक्षः वो टाइम भी तो काउंट होगा जो आप शोर मचाकर पूरा डिस्टर्ब करते रहते हैं।

....व्यवधान..

माननीय अध्यक्षः नहीं—नहीं, तो एक आदमी बोल लेता न उसमें।

माननीय अध्यक्षः चलिए, आगे चलिए।

माननीय अध्यक्षः शुरू करिये।

................व्यवधान..... ....

श्री राजकुमार भाटियाः आदरणीय सभापति महोदय मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं कि आपने इस क्रांतिकारी विधेयक—2025 'शिक्षा शुल्क एवं नियंत्रण विनिमय' का जो बिल आया उसमें मुझे चर्चा में भाग लेने का अवसर दिया है। हम सबने जो सदन में बैठे हैं, मैं अपनी बात शुरू करूं इससे पहले मैं दिल्ली की माननीय मुख्यमंत्री बहन रेखा गुप्ता जी और शिक्षा मंत्री भाई आशीष सूद जी को बधाई देना चाहूंगा क्योंकि आपका यह निर्णय, फौलादी रूप से एक निर्णय जिसके लिए आपने बहुत मन पक्का किया होगा और कल हमारी बहन आतिशी जी कह रही थी कि आपका इससे संबंध है, उससे संबंध है तो संबंध तो आपके भी बहुत सारे शिक्षा जगत के लोगों के साथ रहे लेकिन आपने उसे शिक्षा जगत के लोगों को केवल ऑडिटर बनाकर वहां भेज दिया था और इसी कारण से जैसे ही दिल्ली में भाजपा की सरकार आई उसी समय आप लोगों ने अखबारों में, मीडिया में नाटक करना चालू कर दिया कि अब दिल्ली के स्कूल जो हैं वो फीस बढ़ाएंगे और आपके वहां बैठे ऑडिटर्स ने और आपके शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने जो आपके समय से उनके मुंह में जो खून लगा दिया था उन्होंने इस बात के लिए प्रोपोगैंडा करना चालू करा कि स्कूलों को instigate किया कि अब आते ही मई—जून में जैसे ही स्कूलों में फीस बढ़ाने का टाइम आएगा तो आप बताइए। ज़ोर से बोलिए लेकिन हमारे शिक्षा मंत्री महोदय ने उस पर उसी समय जो स्टैंड लिया उसकी बदौलत आज ये बिल आया है और हम सब जिस पृष्ठभूमि से आते हैं मैं अपनी बात कहता हूं, मारवाह जी यहां पर बैठे हैं, मोहन सिंह बिष्ट जी बैठें हैं, आदरणीय नेता जी बैठे हैं जितने भी लोग यहां बैठे हैं हम सब सरकारी स्कूलों से पढ़े हुए हैं कोई कोई पब्लिक में भी पढ़ा होगा। मेरे समय में, प्राइमरी स्कूल में फीस जो है वो तीन पैसे हुआ करती थी, फिर नौ पैसे हो गई और जब मैं सीनियर सेकेंडरी में आया तो डेढ़ रुपए फीस हुआ करती थी और मैं, मुझे कोई गुरेज नहीं है कहने में कोई शर्म नहीं है, जब मैं दूसरी क्लास में था तो मेरे पिता जी ने एक पब्लिक स्कूल का फार्म भर दिया, उसकी 28 रुपए महीना फीस थी। लेकिन मेरे पिता जी के पास इतने पैसे नहीं थे कि 28 रुपए महीने वाले स्कूल में मुझे पढ़ा सकें और मेरी सरकारी शिक्षा उस समय पूर्ण हुई। ग्रेजवेशन तक हुई और उसके बाद मैंने पढ़ाई की। आज जो भी मां बाप अपने बच्चों को पब्लिक स्कूल में पढा़ने का स्वप्न देखता है, मैं आज भी दावे के साथ कह सकता हूं कि कहीं न कहीं वो अपने पेट पे चूटी काटता होगा, कहीं ना कहीं अपने बुजुर्ग की दवाई के पैसे काटता होगा। हम में से जो भी है कहीं ना कहीं अभिभावक है, आज अगर हमारे बच्चे बड़े होंगे तो कहीं

ना कहीं हमारे पोते, पोतियॉं,धोते–धोतियॉं, भी स्कूल जाने की कगार पे हैं। लेकिन स्कूल में भेजने का, पब्लिक स्कूल में भेजने का जो स्वप्न है वो आज महंगा स्वप्न हो गया। मैं ऐसे बहुत सारे शिक्षा मंदिरों को भी जानता हूं जिन्होंने वर्षों वर्ष तक गुरु शिष्य परंपरा के तहत समाज को योगदान देते हुए शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान दिया है। लेकिन मैं आज उन बच्चों का भी चेहरा देखता हूं, जो मेरे घर पर आकर, मेरी पत्नी को बोलते हैं, मेरी बेटी को बोलते हैं, मेरे ऑफिस में आकर मेरे ऑफिस इंचार्ज को बोलते हैं कि अंकल जब से भाजपा की सरकार आई है, अब देखो कितने खुश हो जाएंगे इनकी बाछें खिलेंगी। मैं उनको बता नहीं पाता कि ये भाजपा की सरकार नहीं है, हमें उन पृष्ठभूमि में जाना पड़ेगा कि किस प्रकार से स्कूलों को फीस बढ़ाने के लिए मजबूर किया गया। वो ऑडिटर महीने के महीने पैसे मांगते थे पिछली सरकार के समय में कि आपके स्कूल की फीस बढ़ाने के लिए, आपके स्कूल के अनड्यू खर्चो के लिए हमें इस प्रकार का दबाव है, हमें शिक्षा मंत्री का दबाव है, हमें Directorate of Education का दबाव है और वो हालात बने कि शिक्षा की हालत बदतर होती गई और फीस बढ़ाने के लिए स्कूल मजबूर होते चले गए। हम केवल स्कूलों को दोषारोपण नहीं कर सकते लेकिन आपने मजबूर किया, आपके शिक्षा मॉडल ने मजबूर किया, आपके अफसरों ने मजबूर किया कि स्कूलों की फीस आनन–फानन बढ़ाई जाए और एक शब्द जिसको miscellaneous के रूप में हमेशा दर्शाया जाता था और आज वही मिसलेनियस के रूप में हमारे सामने बैठे हुए यह कह रहे हैं कि स्कूलों की फीस पर सलैक्ट कमेटी को भेजिए। आप 12 साल सरकार में रहे आपको सलैक्ट कमेटी की कभी भी याद नहीं आई। 12 साल में एक बारी भी किसी भी विधेयक को आपने, विद्रूपता के साथ आप हंसते रहते थे। जब जब देश की बात होती थी जब जब शिक्षा की बात होती थी आप विद्रूपता से यहां पर हंसते थे और उसको एक दम से पास करते थे। अभी बताया जा रहा था कि किस प्रकार से कभी कभी कोरम नहीं होता था तो उसके लिए भी कोरम मेंटेन करना पड़ता था। मैं आज उस बेटे की, उस बच्चे की, व्यथा आपको बता रहा हूं.। अंकल मेरे को स्कूल में बुला लिया गया। पांच–सात बच्चे और थे, फिर पांच–सात के साथ पंद्रह बच्चे और आ गये, फिर बीस बच्चे और आ गये, पचास बच्चों को लाइब्रेरी में बिठा दिया गया। लाइब्रेरी में बिठा दिया गया, पंखा बंद कर दिया गया और पानी, जो पानी की बोतल्स थीं उनको भी बाहर रखवा दिया गया। बताइए उन बच्चों का क्या कसूर था और उस कसूर को अगर आज दंड विधान के अंतर्गत विधेयक के रूप में हमारे शिक्षा मंत्री काम कर रहे हैं तो आपके पेट में दर्द हो रही है। आप क्यों उसका विरोध कर रहे हैं? क्या आपका बच्चा स्कूल नहीं जाता, क्या आपके पोते पोतियां स्कूल नहीं जाते और आपके बच्चों को अगर वहां बिठा दिया जाए और उस पर पूरी नकेल कसने के लिए आज इस विधेयक के माध्यम से माननीय शिक्षा मंत्री जी ने उन बच्चों के मन में एक आस जगाई है, उनके पेरेंट्स के मन में आस जगा दी कि आपके बच्चों को अब शिक्षा का समान अधिकार मिलेगा, आपकी जेब पे बोझ

नहीं आएगा। 3 साल बाद आपकी फीस बढ़ेगी और वो जो चुन्नी चुन्नी करके गुल्लक में पैसे जमा करने पड़ते थे 3 महीने की फीस भरने के लिए उसका दबाव आज आपको ब्रेन हेमरेज की और नहीं ले जाएगा। पेरेंट्स के मन में एक विश्वास जागा है। अभी मैं बाहर देख रहा था कि पेरेंट्स आए हुए थे। थैंक यू रेखा दीदी, थैंक यू आशीष जी, वो बुलाए नहीं गए थे, वो आए थे, वो कहने आए थे और अनेक ऐसे स्कूल्स

श्रीमती आतिशी (माननीय नेता प्रतिपक्ष).................(अस्पष्ट आवाज)

श्री राजकुमार भाटियाः दीदी आप तो सारी उम्र यही करते रहे, आपको तो हमारे से ज़्यादा पता है आंदोलन कैसे खड़े किए जाते हैं जी। आप तो आंदोलन से उपजे हुए लोग हैं आपको हमारे से ज़्यादा पता है।

माननीय अध्यक्षः नहीं वो कांग्रेस और इनका इकट्ठा था शायद कल। नहीं, आप कह रहे हो ना आए हुए थे कल कांग्रेस, आप नहीं थे तो आप ज़िक्र कर रहे हो ना इसका।

श्री राजकुमार भाटियाः मैं स्कूलों की तरफ से भी माननीय शिक्षा मंत्री जी, मैं आपको बधाई देता हूं। जहां एक तरफ दिल्ली के विधायक बहुत खुश हैं, वहां छोटे स्कूल्स वाले भी बहुत खुश हैं कुछेक स्कूलों को छोड़ दो तो छोटे स्कूल्स वाले बहुत खुश हैं क्योंकि अब उन्हें लेवल प्लेइंग फील्ड मिलेगा। उनको अवसर मिलेगा कि वो भी अपनी फीस बढ़ा पाए। पहले उनको अवसर ही नहीं मिलता था। इन्फ़्रास्टैक्चर के अभाव में छोटे स्कूल पीछे रह जाते थे। उन पर...

......व्यवधान.......

श्री राजकुमार भाटियाः भाई साहब आप मेरी बात का जवाब देना खुले से।

माननीय अध्यक्षः आप अपने अपने, आप अपने उसमें बोलिएगा ना, आप अपने वक्तव्य में बोलिए।

श्री राजकुमार भाटियाः आदरणीय कुलदीप जी, मैं आपको निमंत्रण दे रहा हूं। हालांकि मैं मीडिया का आदमी नहीं हूं। किसी भी प्लेटफार्म पे आपका कोई भी विधायक या आपका कोई भी पूर्व मंत्री मेरे साथ इस विषय पर बात करना चाहे, तो खुला आमंत्रण है किसी भी जगह पर आप आकर कर सकते हैं और खाली सस्ती लोकप्रियता से नहीं होगा, नहीं तो आप कहिए कि ये काम हम भी करना चाहते थे, लेकिन हमारे पास इच्छाशक्ति नहीं थी, हमारे पास सपोर्ट नहीं था।

......व्यवधान.......

माननीय अध्यक्षः एक मिनट, आप कन्क्लूड करिए, कन्क्लूड करिए। एक मिनट अनिल जी, माननीय सदस्य, अनिल जी, अनिल झा जी।

श्री राजकुमार भाटियाः उधर बात कीजिए ऐसे–ऐसे मत कीजिए। उधर बात कीजिए आप, आप उधर बात कीजिए। चेयर इज देयर।

माननीय अध्यक्षः चलिए, शुरू करिए और इसको कनक्लूड कर दीजिए।

श्री राजकुमार भाटियाः मैं कन्क्लूड कर रहा हूँ सर मैं तो केवल उन पेरेंट्स की आशाओं और विश्वास के माध्यम से आदरणीय शिक्षा मंत्री जी को बधाई दे रहा हूं हालांकि इसमें कड़े प्रावधान भी आपने किए हैं और स्कूल के लिए भी एक अपीलेट कमेटी भी आपने बनाई है। ये नहीं है कि केवल पेरेंट्स ही अपील में जा पाएंगे, स्कूल को भी जाने का प्रावधान है और निश्चित रूप से इस बिल के माध्यम से जिसके दूरगामी परिणाम जल्द आपके सामने होंगे जब आदरणीय शिक्षा मंत्री जी की दूरदर्शिता के माध्यम से यह जब परिणाम सामने आऐंगे तो आप भी खुश होंगे। आज अगर आप घर जाएंगे तो अपने बच्चों से पूछिएगा अपने जो छोटे बच्चे हैं पोते पोतियां हैं उनसे पूछिएगा।

माननीय अध्यक्षः कन्क्लूड करिये आप।

श्री राजकुमार भाटियाः कि अब आपको स्कूल में कोई तंग तो नहीं करेगा तो निश्चित रूप से वो भी आपको बधाई देंगे। आपने बेल बजाई है मैं आपकी आज्ञा का सम्मान करता हूं, धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद राजकुमार जी। अब मैं माननीय सदस्य श्री प्रेम चौहान जी को।

श्री प्रेम चौहानः धन्यवाद अध्यक्ष महोदय आपने मुझे इतने गंभीर बिल पर अपनी बात रखने का मौका दिया। अध्यक्ष जी मैं आज इस सदन में खड़ा हूं लेकिन मेरा दिल दिल्ली के उन लाखों माता–पिताओं के साथ खड़ा है जो अपने बच्चों की अच्छी शिक्षा देने के लिए दिन रात मेहनत करते हैं लेकिन स्कूलों की मनमानी फीस के आगे लाचार हैं। सरकार कहती है ये विधेयक पारदर्शिता लायेगा। मैं पूछना चाहता हूं कैसी पारदर्शिता। जब स्कूल की फीस कम करने की ताकत उसी स्कूल प्रबंधक कमेटी को दी जा रही है। मतलब आपके 11 सदस्यों में से छह सदस्य मोटा मोटा आप जो अपनी तरफ से बता रहे हो वो भी उसी की भाषा बोलेगा। बहुत आम भाषा में आम जगह देखते हैं कि स्कूल की जो मनमानी है वो ज़्यादा चलेगी ना की पेरेंट्स की चलेगी। इसमें कम से कम छह पेरेंट्स होने चाहिए थे और जो स्कूल के लोग हैं जो स्कूल के टीचर हैं या स्कूल के जो अध्यक्ष हैं वो उस स्कूल के अध्यक्ष ना होके पेरेंट्स में से कोई होना चाहिए या कोई और सरकारी आदमी होना चाहिए, ना कि

स्कूल का ही कोई व्यक्ति हो। कैसा न्याय है जब एक माता–पिता तब तक अपनी आवाज़ नहीं उठा सकता जब तक वो 15 परसेंट लोग मतलब कह रहे हैं ना कमेटी, कमेटी, कमेटी वो कमेटी, कमेटी करते रहेंगे तब तक या तो उनका बच्चा स्कूल से बाहर कर दिया जाएगा या कमेटी कमेटी खेलते खेलते उनका बच्चा पास आउट हो जाएगा लेकिन इतनी कमेटियां बना दी गई है, इतनी कमेटियां बना दी गई है कि इन कमेटियों में ही खेलते रहेगा लेकिन उसको कोर्ट में जाने का जो अधिकार था वो भी ये सरकार छीन रही है। अध्यक्ष जी सरकार कहती है शिक्षा को नियंत्रित करेगा ये कानून। मैं कहता हूं ये विधेयक शिक्षा को निजी व्यवसाय के हवाले कर देगा। कोई ऑडिट नहीं होगा, कोई निगरानी नहीं होगी और न्यायालय तक जाने का रास्ता बंद है। माननीय अध्यक्ष महोदय दिल्ली के माता–पिता के पास ना कोई बड़ी तनख्वाह है, ना बड़ी सिफारिश है। उनके पास सिर्फ एक सपना है, अपने बच्चे को आगे बढ़ते देखना। लेकिन ये सरकार उनके उस सपने पर फीस की लाठी से बरसाना चाहती है, फीस की लाठी बरसाना चाहती है। मैं सरकार से मांग करता हूं, इस विधेयक को सिलैक्ट कमेटी को भेजा जाए। दूसरी स्कूल, स्कूलों की मनमानी फीस पर तुरंत रोक लगाई जाए, क्योंकि ये विधेयक अपने आप में बहुत देरी से आया है। अब तक कई स्कूल बहुत अच्छी खासी फीस बढ़ा चुके हैं और....

....व्यवधान......

श्री प्रेम चौहानः बिल्कुल अभी तत्काल रोक लगाई जाए जो फीस किसी ने ज़्यादा ली है। पीछे जाके हमें क्योंकि बिल अभी आ रहा है आप अप्रैल में कह रहे हो, अगस्त में कह रहे हो कमेटी बन जाएगी, जुलाई में बन जाएगी लेकिन हम अगस्त में खड़े हैं ऑलरेडी और हर अभिभावक को इंसाफ पाने का सीधा हक मिल सके बिना शर्त बिना रोके टोके ऐसा इसमें प्रावधान होना चाहिए कि वो कोर्ट भी जा सके। 15 परसेंट का इंतज़ार ना करना पड़े उसे। आज अगर हम चुप रहे तो कल इस सदन में कोई गरीब मिडिल क्लास का बच्चा पहुंच नहीं पाएगा कि अपनी आवाज़ उठा सके। इसलिए हम सबको इसपे आवाज़ उठानी चाहिए और अगर आवाज़ नहीं उठाएंगे तो कुछ खास विशेष लोगों का ही सिर्फ शिक्षा पे अधिकार रह जाएगा ना कि गरीब और मिडिल क्लास के लिए रह पाएगा। अध्यक्ष जी एक और बड़ी विशेष प्रोब्लम है जब हम नर्सरी में बच्चे का एडमिशन होता है तो हम सब जानते हैं लेकिन इसमें इस विधेयक में मुझे लगता है ऐसी भी कोई चर्चा एक होना चाहिए कि जब वो डोनेशन के नाम पर जो स्कूल की आरक्षित सीट हैं उस पर डोनेशन के नाम पर 5 लाख से 50 लाख तक बच्चे के माता पिता से एक्सटोर्शन के तरीके से लिए जाता है। उन्हें धमकाया जाता है, डराया जाता है और तो और उसका बच्चा पढ़ रहा है स्कूल में लाखों रुपए फीस के नाम पे भी दे रहा है लेकिन उसका अधिकार नहीं है कि वो स्कूल के अंदर घुस सके उससे सीधे वो प्राइवेट स्कूल के लोग प्राइवेट स्कूल का प्रबंधक उनसे बात नहीं करना चाहता है। अध्यक्ष जी उसका तो कमेटी सलैक्ट

कमेटी को जब भेजा जाएगा तभी इसमें बात बनेगी अदर वाइस ये विधेयक अभी सिर्फ फीस पर आया है मुझे लगता है बहुत जल्दी ऐसा विधेयक भी इसी विधानसभा में लेके आऐंगे जैसे उत्तर प्रदेश में आजकल स्कूल बंद होने का विधेयक चल रहा है। तो मैं इस विद्येयक को जो लेके आए हैं उसको सलैक्ट कमेटी में भेजने की आपसे मांग करता हूं। अगर वहां जाएगा तो अच्छे से इसमें और भी जो प्रावधान जो एमेंडमेंट होने वो होके आएगा। हम इस बिल का तब समर्थन करेंगे फ़िलहाल इसको अध्यक्ष जी सिलैक्ट कमेटी को भेजा जाए, धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद प्रेम जी, माननीय उपाध्यक्ष श्री मोहन सिंह बिष्ट जी।

माननीय अध्यक्षः आप अपना पॉइंट ऑफ ऑर्डर भी दो और वक्तव्य भी आपका ही होगा।

श्री मोहन सिंह बिष्ट (माननीय उपाध्यक्ष): सर, सर मैं एक निवेदन, मेरा पॉइंट ऑफ ऑर्डर ये है कि सदन के अंदर ये पानी की भरी हुई बोतले आई हैं और.....

माननीय अध्यक्षः ये कैसे आई हैं भई।

श्री मोहन सिंह बिष्ट (माननीय उपाध्यक्ष): और इन बोतलों से हो सकता है,

माननीय अध्यक्षः नहीं नहीं, ये तो अवमानना है ये....

....व्यवधान......

माननीय उपाध्यक्ष (श्री मोहन सिंह बिष्ट): ये बहुत गलत परिपाटी है इनको तुरंत हटाया जाए।

माननीय अध्यक्षः पानी की बोतल सदन में किसने रखी हैं ये?

श्री मोहन सिंह बिष्ट (माननीय उपाध्यक्ष): ये किसकी परमिशन से आया है हाउस के अंदर?

माननीय अध्यक्षः ये कृपया ये हटाई जाए।

श्री मोहन सिंह बिष्ट (माननीय उपाध्यक्ष): हटाओ बोतलें।

माननीय अध्यक्षः सचिव महोदय हटवाइये सारा। ये सही पॉइंट ऑफ ऑर्डर है। सारी बोतल्स हटाइए। चलिए शुरू करिए।

श्री मोहन सिंह बिष्ट (माननीय उपाध्यक्ष): आदरणीय अध्यक्ष जी आपने मुझे....

....व्यवधान......

श्री मोहन सिंह बिष्ट (माननीय उपाध्यक्ष): अरे भई ले जाओ इनको हटाओ यहां से।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद मोहन सिंह बिष्ट जी, आपने ध्यान आकर्षित किया सदन का।

....व्यवधान......

श्री मोहन सिंह बिष्ट (माननीय उपाध्यक्ष): माननीय अध्यक्ष महोदय आपने मुझे दिल्ली के शिक्षा के संबंधी शुल्क निर्धारण विनियम पारदर्शिता के बारे में इस सदन के अंदर चर्चा के लिए आपने मुझे बुलाया, उसके लिए तो मैं आपके आभार के साथ अपनी मुख्यमंत्री, जो वास्तव में दृढ़ निश्चय और मेरे मंत्री आदरणीय शिक्षा मंत्री द्वारा जो इस पर गरीब लोगों के लिए ताकि उनके बच्चे पढ़ सकें, लिख सकें, उनमें फीस का बोझ अत्याधिक ना हो, उनके लिए मैं सूद साहब का बहुत बहुत धन्यवाद करता हूं, आभार प्रकट करता हूं। अध्यक्ष महोदय ये सत्य है हम तो बचपन के अंदर जब स्कूलों में जाते थे, तो स्कूल के बाहर एक नारा लिखा होता था। शिक्षार्थ आइए और सेवार्थ के लिए जाइए।

श्री मोहन सिंह बिष्ट (माननीय उपाध्यक्ष): सर, हमने वो स्कूल भी देखे शायद आपमें से कितने लोगों को पता है मुझे मैं इसके बारे में नहीं जान सकता लेकिन एक तांबे का सिक्का होता था उसको हम इकन्नी करके बोलते थे उसमें सुराख होता था वो हमारी फीस होती थी जिस दिन माँ–बाप ने हमें वो दे दिया तो सर हम क्या करते थे वो फीस तो देते ही थे। कभी–कभी हमें अलग से मिल जाता था, जेब में मुगंफली भर लेते थे और गट्टू आता था सर उसको खाते हुये हम हंसते हुये चले जाते थे। लेकिन आज जिस प्रकार से शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए, कैसे बच्चों की शिक्षा आगे हो, उसके लिए किसी ने काम किया है तो वो भारतीय जनता पार्टी ने किया है। मेरे विपक्ष के मित्र भी सामने बैठे हैं ये आप ही लोग तो थे ना, 2015 से लेकर के 2025 तक आपका एक नारा था....

श्री जरनैल सिंहः शिक्षा क्राांति।

श्री मोहन सिंह बिष्टः अरे शिक्षा, वही बोल रहा हूं मैं 500 स्कूल खोल देंगे और एक साल के अंदर गरीब आदमी का बच्चा तो स्कूल में पढ़ने जरूर जायेगा जो अधिकारी वर्ग भी होगा उसको भी उस स्कूल में शिक्षा गृहण करने के लिये ऐसी शिक्षा व्यवस्था लाकर के मज़बूर कर देंगे यही तो आपका था ना? अब 2025 तो लगातार इस प्रकार की शिक्षा की नीति आपकी थी, आपने दिल्ली को बरबाद कर दिया, दिल्ली में शिक्षा के नाम पर आपने व्यापारिक कांड कर दिया और जब 2024–25 में मेरी सरकार जीत कर आती है तो आप ही तो निकले थे ना सड़कों पर, फीस बढ़ा दी, फीस बढ़ा दी, इसके पीछे कौन था? ये आपकी ही करनी थी जिसकी वजह से दिल्ली के

लोगों को इस शिक्षा का इतना बड़ा बोझ और प्राइवेट स्कूल में जाने के लिये आपने मजबूर किया। यदि आप स्कूल खोल देते तो गरीब के बच्चों को दूसरे स्थानों पर स्कूल पढ़ने के लिये मज़बूर नहीं होना पड़ता। अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से एक बात मैं कहना चाहता हूं कि मैं आशीष सूद जी ने जो दिल्ली के लोगों के, उन बच्चों के अभिभावकों के दर्द को समझा और शुल्क निर्धारण विनियम पारदर्शिता विधेयक 2025 इस सदन के अंदर प्रस्तुत किया। अध्यक्ष महोदय मैं आपके माध्यम से एक बात जरूर कहना चाहता हूं कि पिछली सरकारों द्वारा जो 11 वर्षों तक आम पार्टी की सरकार रही एक नया शिक्षा का मॉडल जिन्होंने दिल्ली के लोगों को उसके नाम से भ्रमित किया था और अब भली–भांति दिल्ली के लोगों को पता चल गया है कि आपकी करनी और आपकी कथनी में कितना बड़ा अंतर है ये दिल्ली के लोग अब जानने लगे हैं। यदि ये जानने नहीं लगते तो आज लोग प्रत्येक क्षेत्रों से तीस–तीस, चालीस–चालीस, पचास–पचास लोग मुख्यमंत्री जी का धन्यवाद करने नहीं आते शिक्षा मंत्री का धन्यवाद नहीं करने आते तुमने दिल्ली के लोगों को बरगलाने में तो कोई कसर नहीं छोड़ी....

(समय की घंटी)

श्री मोहन सिंह बिष्टः लेकिन दिल्ली के लोग अब तुम्हारे बहकावे में नहीं आने वाले हैं। अध्यक्ष महोदय, आज जब मैं सदन के अंदर देख रहा था मेरे बहुत से मैम्बरान तीन–तीन, चार–चार बार से इस सदन के सदस्य हैं और जब वो बोल रहे थे मुझे बड़ा अचम्भा सा लग रहा था। अचम्भा इसलिये लग रहा था उन्होंने तो एक बात मन के अंदर ठान ली कि सरकार का कोई भी बिल आ जाये उस बिल का हम विरोध करेंगे तो सलैक्ट कमेटी का बहाना बनाकर के सदन को डिस्टर्ब कर रहे थे. ....

....व्यवधान......

श्री मोहन सिंह बिष्टः अध्यक्ष महोदय यदि दिल्ली के लोगों को इनकी शिक्षा की नीति इतनी अच्छी लगती तो इनकी संख्या 22 नहीं रहती, ये 22 से भी अब आगे आने वाले दिनों के अंदर इनकी संख्या घटेगी ये मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं। अध्यक्ष महोदय ये ही नहीं इनका सिर्फ एक काम रह गया है शोर–शराबा मचाना, सदन को डिस्टर्ब करना, अरे 11 साल आपने मौज ले लिया। आतिशी जी मैंने ये सदन देखा इस सदन के बारे में जितने हम लोग जानते हैं हमसे ज्यादा कोई नहीं जानता। आज आप देख रहे होंगे अध्यक्ष जी यदि हमारे तीन या चार लोग बोलते हैं तो एक आपका मैम्बर भी बोलता है। आपने क्या किया था उस समय में, उधर से विजेन्द्र गुप्ता जी होते थे मैं होता था.... सर दो मिनट, भूल गये आप जब तक हमको भूमिका बनानी होती थी....

(समय की घंटी)

श्री मोहन सिंह बिष्टः दो मिनट के बाद बाहर का रास्ता दिखा देते थे।

....व्यवधान......

श्री मोहन सिंह बिष्टः अध्यक्ष महोदय ये ही नहीं मेरी सरकार ने जिस प्रकार से ये काम किया है, ये ऐतिहासिक काम किया है। आपकी सरकार ने क्या किया, अरे कमरों का प्लास्टर करने का, उन कमरे बनाने का और सर वो कमरे कैसे बनाये थे वो टीआयरन, पत्थरों का कमरा बनाया था सर। ये तीस से लेकर चालीस–चालीस हजार रूपया चालीस लाख रूपया, सॉरी तीस लाख से चालीस लाख रूपया....

माननीय अध्यक्षः चलिये, धन्यवाद अब आगे....

(समय की घंटी)

....व्यवधान......

श्री मोहन सिंह बिष्टः वास्तव में देश के विकास को आगे बढ़ाना है देश को आगे लेकर जाना है तो शिक्षा हमारी ठीक होनी चाहिये ये मैं निवेदन करना चाहता हूं। एक बात मैं जरूर कहूंगा अध्यक्ष महोदय, आज जिस प्रकार से सरकार ने प्राइवेट स्कूलों और मैनेजमेंट में प्रत्येक वर्ष में विभिन्न शुल्क जो लगाये जा रहे हैं या surcharge किये जा रहे हैं उन पर रोकने का काम मेरी सरकार ने किया।

माननीय अध्यक्षः चलिये धन्यवाद जी, अब मैं....

....व्यवधान......

श्री मोहन सिंह बिष्टः मैं अभिनन्दन करता हूं अपनी सरकार को कि पत्र शुल्क हो, वार्षिक शुल्क हो, कम्प्यूटर शुल्क हो, पुस्तकालय का शुल्क हो, प्रयोगशाला शुल्क हो, सर्तकता धनराशि हो, अभिभावकों पर बहुत बड़ा कर्ज का जो बोझ था उनके ऊपर उसको आपने जो रोकने का काम किया वास्तव में भारतीय जनता पार्टी की सरकार।

माननीय अध्यक्षः चलिये धन्यवाद।

श्री मोहन सिंह बिष्टः उसके लिये अभिनन्दनीय है बहुत–बहुत धन्यवाद, नमस्कार।

माननीय अध्यक्षः माननीय सदस्य श्री तरविन्दर सिंह मारवाह।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया उसके लिये मैं तहेदिल से आपका धन्यवाद करता हूं। आज सदन के माध्यम से दिल्ली स्कूल शिक्षा विधेयक 2025 के पक्ष में अपना समर्थन व्यक्त करते हुये सरकार के इस

ऐतिहासिक कदम का स्वागत करता हूं। अध्यक्ष जी, मंत्री जी जो बिल लेकर आये हैं और मुख्यमंत्री जी ने जो आदेश दिया मेरे को एक बात अध्यक्ष जी समझ नहीं आई, जो बिल आया है वो बिल स्कूलों की जो फीस, स्कूलों के जो मनमाने ढंग से और एक बात और बता दूं कि स्कूल को बिजनेस बना दिया गया। विपक्ष की नेता बैठी है, कोई अच्छा काम आया है तो आपको समर्थन करना चाहिये किन्तु–परन्तु से काम नहीं चलेगा, आपको उसका समर्थन करना चाहिये।

....व्यवधान......

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः वो इसलिये समर्थन करना चाहिये क्योंकि 18 लाख जो बच्चे पढ़ते हैं स्कूलों में उनके भविष्य की बात है। ये क्या सलैक्ट कमेटी में क्या, अरे मंत्री जी का और मुख्यमंत्री जी का आपको धन्यवाद करना चाहिये, आपको भी धन्यवाद करना चाहिये कि एक साहसिक कदम उठाकर लाये हैं। एक ऐसा बिल आया है कि इसी तरह आप बिल लाते रहो। मुख्यमंत्री और जितने मंत्री हमारे हैं तो हमें अगले चुनाव में वोट मांगने जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी ये मैं बताना चाहता हूं क्योंकि पांच साल में अध्यक्ष जी पांच महीने में सिर्फ इन्होंने जो 11 महीने नहीं करके दिखाया वो दिल्ली की सड़कों में अभी पिछले एक महीने की बरसातों में दिखा दिया कि दिल्ली में जो सरकार आई है मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के नेतृत्व में आई है, आपने देखा, पूरी दिल्ली में किसी जगह भी पानी ब्लॉक हुआ और 15 मिनट में पानी निकल गया यह हमारी सरकार काम कर रही है। अध्यक्ष जी, सबको पता है, इन्होंने 11 साल में एक नारा लगाया था 'शिक्षा क्रांति' और बड़ी हैरानगी की बात है अध्यक्ष जी, मंत्री जो था वो शिक्षा क्रांति का भी मंत्री था और शराब का भी मंत्री था यह पहली बार आपने देखा होगा। दिल्ली में तो शराब क्रांति आई एक के साथ एक फ्री ले जाओ। बच्चे बर्बाद हो जाएं उसकी किसी ने परवाह नहीं की। सिर्फ बड़ी बड़ी अखबारों में यह देना, यह बताओ केजरीवाल जब जीता था उसने क्या कहा था कि मैं 500 स्कूल दिल्ली में खुलवाऊंगा। मैं 500 स्कूल खुलवाऊंगा। 500 की जगह मेरे हिसाब से 50 स्कूल बंद हो गए आपके टाइम में और जो बिल्डिंगों की बात करते हैं आज भी अगर चलो मेरे साथ अभी हमें तो चार–पांच महीने हुए हैं लेकिन हम छोड़ने वाले नहीं हैं। अब हम 30 साल इधर ही बैठे रहेंगे और तुम्हारा तो पता ही नहीं लगेगा गये कहां हो क्योंकि 5 साल तो और आने वाले हैं। 5 साल तो और इधर आने वाले हैं, तैयार बैठे हुए हैं। यह मैं अंदर की रिपोर्ट बता रहा हूं। इस पार्टी का तो पता ही नहीं लगेगा गई कहां है। आज एजुकेशन पर क्योंकि मुझे पता है कि जो हमारे आशीष सूद जी हैं ना, थोड़े–थोड़े आगे से बाल जिसके नहीं होते ना जैसे आप भी हो, वह बड़ा समझदार होता है अध्यक्ष जी। बड़ा समझदार होता है मैं बता दूं आपको और उसको पैसे की भी कोई कमी नहीं होती यह भी मैं बता दूं आपको।.... हां, मेरे को मालूम है यह उठते ही सुबह हमारे मंत्री जी एक घंटा डेढ़ घंटा पूजा करते हैं उसके बाद यह ध्यान देते हैं कि आज अपनी पार्टी के लिए क्या काम करना है। मैं

तो इनको बधाई देता हूं। मैं बिजली के लिए भी बधाई देता हूं आपको कि इस बार पूरी गर्मियों में कहीं प्रदर्शन नहीं हुए हैं मैं बताना चाहता हूं आपको। यह भी सुन लो, ये क्या बात करते हैं। बता दो अखबार, आप अखबार बता दो। कहीं प्रदर्शन नहीं किया इन्होंने बिजली के लिए क्योंकि पूरे कर्मठ कार्यकर्ता की तरह आशीष सूद जी ने काम करके दिखाया है रेखा गुप्ता जी के नेतृत्व में। आज, अभी मेरे से पहले एक....

(समय की घंटी)

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः वो चला गया नाम क्या था जो आपकी तरफ से बोला था उसका।

माननीय अध्यक्षः प्रेम चौहान जी।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः हां, उन्होंने एक बात बड़ी अचंभे की कही। वो बोले तो सिर्फ 3 मिनट।

..... व्यवधान .....

माननीय अध्यक्षः अच्छा इसको कन्कल्यूड करिए, कन्कल्यूड करिए।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः मेरे विधायक भाई ने बोला कि सारी जो चीजें हैं......

..... व्यवधान .....

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः वो हम पर छोड़ दी हैं और ये जो लेकर आए हैं बिल उसमें लिखा है कि पहले एक कमेटी, अगर एक कमेटी में नहीं डिसीजन होता तो दूसरी कमेटी में जाएगा। उसमें भी नहीं होता तो वो तीसरी कमेटी में जाएगा। हमने स्कूलों पर छोड़ा कहां है। अरे पहले बिल तो पढ़ लो भइया साफ लिखा हुआ है। बिल तो पढ़ लो, बिल तो किसी ने पढ़ा नहीं क्योंकि जो हमारी अभी विपक्ष की नेता गई हुई है बाहर उन्होंने तो कल ही कह दिया था, नारे भी लगा दिये थे सिलेक्ट कमेटी में भेजो, सिलेक्ट में भेजो, सिलेक्ट में भेजो। अरे बिल तो पढ़ लो, उसके बाद बात करना। चर्चा तो होने दो और उसको अपनी विपक्षी की नेता बुरा ना मानें। पहले चर्चा होगी अध्यक्ष जी उसके बाद अमेंडमेंट होएंगे, उसके बाद सिलेक्ट कमेटी में जाता है बिल। वो भी पहले वोटिंग होगी। हाउस अगर कहेगा आपने बिलकुल जजमेंट ठीक दी। आपने जजमेंट जो दी है वो सबसे अच्छी जजमेंट दी है कि वोटिंग होएगी। बिल पास हो जाएगा, तो पास हो गया। अगर नहीं होगा तो आपके हक में चला जाएगा उसमें क्या है उसमें तो कुछ भी नहीं है। सिलेक्ट कमेटी आपने सिर्फ स्कूल वालों के जो दो नंबर के पैसे हैं वो अंदर खाते चले गए। ये कहो कि सिलेक्ट में

जाए, सिलेक्ट में जाए कि बिल लटक जाए। लेकिन हमारा जो मंत्री है न वो भी बड़ा कलाकार मंत्री है। उसने पहले ही, उसने पहले ही, हां जी, हां जी,

....व्यवधान...

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः अध्यक्ष जी, हमारे मंत्री जी ने अगर इतनी बड़ी बात इसमें कर दी है। मैंने कहा ना सुबह उठकर पूरे दिन ध्यान देते हैं कि हमारी पार्टी आगे कैसे जाए, हमारी सरकार आगे कैसे जाए। उन्होंने अगर बच्चे को भी स्कूल में फीस के लिए परेशान किया गया, अगर किसी भी बच्चे को जैसे आज तक चल रहा है। अभी इनको तो मैं बताना चाहता हूं कई–कई बच्चों को....

(समय घंटी)

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः यह भी कह दूं कई बच्चों ने फीस के करके अपनी सुसाइड कर लिया अपनी आत्महत्या कर ली थी। किया के नहीं, डिप्रेशन में चले गए। अरे ये तो बिल बहुत अच्छा है कि किसी भी, मैं दोबारा एजुकेशन मंत्री जी का धन्यवाद करता हूं कि आपने यह जो छोटी सी छोटी बिल में बात रखी है ना ये उन मां–बाप–बच्चों से पूछो कि जिनके बच्चों को खड़ा करके यह नहीं कि खड़ा करके बेज्जती करते थे उनको पीछे खड़ा होने को कह देते हाथ पीछे करके ऐसे अध्यक्ष जी। एक–एक बच्चे को जो परेशान प्रिंसिपल ऐसे डांटती थी कि फीस लेकर आ चाहे कुछ भी करके आओ। चाहे घर से बर्तन बेचकर आओ, चाहे गोल्ड बेचकर आओ, फीस कल जमा होनी चाहिए तब स्कूल में जाना है आपने। मैं मंत्री जी का धन्यवाद करता हूं कि आपने वो चीज़ रखी इसमें कि अगर फीस के लिए किसी को तंग किया जाएगा उसको भी दंड दिया जाएगा यह बहुत बड़ी बात है।

माननीय अध्यक्षः धन्यवाद।

(समय घंटी)

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः अध्यक्ष जी, आपको एक और बात बताना चाहता हूं। क्योंकि, क्योंकि यह जो बिल लाए हैं न ये बिल एक ऐसा आया है कि बच्चे जो अट्ठारह लाख बच्चे हमारे हैं ना अब स्कूल में मैनेजमेंट कभी किसी को तंग नहीं करेगा, न फीस के लिए परेशान करेगा, न उनको पीछे खड़ा होकर कहेगा। और बात एक सुन लो फीस के अलावा, फीस तो 12 परसेंट बढ़ती थी उसके बाद बिल्डिंग बन रही है स्कूल वाले की और बच्चों को 20–20 हजार, 15–15 हजार का पर्ची काटते थे ये मैं बता रहा हूं। एडमीशन की तो बात कर ही नहीं रहा। एडमीशन तो हर स्कूल का रेट अलग ही है।

.... व्यवधान ....

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः जो बच्चे हर स्कूल का कई स्कूलों का 20 लाख, कई का 30 लाख, कई का 40 लाख अध्यक्ष जी।

माननीय अध्यक्षः चलिए धन्यवाद।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः मैं अध्यक्ष जी दो मिनट और लूंगा।

माननीय अध्यक्षः नहीं–नहीं दो मिनट तो सारे ही है सदन के पास। इस समय नहीं–नहीं 6 बजे खत्म करना है।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः 6 बजे खत्म करना है।

माननीय अध्यक्षः हां, बिलकुल। धन्यवाद, हां जी।

श्री तरविन्दर सिंह मारवाहः तो मैं आपका फिर धन्यवाद करता हूं जैसे सतीश उपाध्याय जी आपका कहना मानते हैं मैं भी मान लेता हूं आपका धन्यवाद।

माननीय अध्यक्षः थैंक यू।

माननीय अध्यक्षः सभी माननीय सदस्यों को मैं दोबारा बताना चाहता हूं कि बिल पर चर्चा के दौरान वे अपने प्रस्तावित अमेंडमेंट्स के बारे में भी बताएं क्योंकि जब बिल पर क्लॉज वाइज विचार होगा और वोटिंग होगी तब उनको केवल अपने अमेंडमेंट्स प्रस्तुत करने का अवसर मिलेगा, भाषण की अनुमति नहीं होगी वोटिंग के समय। तो अभी अमेंडमेंट भी दें और उसके कारण भी बताएं जिससे कि जब आप अमेंडमेंट्स दें तो उस पर वोटिंग उस विचार को ध्यान में रखकर हो जाए। प्रस्तुत करने का अवसर मिलेगा भाषण की अनुमति नहीं दी जाएगी इसलिए आज ही अपने अमेंडमेंट्स के उद्देश्य और कारण स्पष्ट कर दें।

अब सदन की कार्यवाही बुधवार दिनांक 6 अगस्त, 2025 को अपराह्न 2 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(सदन की कार्यवाही बुधवार दिनांक 6 अगस्त, 2025 को अपराह्न 2.00 बजे तक के लिए स्थगित की गई।)